अगुआ और बनफ्शे के फूल

खलील जिब्रान



अगुआ

और

बनफ़शे का फूल

मूल लेखक

खलील जिब्रान

अनुवादक

भाई दयाल जैन

राजहंस प्रकाशन,

सदर बाज़ार, दिल्ली-६.

प्रकाशक—

सुबुद्धि नाथ जैन,
राजहंस प्रकाशन,
सदर बाजार, दिल्ली-६।

मूल्य : तीन रुपये

मुद्रक—
अमर चन्द्र जैन,
राजहंस प्रेस,
सदर बाजार,
दिल्ली-६।

प्रकाशक की ओर से

खलील जिब्रान साहित्य जगत का चमकता नक्षत्र है—उज्ज्वल सितारा है। उसने जो कुछ लिखा वह सच्चे मोतियों के समान है। उसने बहुत पिछड़े जमाने में आगे बढ़ने का संदेश दिया।

खलील जिब्रान की महानता का वास्तविक रहस्य उसकी प्रतिभाशाली कवित्व-शक्ति और प्रगतिशील विचारों को एक कलापूर्ण, सुन्दर और हृदयग्राही ढंग से प्रस्तुत करने में है। वह पवित्रता, मानवता, धर्म और सौन्दर्य के पुजारी था। उसकी रचनाएँ सीधा हृदय पर प्रभाव डालती हैं, क्योंकि उनकी रचनाएँ स्वयं उनके अपने हृदय की ध्वनि हैं। वह दार्शनिक भी हैं और अध्यात्मवादी भी। उनकी रचनाएँ सुभाषितों और सुन्दर उपमाओं से भरी पड़ी हैं।

हमें उनके इस संग्रह को हिन्दी में प्रकाशित करते हुए प्रसन्नता हो रही है। हमें आशा है इस संग्रह का अवश्य स्वागत होगा।

खलील जिब्रान

खलील जिब्रान का पूरा नाम जिब्रान खलील जिब्रान था, पर वे खलील जिब्रान के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म ६ जनवरी सन् १८८३ ई० में सीरिया देश के लेबनान नामक पहाड़ी प्रांत के बशरी नगर में एक सम्पन्न और प्रसिद्ध ईसाई घराने में हुआ था। उनके माँ-बाप ईसाई धर्म के मैरोनाइट सम्प्रदाय के अनुयायी थे। माँ का नाम कमीला रहमी था।

बारह वर्ष की उम्र में वे अपनी माँ, सौतेले भाई और दो बहनों के साथ बेल्जियम, फ्रांस और संयुक्तराज्य अमरीका आदि देशों की यात्रा पर गये। इस यात्रा में दो वर्ष के लगभग लगे। सन् १८९६ में विदेश-भ्रमण से लौटने पर उनकी शिक्षा बेरूत शहर के 'अलहिकमत' नामी विद्यालय में आरम्भ हुई। उन्होंने अरबी भाषा और अरबी साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करते समय तक जिब्रान ने नियत पाठ्यक्रम के अतिरिक्त औषधि शास्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय कानून, धर्म, इतिहास और संगीत का भी अध्ययन कर लिया था।

उन्होंने सन् १९०१ में अर्थात् उन्नीस वर्ष की आयु से पूर्व ही बड़े सम्मान के साथ उच्च शिक्षा समाप्त की। डिग्री प्राप्त करने से पहले पन्द्रह वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्राफेट' की पाण्डुलिपि लिखी और सोलह वर्ष की आयु में एक साहित्यिक और दार्शनिक पत्रिका 'अलहकीकत' (सत्य) का सम्पादन किया। आगामी वर्ष उन्होंने कविता लिखना भी आरम्भ किया। उच्च-शिक्षाकाल में ही उन्होंने कई प्राचीन अरबी कवियों तथा दार्शनिकों के चित्र भी बनाये। इन बातों से स्पष्ट है कि वे युवावस्था

में ही बहुत प्रतिभाशाली थे। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' वाली उक्ति उन पर स्पष्टतया लागू थी।

उन्होंने यूनान, इटली और स्पेन होते हुए फ्रांस की राजधानी पेरिस की यात्रा की और वहाँ दो-तीन वर्ष—सन् १९०१ से १९०३—तक रहकर चित्रकला का अभ्यास किया। इन दिनों उन्होंने अरबी में खूब लिखा। इसी काल में उन्होंने अपने प्रसिद्ध गल्प संग्रह 'रिबैलियस स्पिरिट्स' (विद्रोही आत्माएँ) प्रकाशित कराया। पुस्तक का बेरूत के बाजारों में आना था कि लेबनान में एक तूफान मच गया। पुस्तक को "भयंकर, क्रान्तिकारी और युवकों के लिए विष" घोषित किया गया। सरेबाजार पुस्तक की प्रतियाँ जलाई गईं। लेबनान के राज्य, धर्म और समाज ने मिलकर खलील जिब्रान को मैरोनाइट सम्प्रदाय से बहिष्कृत और देश से निर्वासित कर दिया। इस प्रकार खलील जिब्रान ने अपने विचारों के कारण बहुत कष्ट उठाया। इससे उनकी गिनती जीवित शहीदों में होती है।

जिब्रान पाँच वर्ष तक अमरीका के बोस्टन नगर में रहे और कई पुस्तकें लिखीं। अपने चित्रों का संग्रह भी प्रकाशित किया।

जब सन् १९०८ में तुर्की की नई सरकार ने सब निर्वासितों को क्षमा प्रदान की तब सूचना मिलने पर भी वे अपने देश न लौटे।

खलील जिब्रान की प्रसिद्ध रचनाएँ 'दी मैड मैन', 'ट्वेन्टी ड्राइंग्ज़', 'दि फोररनर', 'दि प्राफेट', 'सैण्ड एण्ड फोम', 'जिसस दि सन आफ मैन', 'दि अर्थ गाड्स', 'दि वाण्डरर', 'दि गार्डन आफ दि प्राफेट', 'प्रोज़ पोयम्ज़', 'निम्फस आफ दि वैली' और 'रिबेलियस स्पिरिट्स' हैं। इनमें 'प्राफेट' उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है जो गीतांजलि की टक्कर की है। इन पुस्तकों का अनुवाद संसार की बीसियों भाषाओं में हो चुका है। हर्ष की बात है, कि भारत की कई आधुनिक भाषाओं जैसे उर्दू, गुजराती, मराठी और हिन्दी में भी उनकी कुछ पुस्तकों का अनुवाद हो चुका है। सब से अधिक अनुवाद उर्दू में हुए हैं।

खलील जिब्रान अद्‌भुत कल्पना शक्ति रखते थे। उन्हें अरबी, अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओं पर पूरा अधिकार था। बीसवीं सदी के प्रथम चरण में होने वाले सात आठ चोटी के अंग्रेजी लेखकों में खलील जिब्रान की गणना होती थी। उन्होंने कुछ पुस्तकें अरबी में लिखीं और उनमें से कुछ का अंग्रेजी अनुवाद स्वयं किया। पर कुछ पुस्तकें उन्होंने अंग्रेजी में भी लिखीं। उन्होंने कविताएँ, गद्यकाव्य, गल्प, उपन्यास और निबंध लिखे। चित्रकार वे उच्चकोटि के थे ही, इसलिए उन्होंने अपनी पुस्तकों को अपने ही चित्रों से सुसज्जित किया। उनमें पूर्व और पश्चिम का इतना गहरा मिलन था कि उनकी रचनाओं की भावनाएँ और विचार पूर्व के हैं तो उनकी रूपरेखा पाश्चात्य है। वे एशिया में पैदा हुए, यूरोपीय देशों और अमरीका में घूमे और अन्त में अमरीका में रहने लगे। गहरे अध्ययन से प्राप्त ज्ञान और देशाटन से प्राप्त अनुभव की झलक उनकी रचनाओं में स्थान-स्थान पर मिलती है। अमरीका के भौतिक वातावरण में रहते हुए भी उनकी आत्मा उससे अछूती रही। क्लाड ब्रैगडन नामी लेखक का कथन है, "उसकी शक्ति आध्यात्मिक जीवन के किसी बड़े भण्डार से आती थी, अन्यथा वह इतनी विश्वव्यापी और इतनी शक्तिशालिनी न होती। भाषा की जिस महिमा और सुन्दरता से उसने अपनी शक्ति को परिवेष्टित किया, वह सब उनकी अपनी ही थी।"

खलील जिब्रान ईसाई धर्म के अनुयायी थे। उनको ईसाई सूफी या रहस्यवादी कहा जा सकता है। अरबी उनकी मातृभाषा थी। आयु-भर वे अपनी रचनाओं और चित्रों द्वारा सच्चे ईसाई सिद्धान्तों पर लिखते रहे। पर वे धर्म की ठेकेदारी के सख्त विरुद्ध थे और धर्म का पालन हृदय से नहीं, बल्कि मस्तिष्क से विवेक के साथ करते थे। उन्हें अंधविश्वास से घृणा थी। जिब्रान ने अपनी रचनाओं में व्यंग्यपूर्ण ढंग से अज्ञान, रूढ़िवाद और पादरियों की काली करतूतों का भण्डाफोड़ किया जिससे पुराणपंथी ईसाई और पादरी तिलमिला उठे। यदि

उन्होंने ईसाई धर्म की कट्टरता की आलोचना की तो यह उनकी अधार्मिकता न थी। वे दार्शनिक थे और सत्य की खोज करने वालों का आदर करते थे। उन्होंने सामयिक समस्याओं पर भी स्वतन्त्रता के साथ लिखा।

जिब्रान को अपने देश से अपार प्रेम था। देश से दूर रहते हुए और अपने ही देशवासियों के अत्याचारों का स्वयं शिकार होते हुए भी वे अपने देश और देशवासियों को एक क्षण भी न भूले। अपने देश का वर्णन जब कभी वे करते, वह बहुत ही उत्कृष्ट कोटि का होता था।

सीरिया ही नहीं, समस्त अरब देशवासियों की पतित और हीनावस्था से जिब्रान अत्यन्त दुखी थे। वे चाहते थे कि एशिया का यह पिछड़ा हुआ भूखण्ड संसार की उन्नत जातियों के साथ कदम मिलाकर चले।

आयरलैंड के प्रसिद्ध कवि ए० ई० (जार्ज रसेल) ने खलील जिब्रान की तुलना विश्व विख्यात-स्वर्गीय महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से की है। इस तुलना में बहुत सचाई है, पर जिब्रान जिब्रान था और रवीन्द्र रवीन्द्र। दोनों में भिन्नता भी प्रर्याप्त मात्रा में थी। पर यहाँ तो यही कहना उचित है कि दोनों महान् थे।

संसार के इस महाकवि और दार्शनिक का प्राणान्त १० अप्रैल सन् १९३१ को ४८ वर्ष की अवस्था में एक मोटर दुर्घटना से न्यूयार्क में हुआ। दो दिन तक उनका शव जनता के दर्शनार्थ रखा गया। हजारों ने अपनी श्रद्धांजलि भेंट की। वहां से उनका शव उनके निवासस्थान बोस्टन शहर लाया गया। इसके बाद सीरिया की सरकार ने उसे राजसी ठाटबाट के साथ लेबनान लाकर उनके जन्मस्थान बशारी में दफनाया। इस प्रकार सीरिया सरकार और सीरियावासियों ने जिब्रान के प्रति किये अन्याय का प्रायश्चित्त किया।

विषय-सूची

संख्या	विषय			पृष्ठ
	अगुआ	...	....	७
१.	भोला आदमी	....	....	६
२.	प्रेम	...	....	१३
३.	त्यागी राजा	....	....	१४
४.	शेर की मौसी	....	....	१८
५.	अत्याचार	....	....	२१
६.	साधु	....	....	२२
७.	सत्ता का लोभी	....	....	२४
८.	अन्तरात्मा	....	...	२५
९.	युद्ध और छोटे राष्ट्र	....	...	२७
१०.	दोषदर्शी	....	...	२८
११.	कवि	....	...	३०
१२.	वायु दिशा-सूचक	...	..	३२
१३.	अरदोस का राजा	....	...	३३
१४.	मेरे दिल की गहराइयों से	....	...	३४
१५.	वंश	....	...	३६
१६.	मूर्खों में ज्ञान की बात	....	....	३८
१७.	कोरा कागज	....	....	४०
१८.	साहित्यकार और कवि	....	....	४१
१९.	क़द्र	....	....	४४
२०.	दूसरे समुद्र	...	...	४५
२१.	पश्चात्ताप	...	...	४६

संख्या	विषय	पृष्ठ
२२.	मरणोन्मुख मनुष्य और गिद्ध	४७
२३.	मेरे एकान्तवास से दूर	४६
२४.	अंतिम पहरा	५१
२५.	महाकवि	५६
२६.	आत्मघात से पहले	६५
२७.	गुलामी	६६
२८.	पर्दे के पीछे	७५
२६.	बनफ़्शे का फूल	८०
३०.	रोग	८८
३१.	कैरो (मिस्र) सन् १६१४	६३
३२.	क़ैदी बादशाह	६७
३३.	बड़ा दिन	१०२
३४.	रंगे हुए गीदड़	१०८
३५.	अप्सरा	११६
३६.	हम और तुम	१२०
३७.	वक्तव्य	१२६
३८.	शोक	१३२
३६.	आत्मबोध	१३८
४०.	ललित कला	१४४
४१.	प्रकृति के नियम	१४८
४२.	रात के अन्धकार में	१५३
४३.	संहारक शक्तियाँ	१५७
४४.	मैं किससे प्रेम करता हूँ	१६३



अगुआ

तुम अपने पथ प्रदर्शक, अगुआ स्वयं हो और तुमने जिन ऊँची अट्टालिकाओं का निर्माण किया है वे और कुछ नहीं, तुम्हारे विशाल व्यक्तित्वकी आधारशिलाएँ हैं। और वह व्यक्तित्व भी आधारशिला का काम देगा।

मैं भी अपना पथ-दर्शक हूँ। जो दीर्घकाय प्रतिबिम्ब प्रभातवेला में मेरे आगे फैल जाता है, वह मध्यान्ह में मेरे पैरों में सिमट जाएगा। तो भी प्रति-प्रभात में वह प्रतिबिम्ब मेरे आगे फैल जाता है और फिर सिमट भी जाता है।

हम सदैव अपने पथ-दर्शक रहे है, और सदैव ऐसा होना भी चाहिए। और जो कुछ हमने बटोरा, अथवा बटोरेंगे वे अब तक की बेकार पड़ी हुई भूमि के लिए बीज सिद्ध होंगे। हम विशाल खेत हैं। हलवाए हैं। संजोने-बटोरने वाले हैं। और स्वयं भी संयोजित हैं।

जब तुम अंधियारे में भटकती हुई आशा के समान थे, तब मैं भी वहाँ था। तब हमने एक दूसरे को पा लिया। और उसी उत्सुकता में स्वप्न फलित हुए। वे स्वप्न अमित और निःसीम थे।

और जब तुम जीवन के फड़कते हुए होठों पर एक शान्त शब्द थे, तब मैं भी एक दूसरे मौन शब्द के समान वहाँ था। तब जीवन ने हमें मौन आदेश दिया। और हम अतीत की स्मृतियाँ और भविष्य की आशायें लिए अवतरित हुए।

और अब हम भगवान् के हाथों में हैं। तुम उसके दायें हाथ में

सूर्य के समान हो और मैं उसके बायें हाथ में पृथ्वी के समान हूँ। तो भी मेरी अपेक्षा तुम में अधिक चमक नहीं।

और हम, सूर्य, और पृथ्वी, एक और भी विशाल सूर्य और पृथ्वी के प्रारम्भिक भाग हैं। और हम सदैव प्रारम्भ ही होंगे।

*   *   *   *

ओ ? मेरे उद्यान के द्वार के निकट से ही गुजरने वाले राही, तुम अपने पथ-प्रदर्शक हो।

और मैं भी अपना पथ-दर्शक, अगुआ हूँ। भले ही मैं वृक्षों की छाया में बैठा हूँ और निष्क्रिय बैठा दिखाई देता हूँ।

भोला आदमी

एक बार सहरा से शेरिया के विशाल नगर में एक आदमी आया। वह निरा विचारक था और सदा स्वप्नों की दुनिया में खोया-सा रहता था। उसके पास तन के वस्त्रों और एक लाठी के सिवा और कुछ न था।

जब वह गली-कूचों में से गुज़रता तो आश्चर्य से शेरिया के गिरजों, मीनारों तथा महलों को देखता? शेरिया बड़ा शानदार शहर था। उसने बार-बार राह चलते लोगों से उनके शहर के बारे में पूछा, परन्तु वे उसकी भाषा न समझते थे और न वह उनकी बोली।

दोपहर को वह एक बड़े होटल के सामने रुका। वह सुनहरी रंग के पत्थरों का बना था। लोग इसमें बिना रोक-टोक आ-जा रहे थे।

"यह अवश्य ही कोई धर्मस्थान है," उसने अपने मन में सोचा और भीतर चला गया। परन्तु उसके आश्चर्य की कोई

सीमा न रही, जब उसने देखा कि वह एक बड़े कमरे में है और बहुत से स्त्री-पुरुष मेजों के गिर्द बैठे खा-पी रहे हैं और गवैय्यों से राग-रागिनी सुन रहे हैं।

"नहीं, नहीं," उसने अपने दिल में कहा, "यह पूजा महोत्सव नहीं है। यह ज़रूर कोई भोज है, जिसे राजकुमार ने किसी विशेष उत्सव की खुशी में अपने मित्रों को दिया है।"

इतने में एक आदमी उसे राजकुमार का गुलाम समझकर उसके पास आया और उसे बैठने का इशारा किया। फिर उसने सब प्रकार के स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ लाकर उसके सामने रख दिये। जब वह तृप्त हो गया, तो जाने के विचार से उठा, पर द्वार पर सुन्दर वस्त्र पहने एक लम्बे आदमी ने उसे रोक लिया।

"यह अवश्य राजकुमार है," उसने अपने मन में कहा और उसके सामने झुककर कृतज्ञता प्रकट की। फिर उस लम्बे आदमी ने अपनी नागरिक भाषा में कहा, "श्रीमान्! आपने खाने का मूल्य नहीं चुकाया।"

वह उसकी बात न समझ सका और दुबारा जोरदार शब्दों में धन्यवाद किया। इस पर इस लम्बे आदमी ने उस पर पास से गहरी दृष्टि डाली और गौर से देखा, कि यह एक गरीब परदेशी है और खाने का बिल चुकाने में असमर्थ है। उसने ताली बजाई और चार सिपाही वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने ध्यान से लम्बे आदमी की बात सुनी और फिर परदेशी को अपने बीच में घेर लिया। दो उसके दाईं तरफ और दो बाईं तरफ खड़े होगये। तब

उसने उनके अच्छे वस्त्रों और रंग-ढंग पर विचार किया और उनको संतोषभरी की दृष्टि से देखा।

उसने कहा, "शायद ये नगर के खास बड़े आदमी हैं।" फिर वे चलते-चलते न्यायालय में पहुँचे और उसने अपने सामने एक लम्बी दाढ़ी वाले संभ्रान्त व्यक्ति को राजसी वस्त्र पहने तख्त पर बैठे देखा। उसने समझा कि यह बादशाह है। वह इस बात पर बहुत प्रसन्न हुआ कि उसे बादशाह के सामने लाया गया।

सिपाहियों ने न्यायाधीश के सामने सब मामला पेश किया जिसने वादी और प्रतिवादी के लिए दो वकील नियत किये। वह एक दूसरे के बाद उठेऔर अपने-अपने आसामी 'के पक्ष में युक्तियाँ पेश कीं। वह आदमी समझा कि मेरे सम्मान में मेरा गुणगान हो रहा है। इसलिए उसके हृदय में बादशाह और राजकुमार द्वारा मान प्रदान किये जाने पर कृतज्ञता के भाव जागृत हुए।

उसे दंड की आज्ञा सुना दी गई थी। सजा यह थी कि एक तख्ती पर उसका अपराध लिखा जाए और तख्ती उसके गले में लटका दी जाए और उसे नंगी पीठ वाले घोड़े पर बिठाकर शहर में घुमाया जाए। उसके आगे तुरई और ढोल बजाने वाला उसके अपराध की डौंडी पीटता जाए। इस आज्ञा का पालन किया गया।

जब उसको शहर में घोड़े की नंगी पीठ पर सवार करके

घुमाया जा रहा था और आगे-आगे तुरई और ढोल से डौंडी पीटी जा रही थी, नगरवासी शोर सुनकर दौड़े हुए आये। उसे देखकर वे सबके सब हंसने लगे। बाल-बच्चे उसके पीछे गली-कूचों में भागते और शोर मचाते फिरते थे।

उसका दिल खुशी से बल्लियों उछलने लगा, क्योंकि उसने अपने अपराध की तख्ती को बादशाह की गुण ग्राहकता का चिह्न समझा और जनसमूह को उत्साह प्रदान करने वाला जलूस।

जब वह इस हालत में जा रहा था, उसने भीड़ में सहरा-निवासी अपने एक देशवासी को देखा। इसका हृदय खुशी से उछल पड़ा और उसने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, "मित्र! मित्र! हम कहाँ हैं? यह कितना मनमोहक नगर है। यहाँ के निवासी कितने अच्छे हैं, जो एक अतिथि को महलों में भोज देते हैं, राजकुमार उसके सहभोजी होते हैं। बादशाह उसे अपनी प्रसन्नता को प्रकट करने वाला चिह्न प्रदान करता है, तथा उसे आतिथ्य सत्कार से सम्मानित करता है, जैसे वह देवलोक से यहाँ आया हो।"

उसके देशवासी ने उसे कोई उत्तर न दिया। वह मुस्कराया और अपने सिर को धीरे-से हिलाकर जलूस से आगे निकल गया।

उसने बड़ी शान से अपना चेहरा ऊपर को उठाया हुआ था और उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं।

प्रेम

कहते हैं कि गिद्ध और छछूँदर एक ही नदी से साथ-साथ पानी पीते हैं जहाँ शेर भी पानी पीने आता है।

कहते हैं कि चील और गिद्ध एक ही लाश में अपनी चोंचें मारते हैं और एक दूसरे के साथ उस वक्त तक मेलजोल से रहते हैं, जब तक कि लाश उनके सामने पड़ी रहती है।

ऐ प्रेम ! तेरा दृढ़ हाथ मेरी इच्छाओं को रोके हुए है और मेरी भूख और प्यास को कठोरता और बड़ाई के स्तर तक ऊँचा किये हुए है।

वह, जो मुझ में शक्तिशाली और अटल है, तू उसे रोटी न खाने दे और पानी न पीने दे। वह मेरे कमजोर संकल्प को फुसलाता है। अच्छा हो, कि मुझे भूखा रहने दे और मेरा दिल प्यास से जल-भुन जाने दे।

मुझे नष्ट होने दे, पूर्व इसके कि मैं अपना हाथ इस प्याले की तरफ बढ़ाऊँ, जिसे तूने नहीं भरा और जिसे तूने अपने पवित्र हाथों से नहीं छुआ।

त्यागी राजा

लोगों ने मुझे बताया कि पर्वतों के बीच एक कुँज में एक ऐसा नवयुवक अकेला रहता है, जो कभी इन दो नदियों के पार एक बड़े देश का राजा था। उन्होंने यह भी कहा कि वह स्वेच्छा से राजगद्दी और अपने महत्वपूर्ण देश को छोड़कर इस बन में आ बसा है।

मैंने कहा, "मैं उस आदमी को ढूँढूँगा और उसके मन का बात मालूम करूँगा, क्योंकि जिसने राजगद्दी छोड़ी है, निस्सन्देह वह एक राज्य से अधिक हैसियत का स्वामी है।

उसी दिन मैंने उस बन की राह ली, जहाँ वह रहता था। मैंने उसको खोज ही लिया। वह सरु के वृक्ष की छाया में बैठा था। उसके हाथ में एक छड़ी थी, मानो जैसे वह उसका राजदंड हो। मैंने उसका इस प्रकार अभिवादन किया जैसे किसी राजा का किया जाता है। उसने मेरी तरफ ध्यान फेरा और नम्र स्वर में पूछा, "तुम इस शान्त बन में क्यों आये हो? क्या तुम इन

हरे-भरे वृक्षों की छाया में अपने आपको तलाश कर रहे हो, या इस धुँधलके में घर लौट रहे हो?"

मैंने उत्तर दिया, "मैं केवल आपके दर्शन करने आया हूँ, क्योंकि मैं यह जानने का इच्छुक हूँ कि आपने बन के लिए राज्य क्यों त्याग दिया?"

उसने कहा, "मेरी कहानी बहुत छोटी है, क्योंकि यह बुलबुला शीघ्र टूट गया। यह घटना यूँ हुई:—

"एक दिन मैं अपने महल के दरीचे में बैठा था। मेरा मन्त्री और एक विदेशी राजदूत मेरे बाग में टहल रहे थे। जब वह मेरे दरीचे के नीचे पहुँचे तो मन्त्री अपने सम्बन्ध में राजदूत से कह रहा था कि मैं राजा ही की तरह हूँ; मुझे भी तेज मदिरा की प्यास है; मुझे भी समय और भाग्य के खेलों का शौक है और मैं भी अपने स्वामी के समान उत्साहपूर्ण स्वभाव रखता हूँ।

"यह कहकर मंत्री और राजदूत वृक्षों के पीछे ओझल हो गये, पर कुछ ही मिनटों में वे लौट आये। अब की बार मंत्री मेरे सम्बन्ध में कह रहा था कि मेरा स्वामी राजा मेरी तरह एक अच्छा निशानेबाज है, वह भी मेरे समान संगीत का रसिया है और दिन में तीन बार स्नान करता है।"

थोड़ी देर बाद राजा ने कहा, "उसी दिन सायंकाल मैं एक चोगा पहनकर महल से निकल आया, क्योंकि मुझे ऐसे लोगों का शासक बनना सह्य न था, जो मेरे दोषों को ग्रहण करें और मेरे गुणों को अपने से सम्बन्धित करें।"

मैंने कहा, "वास्तव में यह एक अनोखी और आश्चर्यजनक बात है।"

राजा ने कहा, "नहीं, मेरे मित्र। तुमने मेरी खामोशियों के द्वार को खटखटाया, पर तुम्हें क्या मिला? बहुत ही कम। भला ऐसा कौन है, जो इस जंगल की खातिर राज्य को न छोड़ दे, जहाँ की ऋतुएँ सदा नृत्य और गायन में मस्त रहती हैं? बहुत से आदमी हुए हैं, जिन्होंने एकांतवास और अकेलेपन में आत्म-संगति का अपने आप आनन्द उठाने के लिए अपने राज्य छोड़ दिये। अनगिनत गरुड़ ऐसे हैं, जो ऊर्ध्वलोक को छोड़कर छछूँदरों के साथ आकर रहते हैं, जिससे वे भूमि की तह का रहस्य पा सकें। ऐसे लोग भी हैं, जो स्वप्नों के राज्यों को त्याग देते हैं, जिससे कि वे स्वप्नरहित संसार से दूर नज़र न आयें। और फिर कुछ ऐसे आदमी भी हैं, जो नम्रता की दुनिया को त्याग देते हैं और अपनी आत्माओं को ढक लेते हैं, ताकि दूसरे लोग नग्न सत्य और यथार्थ बात को देखकर लज्जित न हो जाएँ; और इन सबसे ऊँचे दर्जे वाला वह है, जिसने खेद और शोक की दुनिया को छोड़ दिया जिससे कि वह अभिमानी और अपने को बड़ा समझने वाला दिखाई न दे।"

फिर वह अपनी छड़ी का सहारा लेते हुए उठा और कहने लगा, "अब तुम अपने शहर में जाओ और उसके द्वार पर बैठकर उन लोगों पर दृष्टि रखो जो वहाँ आते-जाते हैं। उनमें से ऐसे आदमी को तलाश करो जो जन्म से राजा हो, पर

देश के बिना है और उसे भी देखो जो शारीरिक रूप से दूसरों के अधीन है, पर जनता की आत्माओं पर शासन करता है, इसका न तो स्वयं उसे ज्ञान हो और न उसकी प्रजा ही यह जानती है। ऐसे आदमी को भी देखो, जो प्रत्यक्ष-रूप से तो शासन करता है पर वास्तव में वह अपने ही दासों का दास है।"

ये बातें कह चुकने के बाद वह मुस्करा दिया। उसके होठों पर प्रकाश था। फिर उसने मुँह फेरा और घने वन में चला गया।

मैं नगर को लौट आया और उसकी इच्छानुसार नगर के द्वार पर बैठकर आने जाने वालों को देखता रहा। उस दिन से लेकर आज तक अनगिनत आदमी ऐसे हुए हैं, जिनकी परछाइयाँ मुझ पर से गुजरी हैं और बहुत कम ऐसे लोग हैं, जिन पर से मेरी परछाईं गुजरी हो।

शेर की मौसी

एक बूढ़ी महारानी तख्त पर नींद में मग्न पड़ी थी और खुर्राटे ले रही थी। चार गुलाम उसे पंखा झल रहे थे। उसकी गोद में एक बिल्ली बैठी हुई गुर्रा रही थी और गुलामों की तरफ़ देख रही थी।

पहले गुलाम ने कहा—"यह बुढ़िया नींद में कितनी कुरूप दिखाई देती है। देखो तो, इसका चेहरा कैसे लटक गया है और यह सांस इस तरह ले रही है, जैसे यमदूत इसका गला घोंट रहा हो।"

बिल्ली ने गुर्राते हुए कहा, "यह नींद की हालत में भी इतनी कुरूप मालूम नहीं होती, जितने कि तुम गुलाम जागृत अवस्था में मालूम होते हो।"

दूसरे गुलाम ने कहा, "तुम यह सोच रहे होगे कि नींद में इसकी झुर्रियाँ गहरी होने के स्थान पर निखर रही हैं और यह अवश्य कोई बुरा स्वप्न देख रही है।"

बिल्ली ने गुर्रा कर कहा, "काश! तुम भी सोकर अपनी स्वतन्त्रता के स्वप्न देखते।"

तीसरे गुलाम ने कहा, "सम्भव है कि यह उन लोगों का जलूस देख रही है, जिनको इसने क़त्ल किया है।"

बिल्ली ने गुर्राते हुए कहा, "हाँ, यह तुम्हारे पुरखाओं और उत्तराधिकारियों का जलूस देख रही है।"

चौथे गुलाम ने कहा, "इसके सम्बन्ध में बातें करना तो एक अच्छा काम है, पर खड़े-खड़े पंखा झलना भी तो कुछ कम मुसीबत नहीं है।"

बिल्ली ने गुर्राते हुए कहा, "तुम अनन्त काल तक पंखा झलते रहोगे। जैसे तुम भूमि पर हो, वैसे ही तुम आकाश पर रहोगे।"

इस समय बूढ़ी महारानी ने सोते में अपने सिर को झटका दिया और उसका मुकुट भूमि पर गिर पड़ा।

एक गुलाम ने कहा, "यह अपशकुन है।"

और बिल्ली ने कहा, "एक व्यक्ति का अपशकुन दूसरे के लिए अच्छा शकुन होता है।"

दूसरे गुलाम ने कहा, "यदि यह जाग जाए और अपना मुकट धरती पर गिरा हुआ पाए, तो निसन्देह हमें कत्ल कर देगी।"

बिल्ली ने कहा, "तुम्हारे जन्म-काल से यह तुम्हें हर दिन क़त्ल कर रही है पर तुम नहीं जानते।"

तीसरे गुलाम ने कहा, "हां, यह हमें कत्ल कर देगी और देवताओं की बलि समझेगी।"

बिल्ली ने गुर्रा कर कहा, "दुर्बल ही देवी देवताओं की भेंट चढ़ाये जाते हैं।"

चौथे गुलाम ने दूसरे गुलामों को चुप कराते हुए महारानी को जगाये बिना धीरे से मुकुट उठाकर उसके सिर पर रख दिया।

बिल्ली ने कहा, "केवल एक ही गुलाम गिरे हुए मुकुट को दुबारा इस स्थान पर रख सकता है।"

कुछ देर बाद बूढ़ी महारानी जाग उठी। उसने अपने आस-पास देखकर एक जम्हाई ली और कहा, "मेरा ख्याल है कि मैं स्वप्न देख रही थी। मैंने देखा कि एक बिच्छू बलूत के पुराने वृक्ष के आस-पास केंचुओं का पीछा कर रहा है। यह स्वप्न मुझे अच्छा नहीं लगा।" यह कह कर वह फिर आंखें बन्द करके सो गई और खुर्राटे लेना आरम्भ कर दिये। चारों गुलाम उसे पंखा झलते रहे।

बिल्ली ने गुर्राकर कहा, "झलते जाओ; हां पंखा झलते जाओ मूर्खो! और इस आग को हवा देते जाओ, जो तुम्हें अपनी लपेट में ले रही है।"

अत्याचार

सात गुफाओं की देखभाल करने वाली एक बड़ी सांपिन समुद्र के किनारे पर यूँ गा रही थी :

"मेरा साथी लहरों के कन्धों पर सवार होकर आएगा। उसकी गरज भूमंडल को भय से भर देगी और उसके नथनों की आग आकाश को भी अपनी लपेट में लेगी। चन्द्रग्रहण के समय हमारा विवाह होगा और सूर्यग्रहण के समय मैं एक बच्चे को जन्म दूंगी, जो हमारा वध कर देगा।"

एक साँपिन समुद्र के किनारे सात गुफाओं की देखभाल करती हुई यूं ही गाती चली जा रही थी।

5011

साधु

जब मैं जवान था तो एक बार एक साधु से मिला, जो पर्वतों से परे एक मौन और शान्तिपूर्ण वृक्ष-कुँज में रहता था। हम भलाई की वास्तविकता पर बातचीत कर रहे थे। इतने में एक हारा-थका डाकू लंगड़ाता हुआ पहाड़ी से आया। जब वह कुंज के पास पहुँचा तो उसने साधु को झुककर प्रणाम किया और बोला, "साधु बाबा! क्या मुझे सुख मिलेगा? मैं पापों से दबा हुआ हूँ।"

साधु ने उत्तर दिया, "मैं स्वयं भी अपने पापों से दबा हुआ हूँ।"

डाकू ने कहा, "पर मैं चोर और लुटेरा हूँ।"

साधु ने कहा, "मैं स्वयं भी एक चोर और लुटेरा हूँ।"

डाकू ने कहा, "परन्तु मैं खूनी हूँ। अनगिनत मनुष्यों का खून मेरे सिर पर है।"

साधु बोला, "मैं स्वयं भी एक खूनी हूँ और अनगिनत मनुष्यों का खून मेरे भी सिर पर है।"

डाकू ने कहा, "मैंने अनगिनत अपराध किये हैं।"

साधु कहने लगा, "मैंने स्वयं भी असंख्य अपराध किये हैं।"

तब वह डाकू उठ खड़ा हुआ और उसने साधु को देखा। उसकी आंखों में एक विचित्र सी थकावट थी। जब वह हम से अलग हुआ तो वह पहाड़ी पर से छलांग लगाता हुआ चला गया।

मैंने साधु से पूछा, "महाराज आपने अपने को बिना किये अपराधों का दोषी क्यों ठहराया? क्या आपका यह विचार नहीं कि यह आदमी आपसे अप्रसन्न होकर गया है?"

साधु ने उत्तर दिया, "यह ठीक है कि अब उसे मुझ पर श्रद्धा नहीं रही परन्तु वह यहां से अत्यन्त संतुष्ट गया है।"

इसी समय हमने डाकू को दूर गाते हुए सुना। उसके गीत की गूँज घाटी को मस्ती से भर रही थी।

सत्ता का लोभी

एक बार मैंने मनुष्य के सिर और लोहे के सुमों वाला देव देखा। वह लगातार भूमि को खाता और समुद्र को पीता था। मैं देर तक उसे देखता रहा। फिर मैं उसके पास गया और इससे पूछा, "क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है? क्या तुम कभी तृप्त नहीं हुए और तुम्हारी प्यास कभी नहीं बुझी?"

और उसने उत्तर दिया, "हां मैं संतुष्ट हूँ। मैं खाने पीने से उकता गया हूँ। परन्तु मुझे चिन्ता है कि कल मेरे खाने के लिए न भूमि बाक़ी रहेगी और न पीने के लिये कोई समुद्र।"

अन्तरात्मा

बाबल का राजा राजतिलक के बाद अपने उस सोने के कमरे में गया, जिसे तीन कारीगरों ने उसके लिए विशेष रूप से बनाया था। उसने अपना मुकुट और राजसी वस्त्र उतारे। कमरे के बीच में खड़ा होकर वह अपने विचारों में तल्लीन हो गया। "वह बाबल का शक्तिशाली शासक है।"

एकाएक उसने मुख फेरा और देखा कि उसकी मां के दिये हुए उज्ज्वल दर्पण में से एक नंगा मनुष्य बाहर निकल रहा है। राजा चौंक पड़ा और ऊँची आवाज में उससे पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"

उस नंगे आदमी ने उत्तर दिया, "कि मैं केवल यह जानना चाहता हूँ कि लोगों ने तुम्हें राजमुकुट क्यों पहनाया है?"

राजा ने कहा, "क्योंकि मैं सारे देश में सबसे कुलीन हूँ।"

फिर नंगे आदमी ने कहा, "अगर तुम इससे भी अधिक कुलीन होते तो भी तुम राजा बनने के योग्य न थे।"

राजा ने कहा, "मैं देश में सबसे बलवान् आदमी हूँ, इस लिए उन्होंने मुझे मुकुट पहनाया।"

इस नंगे आदमी ने कहा, "यदि तुम इससे अधिक भी बलवान् होते तो भी तुम राजा न बनते।"

फिर राजा ने कहा, "क्योंकि मैं सबसे अधिक बुद्धिमान हूँ, इसलिए उन्होंने मुझे ताज पहनाया।"

इस नंगे आदमी ने कहा, "अगर तुम इसरो भी अधिक बुद्धिमान होते तो भी तुम्हें राजा न बनना चाहिए था।"

फिर राजा फर्श पर गिर पड़ा और फूट-फूट कर रोने लगा।

नंगे आदमी ने उसकी तरफ घृणापूर्ण दृष्टि से देखा। फिर उसने ताज उठाया और प्यार से बादशाह के झुके हुए सिर पर रख दिया और बादशाह को प्रेम पूर्ण दृष्टि से देखता हुआ वह दर्पण में दाखिल हो गया।

बादशाह उठा और उसने दर्पण में देखा और अब वह अपने आपको मुकुट पहने हुए देख रहा था।

युद्ध और छोटे राष्ट्र

एक बार एक हरियाले मैदान में एक भेड़ और उसका बच्चा घास चर रहे थे। ऊपर एक गिद्ध उस बच्चे पर भूखी दृष्टि जमाये आकाश में मंडरा रहा था। जब वह अपने शिकार पर झपटने और उसे पकड़ने लगा तो एक दूसरा गिद्ध वहाँ आ पहुँचा। उसने भी भेड़ और उसके बच्चे पर लालच भरी दृष्टि डाली। अब दोनों प्रतिद्वन्द्वी आपस में लड़ने लगे और उन्होंने अपनी भयंकर चीखों से आकाश सिर पर उठा लिया।

भेड़ ने आकाश की तरफ देखा। वह बहुत हैरान हुई। उसने मुड़कर अपने बच्चे से कहा, "मेरे बच्चे! कितनी विचित्र बात है कि ये दो कुलीन पक्षी एक दूसरे से हाथापाई कर रहे हैं। क्या इन दोनों के लिए यह आकाश-लोक कम है? मेरे नन्हे बच्चे, मेरे प्यारे बच्चे, प्रार्थना कर! हां सच्चे हृदय से प्रार्थना कर कि परमात्मा तेरे पक्षी भाइयों में शान्ति व प्रेम का भाव पैदा करे।"

और बच्चे ने अपने मन में प्रार्थना की।

दोषदर्शी

एक रात को एक आदमी घोड़े पर सवार हो समुद्र की तरफ यात्रा करता हुआ सड़क के किनारे एक सराय में पहुँचा। वह घोड़े से उतरा और समुद्र की तरफ जाने वाले दूसरे यात्रियों की तरह मानवता पर विश्वास करके सराय के दरवाजे के पास वृक्ष से अपने घोड़े को बांध कर सराय में चला गया।

आधी रात को जब सब आदमी सो रहे थे तो एक चोर आया और उस यात्री का घोड़ा चुरा ले गया।

प्रातः वह आदमी उठा और देखा कि उसका घोड़ा चोरी हो गया है। घोड़ा चोरी जाने पर वह बहुत चिंतित हुआ और इस बात पर उसे अत्यन्त खेद हुआ कि एक मनुष्य ने अपने मन को घोड़ा चुराने के दुर्विचार से अपवित्र और मलीन किया।

तब सराय के दूसरे यात्री वहां आये और उसके चारों ओर खड़े होकर बातें करने लगे।

पहले आदमी ने कहा, "क्या यह तुम्हारी मूर्खता नहीं थी, कि तुमने घोड़े को घुड़साल से बाहर बांधा ?"

दूसरे ने कहा, "और यह इससे भी बढ़कर मूर्खता है कि तुमने घोड़े को पिछाड़ी नहीं लगाई।"

तीसरे ने कहा, "यह मूर्खता की सीमा है कि समुद्र की तरफ घोड़े पर यात्रा की जाए।"

चौथे ने कहा, "केवल सुस्त और आलसी आदमी ही घोड़े रखते हैं।"

तब वह यात्री अत्यन्त हैरान हुआ और चिल्लाया, "मेरे मित्रो ! क्या तुम इसलिए मेरी भूलों और त्रुटियों को गिनवा रहे हो कि मेरा घोड़ा चोरी हो गया है ? पर आश्चर्य की बात तो यह है, कि तुमने एक शब्द भी उस आदमी के सम्बन्ध में नहीं कहा जिसने मेरा घोड़ा चुराया है।"

कवि

मेज पर मदिरा का प्याला रखा था और चार कवि उसके इर्द-गिर्द बैठे थे।

पहले कवि ने कहा, "मेरा ख्याल है कि मैं अपनी तीसरी आँख से इस मदिरा की महक को वायुमंडल में ऐसे फैले हुए देखता हूँ जैसे किसी जादू किये हुए जंगल पर पक्षियों का झल्लर।"

दूसरे कवि ने अपना सिर उठाया और कहा, "मैं अपने आंतरिक कान से कल्पित पक्षियों को गाते हुए सुन रहा हूँ और उनका मधुर राग मेरे हृदय को इस तरह थामे हुए है, जैसे सफेद गुलाब मधुमक्खी को अपनी पंखड़ियों में कैद कर लेता है।"

तीसरे कवि ने आँखें बन्द करते हुए और आकाश की तरफ भुजाएँ फैलाते हुए कहा, "मेरा हाथ उन्हें छू रहा है और मैं उन

पक्षियों के पंखों को इस तरह अनुभव कर रहा हूँ, जैसे निद्रा मग्न सुन्दरी की श्वासें मेरी उंगलियों से टकरा रही हों।"

तब चौथा कवि उठा और प्याले को ऊँचा करते हुए बोला, "खेद है मित्रो ? मैं आप की तरह देखने-सुनने और छूने के इन गुणों और शक्तियों से इतना वंचित हूँ कि मैं इस मदिरा की महक नहीं देख सकता। न कल्पित पक्षियों का कोई राग सुन सकता हूँ और न इनके परों की फड़फड़ाहट ही को अनुभव कर सकता हूँ। मैं केवल शराब देखता हूँ शराब, और मुझे अब इसे पीना ही होगा, जिससे मेरी इंद्रियों में भी स्फूर्ति पैदा हो जाए और मैं तुम्हारी कल्पना की ऊँचाइयों तक पहुँच सकूँ।"

और प्याले को अपने होठों से लगाते हुए वह शराब की तलछट तक पी गया।

तीनों कवि आश्चर्य से उसकी तरफ देखते रह गये। अब उनकी आँखों में ऐसी घृणा थी जो कवियों में नहीं होती।

वायु दिशा-सूचक

वायु दिशा सूचक ने वायु से कहा, "तुम्हारा सदा एक ही तरह चलते रहना कितना थका देने वाला है ! क्या तुम मेरे चेहरे से हटकर किसी दूसरी दिशा में नहीं चल सकतीं ? तुम ईश्वर की दी हुई मेरी दृढ़ता को चलायमान किये देती हो ?"

पर वायु ने कोई उत्तर न दिया और आकाश में केवल एक अट्टहास सुनाई दिया।

अरबोस का राजा

एक बार अरबोस के बड़े-बड़े आदमी राजा के दरबार में उपस्थित हुए और उससे निवेदन किया कि वे अपने राज्य में एक ऐसी आज्ञा जारी करें, जिसके अनुसार प्रजा के लिए सब प्रकार की शराब और मादक वस्तुएँ निषिद्ध मानी जाएँ।

पर राजा ने उनकी तरफ कोई ध्यान न दिया और हंसता हुआ वहाँ से चला गया।

इस पर नगर के वे बड़े बड़े आदमी निराश होकर वहां से लौट गये।

महल के द्वार पर दरबान उन से मिला और उसे ज्ञात हुआ कि उन्हें कुछ खेद है। वह दरबान उनके मन की तह तक पहुँच गया।

उसने कहा, "दयनीय हालत है, मेरे मित्रो! यदि तुम राजा को ऐसी हालत में मिलते, जब कि वह नशे में चूर होता, तो वह तुम्हारे निवेदन को निस्सन्देह स्वीकार कर लेता।"

मेरे दिल की गहराइयों से

मेरे दिल की गहराइयों से एक पक्षी उठा और आकाश की तरफ उड़ गया। वह ऊंचा ही ऊँचा होता गया पर उसका कद छोटा होने के स्थान पर बढ़ता ही गया।

पहले वह एक चिड़िया जितना था, फिर एक कौए जितना बड़ा हो गया। उसके बाद वह एक बड़े पक्षी के बराबर हो गया। और फिर वह इतना बड़ा हो गया जितना बरसात का बादल। यहाँ तक कि उसने तारों से भरपूर आकाश को ढक लिया।

मेरे दिल की गहराइयों से एक पक्षी आकाश की तरफ उड़ा। ज्यों-ज्यों वह उड़ता गया, वह बड़ा होता गया परन्तु वह मेरे दिल से न निकला।

मेरे विश्वास और अपरिमार्जित ज्ञान! मैं तेरी ऊँचाई पर कैसे पहुँच सकता हूँ और मनुष्य की श्रेष्ठता को कैसे आकाश पर अंकित कर सकता हूँ?

मैं अपने दिल के समुद्र को धुँध में कैसे बदल सकता हूँ और इस अनन्त आकाश में क्योंकर तेरा साथ दे सकता हूँ।

मन्दिर में बन्द एक कैदी मन्दिर के सुनहरी शिखरों को कैसे देख सकता है?

एक फल के अंतरंग को क्योंकर इतना बड़ा किया जा सकता है कि वह फल को अपनी गोद में ले ले।

ऐ मेरे विश्वास! चाँदी और आबनूस के पिंजरे में मेरे पांव जंजीर से बंधे हैं और मैं तेरे साथ नहीं उड़ सकता।

फिर भी तू मेरे दिल से आकाश की तरफ उड़ता है और यह मेरा ही दिल है, जो तुझे अपने अन्दर लिये हुए है, और मैं इस बात से संतुष्ट हूँ।

वंश

असहाना की महारानी प्रसव पीड़ा में ग्रस्त थी। राजा और राज्य के प्रधान अधिकारी बड़े कमरे में चिंतित बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे।

दोपहर के समय यकायक एक राजदूत आया और राजा के सामने सिर झुकाकर बोला, "महाराज के लिए दास शुभ समाचार लाया है। श्रीमान् का चिर शत्रु थबरून का राजा मर गया।"

जब राजा तथा अन्य अधिकारियों ने यह शुभ समाचार सुना तो वे सब खुशी से उछल पड़े और हर्ष से नारे लगाने लगे। बात यह थी कि यदि यह शत्रु-राजा जीवित रहता तो निस्संदेह वह असहाना और वहाँ की प्रजा का नाश कर डालता और जनता को गुलाम बना लेता।

इसी समय शाही हकीम ने भी उस बड़े कमरे में प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे शाही दाया थी। उसने राजा के सामने

झुककर प्रणाम किया और कहा, "हमारे महामहिम्न स्वामी दीर्घायु हों! अनगिनत पीढ़ियों तक असहाना की जनता पर आप का शासन कायम रहे। अंतःपुर में ठीक इसी समय पुत्र का जन्म हुआ है और वही आपका उत्तराधिकारी होगा।"

यह सुनकर राजा प्रसन्नता से गद्गद् हो गया, क्योंकि एक ही समय में उसका शत्रु मर गया और उसका उत्तराधिकारी भी पैदा हो गया।

उस समय असहाना नगर में एक प्रसिद्ध ज्योतिषी रहता था। वह नौजवान और स्पष्टवक्ता था। राजा ने उसे दरबार में आने की आज्ञा दी। जब वह आया तो राजा ने कहा, "बताओ आज जन्म लेने वाले राजकुमार का भविष्य कैसा है?"

ज्योतिषी झिझका नहीं। उसने कहा, "महाराज मैं आपके राजकुमार के बारे में अवश्य बतलाऊंगा। आपका शत्रु राजा जो कल शाम को मरा है, उसकी आत्मा ने एक दिन के लिए एक शरीर तलाश किया। जिस शरीर में उसने प्रवेश किया है, वह आपके इस पुत्र का शरीर है।"

इस पर राजा क्रुद्ध हो गया और उसने अपनी तलवार से ज्योतिषी का सिर धड़ से अलग कर दिया।

और उस दिन से लेकर आज तक असहाना के बुद्धिमान् लोग एक दूसरे से गुप्त रूप से यह कहा करते हैं, "क्या यह बात सच नहीं है कि असहाना पर एक शत्रु राज करता है?"

मूर्खों में ज्ञान की बात

नदी में एक शहतीर तैर रहा था। उस पर चार मेंढक बैठे थे। एकाएक पानी का रेला आया और शहतीर को बहाकर मंझधार में ले गया। मेंढक खुश और संतुष्ट थे, क्योंकि उन्होंने आज तक ऐसा आनन्द कभी नहीं उठाया था।

पहला मेंढक बोला, "वास्तव में यह बहुत ही अद्भुत शहतीर है और ऐसे तैरता है मानों जिन्दा हो। आज तक ऐसा शहतीर देखने में नहीं आया।"

फिर दूसरा मेंढक बोला, "नहीं मेरे मित्र, यह शहतीर भी दूसरे शहतीरों के समान है और यह नहीं चलता। यह तो नदी है, जो समुद्र की तरफ बह रही है और अपने बहाव के साथ हमें और इस शहतीर को लिये जा रही है।"

तीसरा मेंढक बोला, "न तो शहतीर तैर रहा है और

न नदी बह रही है । गति तो हमारे विचार में है, क्योंकि विचार के बिना कोई चीज़ नहीं चलती।"

और तीनों मेंढक आपस में इस बात पर झगड़ने लगे कि वास्तव में चलने वाली वस्तु कौन-सी है। खींचतान बढ़ती गई और बातों ही बातों में जोश और गरमी पैदा हो गई। पर वे कोई निर्णय न कर सके।

उन्होंने चौथे मेंढक से पूछा, वह इस समय तक चुपचाप बैठा ध्यान से वाद-विवाद सुन रहा था। उन्होंने उसकी राय मांगी। चौथे मेंढक ने कहा, "तुममें से हर एक सचाई पर है, तुममें से कोई गलती पर नहीं। गति शहतीर में भी है, पानी में भी है और हमारे ख्याल में भी।"

इसपर तीनों मेंढक क्रुद्ध हो उठे, क्योंकि इनमें से कोई भी यह मानने को तैयार न था कि उसका मत पूर्णतया सच्च नहीं और दूसरे दोनों पूरे तौर पर गलत नहीं।

फिर एक विचित्र बात हुई। तीनों मेंढक मिल गये और उन्होंने चौथे को शहतीर पर से धक्का देकर नदी में गिरा दिया।

कोरा कागज

कागज़ के एक सफेद पृष्ठ ने कहा, "मैं निष्कलंक बनाया गया हूँ और सदा बेदाग ही रहूँगा। मैं स्याही से पुतने और कलंकित होने की बजाय जलकर सफेद राख में बदल जाना अधिक पसन्द करूंगा।"

जो कुछ सफेद कागज ने कहा दवात ने सुना और वह अपने अंधेरे हृदय में हंसी। पर उसने कागज़ के समीप जाने का साहस न किया।

रंग बिरंगी पेंसिलों ने भी यह बात सुनी। वह भी उसके समीप न पहुँच सकीं और कागज इसी प्रकार बेदाग बना रहा। बेदाग और साफ, पर बिल्कुल कोरा।

साहित्यकार और कवि

एक सांप ने एक पक्षी से कहा, "तुम उड़ते हो, पर तुम धरती के उन कोनों को नहीं देख सकते जहां जीवन का रस पूरे मौन में चलता है।

पक्षी ने उत्तर दिया, "निस्सन्देह तुम बहुत सी बातें जानते हो। नहीं, नहीं, तुम बुद्धिमानों से भी अधिक सियाने हो पर खेद है कि तुम उड़ नहीं सकते।"

सांप ने जैसे इसे सुना ही नहीं, वह कहने लगा, "तुम समुद्र के रहस्य तक नहीं पहुँच सकते, न अनदेखे प्रदेशों के खजानों में घूम सकते हो। अभी कल की ही बात है कि मैं लालों से भरी एक गुफा में लेटा था। वे पके हुए अनार के हृदय की तरह लाल थे और प्रकाश की एक छोटी सी किरण उन्हें चमकते हुए गुलाबों में बदल देती थी। मेरे अतिरिक्त इन अद्भुत चीजों को कौन देख सकता है?"

पक्षी ने कहा, "कोई नहीं, सचमुच तुम्हारे अतिरिक्त कोई जीव प्राचीन काल के बिल्लौरी स्मारकों में लेट नहीं सकता, पर अफसोस है कि तुम गा नहीं सकते।"

सांप ने कहा, "मुझे एक ऐसे पौधे का ज्ञान है, जिसकी जड़ें पाताल तक जाती हैं, और जो आदमी इस जड़ को खा लेता है वह सौन्दर्य की देवी से भी अधिक सुन्दर बन जाता है।"

पक्षी ने कहा, "ठीक है, वास्तव में कोई दूसरा जीव तुम्हारे अतिरिक्त भूमि की अलौकिक कल्पना को नहीं जान सकता, पर खेद है कि तुम उड़ नहीं सकते।"

सांप ने कहा, "लाल रंग की एक नदी है, जो पहाड़ की तह में बहती है और जो कोई आदमी उसका पानी पी ले, वह अमर हो जाए। निस्सन्देह कोई पक्षी या पशु इस लाल नदी को नहीं पा सकता।"

पक्षी ने उत्तर दिया, "हाँ, यदि तुम चाहो तो देवताओं के समान अमर बन सकते हो। पर अफसोस है, तुम गा नहीं सकते।"

सांप ने कहा, "मुझे भूमि में दबे एक मन्दिर का ज्ञान है, जिसे मैं प्रतिदिन अवश्य देखता हूँ। इसे देवताओं की प्राचीन पीढ़ी ने बनाया था। इसकी दीवारों पर काल और संसार के रहस्य चित्रित हैं, और जो कोई इन्हें देखे वह सब रहस्यों को समझ लेगा।"

पक्षी ने कहा, "सचमुच यदि तुम चाहो तो समस्त काल

और संसार की समस्त विद्याएं अपने लचकीले शरीर के साथ लपेट सकते हो। पर इस से क्या? तुम उड़ तो नहीं सकते!"

इस पर सांप भिन्ना गया। जब वह मुड़ा और बाम्बी में घुसा तो उसने बड़बड़ाते हुए कहा, "गाने वाले मूर्ख पक्षी!"

और पक्षी यह राग गाता हुआ उड़ने में मस्त हो गया, "अफसोस! मेरे बुद्धिमान् मित्र! तुम उड़ नहीं सकते।"

क़बर

एक बार एक आदमी को अपने खेत में संगमरमर की एक सुन्दर मूर्ति मिली। वह उसे एक कबाड़ी के पास ले गया। कबाड़ी को सुन्दर और प्राचीन वस्तुएं इकट्ठी करने का शौक था। कबाड़ी ने मूर्ति को अच्छे मूल्य में ले लिया। वह आदमी दाम लेकर चला गया।

जब वह दाम लेकर घर वापस जा रहा था तो उसने सोचा और अपने आपसे कहा, "इस धन में कैसा जीवन छिपा है। एक पत्थर की ऐसी बेजान मूर्ति के बदले में कोई इतना धन कैसे दे सकता है, जो सहस्त्रों वर्षों से भूमि के नीचे दबी पड़ी रही और जो किसी के स्वप्न और कल्पना में भी न आई हो।"

कबाड़ी भी इस सुन्दर मूर्ति को देखकर सोच रहा था और उसने अपने आप से कहा, "कितनी सुन्दर है यह! क्या जीवन है! किसी कलाकार का स्वप्न है यह! सहस्रों वर्षों की मीठी नींद ने इसमें क्या ताज़ापन भर दिया है! कोई आदमी ऐसी सुन्दर वस्तु को निर्जीव और तुच्छ धन के बदले क्यों कर बेच सकता है!"

दूसरे समुद्र

एक मछली ने दूसरी मछली से कहा, "हमारे इस समुद्र के ऊपर एक दूसरा समुद्र है, जिसमें और जीव भी तैर रहे हैं। वे बिल्कुल ऐसे ही रहते हैं, जिस तरह हम यहां रह रहे हैं।"

दूसरी मछली ने उत्तर दिया, "यह तो तुम्हारा निरा भ्रम है। तुम जानती हो कि जो वस्तु हमारे समुद्र को छोड़ एक इंच भी परे हट जाती है, वहीं ठहरती है, वह मर जाती है। दूसरे समुद्र में दूसरे जीवों के होने का तुम्हारे पास क्या प्रमाण है?"

पश्चाताप

एक अंधेरी रात में एक आदमी अपने पड़ोसी के खेत में घुस गया और अपनी समझ के अनुसार सबसे बड़ा तरबूज चुराकर घर ले आया।

जब उसने तरबूज चीरा तो देखा कि वह अभी कच्चा ही है।

तब एक चमत्कार हुआ।

उस आदमी का अंतःकरण जाग उठा और लज्जा से भर गया। वह तरबूज चुराने पर पछताने लगा।

मरणोन्मुख मनुष्य और गिद्ध

ठहरो-ठहरो अभी जरा ठहरो मेरे उत्सुक मित्र ! मैं बहुत शीघ्र अपने इस नाशवान् शरीर को तुम्हें सौंप दूंगा, जो दुख और पीड़ा से बेकार हो चुका है और जिसे देखकर तुम्हारे धीरज का प्याला भर चुका है ! मैं नहीं चाहता कि इन क्षणों में तुम्हारी सच्ची इच्छा को पूर्ण होने में अधिक देर लगने दूँ।

पर जीवन की यह जंजीर—यद्यपि यह साँसों की बनी हुई है, फिर भी कठिनाई से टूटती है। और यह मरने की इच्छा, जो सब दृढ़तर वस्तुओं से भी अधिक दृढ़ है, जीवित रहने की उस इच्छा से रुकी हुई है, जो सब कमजोर वस्तुओं से सुस्त है। मुझे क्षमा करो, मेरे साथी ! मैं बहुत पीछे रह गया हूँ।

यह मेरी याद ही है जो मेरी आत्मा को रोके हुए है। गुजरे हुए दिनों के उत्सव, स्वप्न में बीती हुई जवानी की एक झलक

और एक ऐसे चेहरे की याद जो मेरी पलकों को स्वप्न मग्न होने से रोकती है। आवाज मेरे कानों में गूंज रही है और जो हाथ मेरे हाथ को छू रहा है, उनकी याद भी अभी मुझे रोके हुए है। मुझे क्षमा करना। तुम्हें बहुत देर प्रतीक्षा में रखा।

लो, अब यह कहानी समाप्त हो गई। सब चीजें मुझ से छिप चुकी हैं—चेहरा, आवाज़, हाथ और वह धुंध जो मुझे यहाँ लाई थीं।

गांठ खुल गई है, डोरी टूट चुकी है और वह वापिस ले जा चुकी है, जो न अन्न है न पानी।

आओ, मेरे पास आओ मेरे भूखे साथी! भोजन परोसा जा चुका है और यह मितव्ययतापूर्ण भोज प्रेम से दिया गया है।

आओ, अपनी चोंच यहां मेरी बायीं ओर गाड़ दो और इस छोटे से पक्षी को इसके पिंजरे से आज़ाद कर दो, इसके पंख अब कभी फड़फड़ा नहीं सकते। मेरी इच्छा है कि यह तुम्हारे साथ आकाश की तरफ उड़ जाए।

अब आओ, हाँ आओ मेरे मित्र! मैं आज की रात तुम्हारा मेहमान हूँ। और तुम, तुम मेरे आदरणीय अतिथि!

मेरे एकान्तवास से दूर

मेरे एकान्तवास से परे एक और एकान्त स्थान है। इस एकान्त में बसने वाला मेरे अकेलेपन को एक चहल-पहल वाला बाजार और मेरे मौन को बिखरी हुई आवाजों का संग्रह समझता है।

मैं इतना अल्पायु और बेचैन हूँ कि ऊर्ध्वलोक के उस एकान्त तक नहीं पहुँच सकता। उस घाटी की प्रतिध्वनियाँ मेरे कानों में अभी तक गूंज रही हैं और इसकी छाया मेरा मार्ग रोके खड़ी है, पर वहाँ जा नहीं सकता।

इन पर्वतों से परे जादू का एक जंगल है और उसका निवासी जादू से प्रभावित है। इसके सामने मेरे हृदय की शाँति एक आंधी के समान है और मेरी हृदय मोहकता—एक धोखा है, छल है।

मैं अभी अल्पायु हूँ और मेरी हो-हुल्ला प्रियता मुझे इस पवित्र कुंज तक नहीं पहुँचने देती।

मेरे होंठों से अभी खून लगा है और मेरे पूर्वजों की कमान और तीर अभी तक मेरे हाथ में हैं, मैं जा नहीं सकता।

मेरे इस भारी तत्व से परे मेरा एक स्वतन्त्र तत्व भी है, जिसके प्रकाश में मेरे स्वप्न आपसी संघर्ष के लिये तैयार हैं। मेरी आशाओं की हड्डियाँ खड़खड़ा रही हैं।

मैं अभी कम उम्र हूँ और उस स्वतन्त्र तत्व तक पहुँचने के लिए बहुत बदनाम किया गया हूँ।

और मैं स्वतन्त्र तत्व क्यों कर बन सकता हूँ, जब तक कि मैं अपने अधीनस्थ तत्वों को नष्ट न कर दूं, या जब तक कि सब लोग आजाद न हो जाएँ?

लहलहाकर गाने वाली पत्तियाँ वायु में कैसे उड़ सकती हैं, जब तक कि मेरी जड़ें अँधेरे में न मुरझा जाएँ?

मेरा सफेद हंस सूर्य की ऊंचाई तक क्यों कर पहुँच सकता है, जब तक कि मेरे छोटे बच्चे इस घोंसले को, जिसे मैंने अपनी चोंच में तिनके उठा-उठा कर बनाया है, अलविदा न कहदें।

अंतिम पहरा

बहुत रात बीते प्रातः की प्रथम किरण ने वायु में सांस ली। अपने आपको एक अनसुनी आवाज़ की प्रतिध्वनि कहने वाला अग्रदूत अपने शयनागार से निकलकर अपने घर की छत पर चला गया। वह छत पर बहुत देर तक स्थिर खड़ा रहा और सोये हुए शहर को देखता रहा। फिर उसने अपना सिर उठाया, मानो सोने वालों की जागृत आत्माएं उस के चारों ओर इकट्ठी हो गई हों।

उसने अपने होंठ खोले और बोला :—

"मेरे मित्रो और पड़ोसियो और वे सब, जो प्रतिदिन मेरे दरवाज़े से गुजरते हैं मैं ; तुम्हें सोते में कुछ कहना चाहता हूँ।

"मैं तुम्हारे स्वप्नों की घाटी में बेखटके और निहत्था फिरूंगा, क्योंकि तुम जागृत अवस्था में बेसुध हो और प्रतिध्वनियों के बोझ से तुम्हारे कान बहरे हैं।

"मैंने मुद्दतों तुम से प्रेम किया है और खूब किया है।

"मैंने तुम में से एक-एक के साथ इस प्रकार प्रेम किया कि मानो वह एक सब कुछ है और सब से इस प्रकार प्रेम किया कि वे सब एक हैं। मैंने अपने हृदय की वसंत ऋतु में तुम्हारे बागों में गाया और जब गर्मी की ऋतु आई, तब मैंने तुम्हारे खलिहानों को देखा।

"मुझे तुम सबसे प्रेम था। हां, मुझे तुम सबसे प्रेम है। सुडौल शरीर वालो, बौनो, कोढ़ियो और धर्म्माचार्यो!

"और उससे भी प्रेम है जो पर्वतों पर नाच कर अपने दिन गुज़ार देता है।

"बलवानो मैंने तुमसे भी प्रेम किया, यद्यपि तुम्हारे लोह-चरणों के चिन्ह मेरी खाल पर ज्यों के त्यों अंकित हैं।

"और दुर्बलो, मैंने तुम से भी प्रेम किया है। यद्यपि तुम ने मेरा विश्वास मुझ से छीन लिया और मेरा संतोष और धैर्य अकारथ गया।

"और धनवानो, मैंने तुमसे भी प्रेम किया, यद्यपि तुम्हारे मधु का स्वाद मेरे मुख में कड़वा हो गया।"

"दरिद्रियो, मैं ने तुम से भी प्रेम किया, यद्यपि तुम खाली हाथ की लज्जा जानते थे।

"कवियो, भद्दी बांसुरी और अंधी उंगलियों वाले कवियो! मैंने अपनी हृदय लोलुपता के लिए तुम से भी प्रेम किया।

"और विद्वानों, मैंने तुम से भी प्रेम किया, जो सदा इन मैदानों में गले-सड़े कफन इकट्ठे करते रहे, जहां से कुम्हार मिट्टी लाते हैं।

"धर्माचार्यो! मैंने तुमसे भी प्रेम किया। जो तुम अतीत के मौन में बैठकर कल के भाग्य की जांच पड़ताल करते हो।

"और हे देवपूजको! देवता स्वयं तुम्हारी इच्छाओं के प्रति-रूप हैं। मैंने तुमसे भी प्रेम किया।

"और—ऐ प्यासी स्त्री! जिसका प्याला सदा भरा रहा, मैंने उसके स्वभाव को भी पहचाना और उस से प्यार किया।"

"और—ऐ बेचैन रातों वाली स्त्री! मैं ने तुम पर दया कर के तुम से प्रेम किया।

"बातूनियो! मैं ने तुम से यह कहते हुए प्रेम किया कि जीवन को अपने सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना है।"

"और गूंगो! मैं ने तुम से अपनी दबी जबान से यह कहते हुए प्रेम किया कि इस मौन में वह कुछ नहीं कहता, जो मैं शब्दों में सुनना चाहता हूँ।

"और—ऐ न्याय-कर्ताओ और समालोचको! मैं ने तुम से भी प्रेम किया, यद्यपि जब तुम ने मुझे सूली पर चढ़ते देखा तो तुम ने कहा, देखो, इसका खून कितनी मीठी आवाज के साथ बह रहा है और यह इसकी गोरी खाल पर कितना सुन्दर मालूम होता है।

"जवानो और बूढ़ो ! बेंत और बलूत के वृक्षो ! मैंने तुम से प्रेम किया, पर खेद है कि तुम ने मेरे हृदय में प्रेम का प्रवाह देख कर मुझ से मुँह मोड़ लिया। तुम एक प्याले में से प्रेम के घूंट पीना चाहते हो, पर एक ठाठें मारते दरिया से तृप्त होना नहीं चाहते।

"तुम प्रेम की हलकी आवाज़ सुनने के इच्छुक हो, पर जब प्रेम तुम्हें पुकारता है तो तुम अपने कानों में रूई ठूंस लेते हो।

"और मुझे तुम से प्रेम था, इसलिये तुम ने कहा ;

"इसका दिल बहुत ही कोमल और पीड़ा परिपूर्ण है। यह आदमी देख भाल कर रास्ते पर नहीं चलता।"

"यह एक निर्धन का प्रेम है, जो राजसी भोजों में होता हुआ भी रोटी के टुकड़े चुनता है।"

"यह एक दुर्बल का प्रेम है, क्योंकि बलवान सदा बलवानों से प्रेम करता है।"

"और चूँकि तुम से मुझे अथाह प्रेम था, तुम ने कहा।

"यह तो एक अंधे आदमी का प्रेम है, जिसे न तो किसी के सौन्दर्य का ज्ञान है और न किसी के कुरूप का अनुभव ।

"और यह ऐसे कुरुचिपूर्ण का प्रेम है, जो सिरके को शराब की तरह पी जाता है।"

"और यह एक उद्दण्ड और आत्माभिमानी का प्रेम है।

"आखिर एक अनजान से माँ-बाप, और बहन-भाई का सम्बन्ध क्यों कर हो सकता है ?

"तुम ने यह और ऐसी बहुत-सी दूसरी बातें भी कहीं! बाज़ार में बार-बार तुम्हारी अँगुलियाँ मेरी तरफ उठीं और तुम ने कटाक्ष के रूप में कहा :—

"देखो वह आता है सदा जवान और बे-ऋतु का आदमी, जो ठीक दोपहर के समय हमारे बच्चों के साथ खेल खेलता है और शाम को हमारे बड़े-बूढ़ों की संगति में बैठकर बुद्धिमत्ता, समझ और ज्ञान की बातें बनाता है।

"और मैंने कहा :—

"मैं इन्हें सबसे ज्यादा प्यार करूँगा; हाँ बहुत ज्यादा।"

"मैं अपने प्रेम को बाहरी घृणा में छिपा लूँगा और अपनी कोमल भावनाओं पर कटुता का परदा डाल लूँगा।"

"मैं लोहे का परदा पहन लूँगा और हथियारबन्द होकर और कवच लगा कर इनसे मिलूँगा।

"फिर मैंने तुम्हारे जख्मों पर अपना भारी हाथ रख दिया और रात के तूफान के समान मैं तुम्हारे कानों में गरजा।

मकान की छत पर से मैं ललकारा कि तुम गेहूँ सदृश जौ बेचने वाले हो। कुतर्की, धोखेबाज़, झूठे और केवल बुलबुले हो।

"तुममें से जो अदूरदर्शी हैं, मैंने उन्हें अंधा चमगादड़ कहकर शाप दिया।"

और जो सांसारिक स्वार्थों से अधिक घिरे हुए हैं, उन्हें आत्माहीन छछूंदर कहा।

"और तुम में जो अच्छी-अच्छी बातें करते हैं, उन्हें कांटेदार जिव्हाएँ कहा।

"और जो कठोर होठों वाले सरल हृदय और बदतमीज़ लोग हैं, मैंने कहा ये मुरदा हैं और ये बारबार मरने से कभी नहीं थकते।"

"और जो धार्मिक ज्ञान की खोज में प्रयत्नशील थे, मैंने उन्हें पवित्र आत्मा के प्रति विद्रोही कहा।"

"वह जो आत्मा का आलिंगन करना चाहते हैं, मैंने उन्हें छाया का शिकारी कहा।

"वह शिकारी जो अपने जाल पांव डुबा देने वाले पानी में डालते हैं ,अपनी छाया के सिवा किसी का शिकार नहीं करते।

"इस तरह मेरे होठों ने बाहरी रूप से तुम्हें प्रभावित किया, लेकिन मेरा दिल खून के आँसू रोता था और इससे तुम्हें प्यारे-प्यारे नामों से पुकारा।

"वह प्रेम ही तो था, जो अपने ही तत्व से चोटें खाकर बोल रहा था।":

यह घमण्ड था जो अधमरा होकर मिट्टी में तड़प रहा था।"

"वह तुम्हारे प्रेम के लिए मेरी भूख ही तो थी जो अत्यंत जोश में थी, जबकि मेरा अपना प्रेम खामोशी में घुटनों के बल झुककर तुमसे क्षमा मांग रहा था।

लेकिन वह देखो चमत्कार!

"यह मेरा वह रूप था, जिसने तुम्हारी आँखें खोल दीं और बाहर से मेरी घृणा में तुम्हारे हृदय के पट खोल दिये।"

"और अब तुम मुझसे प्रेम करते हो।"

"और अब तुम इन तलवारों को पूजते हो जो तुम्हें काटती हैं।

"और इन तीरों को चूमते हो जो तुम्हारी छातियों में गड़ जाते हैं, क्योंकि जख्मी होकर तुम संतुष्ट हो जाते हो और अब तुमने अपना ही खून पिया हो तो तुम्हें नशा हो जाता है।

"इन परवानों की तरह जो आग पर मर मिटने के लिए बेताब होते हैं, तुम मेरे उद्यान में प्रतिदिन इकट्ठे होते हो। तुम अपने भाग्य की रेखाओं को मिटते देखकर अपने चकित चेहरे उठाकर—और जादू से प्रभावित आँखों से मेरी तरफ देखते हुए दबी आवाज से एक-दूसरे को कहते हो :—

"इसमें परमात्मा का प्रकाश दिखाई पड़ता है और इसके प्रवचन में प्राचीन काल के अवतारों जैसा प्रभाव है। इसने हमारी आत्माओं को प्रकट कर दिया है और हमारे हृदयों के पट खोल डाले हैं। इसे उस गरुड़ की तरह हमारे सब ढंग मालूम हैं, जो लोमड़ियों के रंग-ढंग से खूब परिचित होता है।

"हाँ, सच तो यह है मैं तुम्हारी चाल-ढाल जानता हूँ, लेकिन ऐसे ही जैसे गरुड़ अपने बच्चों के कामों को खूब समझता

है। मैं अपने भेद खोल देना चाहता हूँ, पर मैं अपनी जरूरत में तुम्हारे पास रहना चाहता हूँ। मुझे तुम्हारा सामीप्य प्यारा है, पर मैं दूर-दूर रहने का बहाना करता हूँ।

"मैं तुम्हारे प्रेम के उतार-चढ़ाव से परिचित हूँ, फिर भी मैं अपने प्रेम के तूफान की देखभाल करता हूँ।"

यह कह चुकने के पश्चात् अग्रदूत ने अपने चेहरे को अपने दोनों हाथों से ढाँप लिया और फूट-फूट कर रोने लगा, क्योंकि वह जानता था कि जो प्रेम मग्न होकर बदनाम हो जाए, उसका दर्जा इस प्रेम से ऊँचा होता है, जो छिप-छिप कर उद्देश्य-सिद्धि से आलिंगन करना चाहता है। फिर वह लज्जित हो गया।

परन्तु एकाएक उसने अपना सिर इस तरह ऊँचा उठाया, जैसे कोई नींद से उठा हो। उसने अपने हाथ फैलाये और कहा:—

"रात समाप्त हुई। हम रात के बच्चे मर जाएँगे।"

"जब सच्चे प्रभात का प्रकाश पहाड़ियों पर उछलता हुआ आएगा तो हमारी ही राख में से एक महानतम प्रेम पैदा होगा। वह प्रेम सूरज पर हँसने वाला और अमर प्रेम होगा।"

महाकवि

महाराज स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान थे। चारों ओर प्रकाश फैला था और धूपदानों से सुगंध की लपटें निकल रही थीं। दायें बायें दरबारी, राज्याधिकारी और धर्म पंडित बैठे थे। सामने दास और सिपाही इस प्रकार खड़े थे, जैसे मूर्ति के सम्मुख भक्तगण।

थोड़ी देर पश्चात् जब गवैयों के सुरीले गीत समाप्त होकर रात के कृष्णावरण में विलुप्त हो गये, तो प्रधान मंत्री उठा और बादशाह के सामने हाथ जोड़कर वृद्धावस्था के दुर्बलता पूर्ण स्वर में एक-एक कर कहने लगा, "पृथ्वीनाथ! भारतवर्ष का एक अद्भुत दर्शनशास्त्री कल नगर में आया है। उसके उपदेश ऐसे अनोखे हैं कि आजतक सुनने में नहीं आये। उसका विश्वास है, कि आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में और मनुष्य एक शताब्दि से दूसरी शताब्दि में घूमता रहता है। यहाँ तक कि वह परम पद को प्राप्त करके देवताओं की श्रेणी में शामिल

हो जाता है। अपने इसी धर्म-प्रचार के लिए वह यहाँ आया है और चाहता है कि आज की रात आप के सामने अपने विश्वासों और मान्यताओं को स्पष्ट करे।"

महाराज ने सिर हिलाया और मुस्करा कर कहा ? "हिन्दुस्तान से ऐसी ही निराली वस्तुएं आती हैं। अच्छा, उसे उपस्थित करो। हम उसकी युक्तियां सुनना चाहते हैं।"

उसी क्षण एक अधेड़ आयु का मनुष्य दरबार में उपस्थित किया गया। उसका रंग गेहुँआ, मुख पर गम्भीरता, आंखें बड़ी-बड़ी और शरीर सुडौल था। उस की मुद्रा मौनावस्था में भी गूढ़ रहस्यों और अनोखी मनोवृत्तियों को प्रकट कर रही था। अभिवादन के पश्चात् आज्ञा पाकर उसने अपना सिर उठाया। उसकी तेजपूर्ण आंखें आभा से चमक उठीं और वह अपने नवीन विचारों का वर्णन करने लगा। उसने बताया कि आत्मा मध्यमार्ग के अनुसरण और प्राप्त अनुभवों के प्रभाव द्वारा क्रम से उन्नति करती हुई, उच्च पद और शक्तिप्रदान करने वाली महाशक्तियों के साथ झूमते हुए पुण्य और समृद्धि में लीन करने वाले प्रेम के साथ पालन पोषण प्राप्त करती हुई किस प्रकार एक शरीर से दूसरे शरीर में बदलती है। फिर उसने बताया कि मनुष्य पूर्णता सम्बंधी आदर्शों की खोज करता हुआ और वर्तमान में पूर्व पापों का प्रायश्चित्त करता हुआ और एक योनि में किये हुए कर्मों का फल दूसरी योनि में भोगता हुआ किस प्रकार शरीर बदलता है।"

अब तत्व वर्णन ने विस्तार पकड़ा और महाराज के मुख पर

बेचैनी और थकान के चिन्ह प्रकट होने लगे, तो प्रधानमंत्री नवागंतुक दर्शनशास्त्री के पास आया और उसके कान में चुपके से कहा, "बस, इस प्रवचन को अब किसी और अवसर के लिए उठा रखो।"

दर्शनशास्त्री रुका और लौटकर धर्म पंडितों की पंक्ति में बैठ गया। उसने अपनी आंखें बंद करलीं, मानो वह जीवन के रहस्यों को ध्यान से देखते-देखते थक गया है।

थोड़ी देर मौन के पश्चात् जो संतों की समाधि और ध्यानमग्नावस्था के समान था, महाराज ने दायें बायें देखकर पूछा, "हमारा कवि कहां है? हमने इसे बहुत समय से नहीं देखा। उस पर क्या बीती? वह तो हरएक रात को हमारी सभा में उपस्थित रहता था।"

एक पादरी ने कहा, "एक सप्ताह हुआ मैंने उसे देवी के मन्दिर के द्वार पर बैठे देखा था। वह अपनी स्तब्ध और दुःख पूर्ण आंखों से दूर क्षितिज को देख रहा था, मानों उसका कोई गीत बादलों में खोगया हो!"

एक दरबारी बोला, "कल मैंने उसे बेंत और सरु के कुंजों में बैठे देखा था। मैंने अभिवादन किया पर उसने कोई उत्तर न दिया और यथावत् अपने विचार-सागर में निमग्न रहा।" एक सरदार ने कहा, "आज वह मुझे महल के आंगन में दिखाई दिया था। मैं उसके पास गया तो देखा कि उसका मुख शोक और दुःख की प्रतिमूर्ति है, पलकों पर आंसू मचल रहे हैं और

सांस घुट-घुट कर आ रही है।"

खेद पूर्ण स्वर में महाराज ने आज्ञा दी, "जाओ, उसे शीघ्र खोजकर लाओ। हमारी तबीयत उसके लिए बेचैन है।"

गुलाम और सिपाही कवि की तलाश में चले गये और बादशाह सहित सारा दरबार मौन, विस्मित प्रतीक्षा में बैठा रहा। ऐसा मालूम होता था, कि वह सब कमरे के बीच में खड़े हुए एक अनदेखी परछाई का अस्तित्व अनुभव कर रहे हैं।

राजप्रसाद का एक अनुचर आया और महाराज के चरणों पर उस पक्षी के समान गिर पड़ा जिसे बहेलिये के तीर ने गिरा लिया हो। महाराज अनायास चिल्लाये, "क्या बात है? क्या हुआ?"

अनुचर ने सिर उठाया और कांपता हुआ कहने लगा, "महाराज, कवि प्रासाद के उद्यान में मृत पड़ा है।"

महाराज एकदम खड़े हो गये। उनका मुख दुःख और शोक से मुरझा गया। वह धीरे-धीरे बाग की तरफ चले। उनके आगे-आगे हाथों में मशालें लिये गुलाम थे, पीछे दरबारी और पंडित। बाग के घेरे के पास, जहाँ बादाम और अनार के वृक्ष थे, दीपकों के पीले प्रकाश में एक निर्जीव शरीर दिखाई दिया जो गुलाब की सूखी हुई टहनी की तरह घास में पड़ा था।

एक धर्मपंडित ने कहा, "देखो! उसने सितार को किस तरह गले से लगा रखा है, मानो वह एक सुन्दरी है, जिससे उसे प्रेम था और जो उससे प्रेम करती है। उसी प्रेम के आधार पर उन्होंने प्रण कर लिया था कि हम दोनों साथ मरेंगे।"

सेनापति बोला, "अपने स्वभाव के अनुसार अब भी वह आकाश की गहराइयों को देख रहा है, मानो तारों में इसे अज्ञेय परमात्मा की परछाई नजर आ रही है।"

राज ज्योतिषी ने बादशाह को सम्बोधन करके कहा, "कल देवी के मन्दिर के निकट हम इसका अंतिम संस्कार करेंगे। नगर का हर छोटा-बड़ा इसकी अर्थी के साथ होगा। नवयुवक इसकी प्रसंशा के गीत गायेंगे और नवयुवतियाँ इसकी अर्थी पर पुष्प वर्षा करेंगी। यह हमारे देश का सबसे बड़ा कवि था, इसलिए इसकी अर्थी का जलूस भी शानदार होना चाहिए।"

बादशाह ने कवि के उस मुख पर से दृष्टि उठाये बिना, जिस पर मृत्यु का आवरण पड़ा था, सिर हिलाया और धीरे से कहने लगा, "नहीं, जब वह जीवित था और देश के कोने-कोने को अपनी आत्मा के प्रकाश से चमका रहा था और वायु मंडल के एक-एक प्रदेश को अपने श्वासों की सुगन्ध से सुगन्धित कर रहा था, हमने उसे भुला दिया। इसलिए यदि हम अब इसके मरने के बाद इसका आदर मान करते हैं तो देवता हमारा उपहास करेंगे और पर्वतों और वनों की अप्सराएँ हम पर हँसेगी। अच्छा यही है, कि इसे यहीं दफन करो, जहाँ इसकी आत्मा ने शरीर त्याग किया है। इसके सितार को शरीर से चिपटा रहने दो। यदि तुममें से कोई इसका सम्मान करना चाहता है, तो वह अपने घर जाये और अपने कुटुम्बियों को बताए, कि बादशाह ने अपने कवि से उदासीनता का व्यवहार किया अतः वह एकान्त और दुःख पूर्ण अवस्था में मर गया।"

इसके पश्चात् उसने चारों ओर देखकर पूछा, "भारतीय दर्शनशास्त्री कहाँ है ?"

दर्शनशास्त्री आगे बढ़ा और कहा, "महाराज, उपस्थित हूँ ।"

बादशाह ने पूछा, "हे बुद्धिमान् ! बता क्या मुझे एक बादशाह और इसे एक कवि के रूप में इस संसार में फिर भेजेंगे ? क्या मेरी आत्मा किसी चक्रवर्ती राजकुमार और इसकी आत्मा महाकवि का शरीर धारण करेगी ? क्या प्रकृति का नियम इसे दुबारा परमात्मा की सृष्टि में पैदा करेगा जिससे यह जीवन को कविता का रूप दे ? क्या अनंत नियम मुझे फिर इस तत्वमय संसार में भेजेगा जिससे मैं इस कवि पर अपने पुरस्कार तथा कृपा की वर्षा और इसके हृदय को अपने दान से प्रसन्न करूं ?"

दर्शनशास्त्री ने उत्तर दिया, "आत्मा जो कुछ चाहती है, उसे वह अवश्य मिलता है । जो नियम शीत-ऋतु की समाप्ति पर वसंत के आनन्द मंगल का प्रवाह करता है, वह अवश्य आपको शक्तिमान् बादशाह और इसे महाकवि बनाकर इस संसार में फिर से भेजेगा ।"

बादशाह का चेहरा खिल उठा । उसकी आत्मा में एक नवीनता और प्रफुल्लता भर उठी और वह अपने महल की ओर चल दिया । उसका मस्तिष्क भारतीय दर्शन शास्त्री के वचन पर विचार कर रहा था और उसका हृदय उसके इन शब्दों को दुहरा रहा था, "आत्मा जो कुछ चाहती है, उसे वह ज़रूर मिलता है ।"

आत्मघात से पहले

वह स्त्री जिसे मैं प्यार करता हूँ, उजड़े-से शांत कमरे में बैठी थी। गुलाबी, नर्म और कोमल तकियों पर उसका सिर रखा था और बिल्लौरी शीशे के गिलास में उसने इत्र मिली मदिरा की एक घूँट पी थी।

यह जो कुछ था, कल था। और 'कल' एक ऐसा स्वप्न है जो कभी लौटकर वापस नहीं आता।

पर आज, आज वह स्त्री उसी ठंडे, उजड़ दूर देश में चली गई थी, जो मेरी आशाओं की दुनिया के समान है और जिसे एकान्त और विस्मृति का देश कहते हैं।

मेरे हृदय की रानी—उस स्त्री की उंगलियों के निशान अब तक मेरे दर्पण पर प्रकट हो रहे हैं। उसके श्वासों की सुगंध से अब तक मेरे वस्त्र महक रहे हैं और उसकी मधुरवाणी से अब तक मेरे घर का कोना-कोना गूँज रहा है, यद्यपि स्वयं वह स्त्री जो मेरे प्रेम का केन्द्र है, वह उस दूर स्थान की तरफ चली

गई है, जिसे वियोग और विद्रोह की बस्ती कहते हैं, पर उसकी उंगलियों के चिह्न, उसके मुख की सुगन्ध और उसकी आत्मा का प्रतिबिम्ब इस कमरे में कल प्रातःकाल तक बाकी रहेगा और अब मैं अपने मकान के द्वार वायु के लिए खोलूँगा तो उसके झोंके उस प्रत्येक वस्तु को उड़ा ले जाएँगे जो इस सुन्दर मोहनी जादूगरनी ने मेरे लिए छोड़ी है।

मेरी समस्त आकांक्षाओं की स्रोत—उस स्त्री का चित्र अब तक मेरे बिस्तर के पास लटक रहा है। उसके प्रेम-पत्र मूँगे और लाल पत्थर से जड़ी हुई चाँदी की संदूकची में अब तक सुरक्षित हैं और उसके सुनहरी केशों की वह लटें अब तक कस्तूरी और अम्बर की सुगन्ध से बसे गिलाफ़ में रखी हैं जो उसने मुझे निशानी के रूप में दी थीं। ये सब वस्तुएँ प्रातःकाल तक अपने स्थान पर रहेंगी, पर जब प्रातः होगा और वायु के लिए मैं अपने द्वार खोलूँगा तो उसकी तरंगें इन सब वस्तुओं को अभाव के अंधकार में ले जाएँगी जहाँ शान्ति और मौन का साम्राज्य है।

नवयुवको! वह स्त्री जिसे मैं प्रेम करता हूँ, उन्हीं स्त्रियों जैसी है जिनसे तुम प्रेम करते हो। यह सृष्टि की एक ऐसी विचित्र रचना है, जिसको देवताओं ने कबूतरों की शान्तिप्रियता, सांप की कुंडलियां, मयूर के अभिमान, भेड़िये का कठोर स्वभाव, सफेद गुलाब के फूल का सौन्दर्य और अंधेरी रातों के भय को मुट्ठी भर राख और चुल्लू भर समुद्र झाग में मिलाकर बनाया है। मैं अपनी इस प्रेमिका को बचपन से जानता हूँ जबकि मैं

खेतों में उसके पीछे-पीछे दौड़ता था और बाजारों में उसका पल्ला पकड़ लेता था।

मैं उसे अपने युवाकाल में भी जानता था जबकि मैं पुस्तकों में उसके मुख का प्रतिबिम्ब देखता था, संध्या के बादलों में उसकी आकृति को देखता था और नहरों के प्रवाह में उसके स्वर की झंकार सुनता था।

मैं उसे अपनी प्रौढ़ावस्था में भी जानता था जबकि मैं उसकी बगल में बैठकर उससे बातचीत करता था, भिन्न-भिन्न वस्तुओं के बारे में उससे प्रश्न करता था, अपनी हृदय पीड़ा की शिकायत लेकर उसके पास जाता था और अपनी आत्मा के रहस्य उसपर प्रकट करता था।

यह जो कुछ था 'कल' था, और 'कल' एक ऐसा स्वप्न है जो अब कभी वापिस नहीं आता। परन्तु आज, आज वह स्त्री जिसे मेरा हृदय प्यार करता है, एक सर्द, उजड़े हुए ऐसे प्रदेश को चली गई है, जिसे एकान्त और मौन प्रदेश कहते हैं।

पर इस स्त्री का नाम क्या है जिसे मेरा हृदय प्यार करता है? उसका नाम है जीवन, जिन्दगी।

जीवन एक ऐसी सुन्दर मोहनी नारी है, जो हमारे हृदयों को लुभाती, हमारी आत्माओं को बहकाती और हमारी बुद्धि और अनुभूतियों को अपनी प्रतिज्ञाओं से बोझिल करती है। यदि प्रतिज्ञाएँ लम्बी होती हैं तो हृदय में धैर्य धारण की शक्ति जाती

रहती है, और यदि वह पूरी हो जाती हैं तो हमारे अंतरंग में खेद और शोक की लपटें भड़क उठती हैं।

जीवन एक ऐसी स्त्री है जो चमकीले दिनों के वस्त्र पहनती है जिनमें काली रातों के अस्तर लगे रहते हैं।

जीवन एक स्त्री है, जो अपने प्रेमियों के आंसुओं से स्नान करती है और अपने शहीदों के रक्त का इत्र मलती है।

जीवन एक ऐसी स्त्री है जो मानव-हृदय को अपना मित्र तो बना सकती है, किन्तु स्वामी नहीं।

जीवन एक ऐसी दुश्चरित्र किन्तु सुन्दर स्त्री है, जो कोई उसके दुश्चलनों को देख लेता है तो उसके सौन्दर्य से घृणा करने लगता है।

गुलामी

मनुष्य जीवन का दास है। यह दासता उसके दिनों को अपमान और तिरस्कार के परदे में लपेट देती है और उसकी रातों को आँसुओं और खून की धारा में डुबा देती है।

मेरे पहले जन्म को सात हजार वर्ष हुए, परन्तु आज तक मैंने दासवृतिधारियों और हथकड़ी बेड़ी में जकड़े हुए कैदियों के अतिरिक्त और किसी को नहीं देखा। सब गुलाम ही देखे।

मैंने दुनिया में पूर्व और पश्चिम में यात्रा की है; जीवन के अंधेरे-उजाले के गिर्द चक्कर लगाये हैं; जातियों और वंशों को सामुहिक रूप से कन्दराओं से निकलकर महलों में जाते देखा है, परन्तु अभी तक बोझ से दबी हुई गर्दनों, जंजीरों में जकड़ी हुई कलाइयों और मूर्तियों के सामने झुके हुए घुटनों के अतिरिक्त मुझे और कुछ नजर नहीं आया।

बाबल से पैरिस और नैनवा से न्यूयार्क तक मैं मनुष्य के साथ-साथ रहा। मैंने उसके चरण-चिन्हों के साथ-साथ उसकी

बेड़ियों के चिन्ह बालू रेत पर अंकित देखे। और तहलटियों तथा जंगलों को समय समय और राष्ट्रों के घोषों, दुखपूर्ण आवाजों को दुहराते सुना है।

मैं राज-भवनों, विद्यालयों और पूजा-स्थलों पर गया, बलिवेदियों और मन्दिरों के सामने खड़ा हुआ. वहाँ मैंने देखा कि मजदूर पूंजीपति का गुलाम है, पूंजीपति सिपाही का, सिपाही सेनापति का गुलाम है, सेनापति बादशाह का और बादशाह पादरी का गुलाम है। मैंने यह भी देखा कि पादरी मूर्ति का गुलाम है और मूर्ति मिट्टी है, जिसे गूंधकर शैतानों ने मृत खोपड़ियों के ढेर पर खड़ा कर दिया है।

मैंने धनवानों और शक्ति-सम्पन्न मनुष्यों की हवेलियों में प्रवेश किया, दरिद्रियों और निर्बलों की झोंपड़ियों में गया; मैं हाथी दाँत की मूर्तियों और सुनहरी वस्तुओं से सजे हुए कमरों में बैठा, निराशा की परछाइयों और मृत्यु के श्वासों में गन्दी कोठरियों में बैठा और देखा कि बच्चे दूध के साथ गुलामी का विष पी रहे हैं, लड़के "अ आ इ" के साथ नरमी और दीनता का पाठ सीख रहे हैं, लड़कियाँ नम्रता और छल-कपट के वस्त्र पहन रही हैं और स्त्रियाँ आज्ञापालन के बिस्तरों में सो रही हैं।

मैं जातियों के साथ-साथ कुंज नदी के किनारों से फ़रात नदी के किनारे तक, नील के मुहाने, सीनिया के पर्वतों, एथेन्स के मैदानों, रोम के गिरजों, कुस्तन्तुनिया की गलियों, पैरिस के

विनोद्-स्थलों और लन्दन के विशाल भवनों तक गया और देखा कि हरएक स्थान पर गुलामी बड़ाई और आदर की उत्सव यात्रा के साथ है। जनता नवयुवकों और कुमारियों को इसकी बलि वेदी पर भेंट चढ़ाती है और उसे देवता के नाम से पुकारते हैं, उसके चरणों में सुगन्ध और शराबें बहाते हैं और उसे बादशाह का नाम देते हैं। इसकी मूर्तियों के सामने धूपबत्तियों को सुलगाते हैं और उसे अवतार के नाम से पुकारते हैं। आदमी शीश नवाते हुए उसके सामने गिरते हैं और उसे 'कानून' कहते हैं। इसके लिए लड़ते हैं और एक दूसरे का वध करते हैं, और इसका नाम राष्ट्रीयता रखते हैं। अपने आपको उसकी इच्छा पर छोड़ते हैं, और उसे पृथ्वी पर 'परमात्मा की छत्रछाया समझते हैं। इसके विचार तथा विश्वास के जोश में अपने घरों को आग लगाते और इमारतों को गिराते और उसे 'भाई-बन्दी' तथा 'समानता' (Equality and Fraternity) के नाम से याद करते हैं, इसके मार्ग में जी तोड़ परिश्रम करते हैं और इसे व्यापार कहते हैं।

दूसरे शब्दों में वह एक यथार्थ बात और एक-सा निष्कर्ष है, जिसके भिन्न-भिन्न नाम और रूप हैं। वह एक अनादि रोग है, जिसमें अनेक प्रकार के कष्ट और घाव होते हैं, जिन्हें सन्तानें जीवन के समान अपने पुरखाओं से उत्तराधिकार में प्राप्त करती हैं, और एक युग के बीज दूसरे युग की मिट्टी में इस प्रकार डालता है, जिस प्रकार एक फसल के बीज दूसरी फसल के लिए बोये जाते हैं।

गुलामी के जितने भेद और रूप मैंने देखे हैं, वे बहुत विचित्र हैं। उनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं:—

अन्धी गुलामी—जो मनुष्य के वर्तमान को उसके बाप-दादाओं, पुरखाओं के अतीत काल से जकड़ देती है और उसके हृदय को उनकी परंपराओं का दास बनाकर उसे मृत आत्माओं के लिए एक नया शरीर और गली-सड़ी हड्डियों के लिए एक सफेदी पुती हुई कब्र बना देती है।

गूंगी गुलामी—जो मनुष्य के जीवन को उस स्त्री के पल्ले से बाँध देती है, जिससे वह घृणा करता है और एक स्त्री के शरीर को उस पति के बिस्तर से जोड़ देती है, जिससे वह अप्रसन्न होती है। इस तरह इन दोनों को जीवन के एक ऐसे सम्बन्ध में जोड़ देती है जो पाँव और जूती के सम्बन्ध के समान होता है।

बहरी गुलामी—जो व्यक्तियों को आसपास की प्रवृत्तियों की नकल करने, उनके रंग में रंग जाने और उन्हीं के वस्त्र पहनने पर विवश करती है। जिसके फलस्वरूप वह व्यक्ति स्वर संसार में प्रतिध्वनि और तत्व संसार में प्रतिबिम्ब से अधिक वास्तविकता नहीं रखते।

लंगड़ी गुलामी—जो साहसी और दृढ़ मनुष्यों पर बहाने बाजों की बड़ाई का जुआ रख देती है और साहसी आदमियों के ध्येय को बड़ाई और ख्याति के लोभियों की इच्छाओं को सौंप देती है। इसके आधार पर वे उन औजारों के समान हो जाते हैं, जिन्हें उँगलियाँ पहले हिलाती हैं और फिर ठहरा कर तोड़ देती हैं।

अधेड़ गुलामी—वह है जो बच्चों की आत्माओं को विशाल वायुमण्डल से दुर्भाग्य के उन अन्धेरे गढ़ों में फेंक देती है, जहाँ आवश्यकता अज्ञान के साथ-साथ और अपमान निराशा के पास रहता है। ये बच्चे दुर्भाग्य की परछाईं में जवान होते हैं, अपराधियों की तरह जीवन व्यतीत करते हैं और अपमान सहित मर जाते हैं।

रंग-बिरंगी गुलामी—जो वस्तुओं को उनका असली मूल्य चुकाये बिना मोल लेती है और उन्हें उन नामों से पुकारती है, जो उनके असली नामों से भिन्न ही नहीं, वरन् सर्वथा विरुद्ध हैं। वह धूर्तता को बुद्धिमत्ता, वाद या बकवास को आध्यात्मिकता, दुर्बलता को नम्रता, कायरता को निस्वार्थ और निष्पक्षता का रूप देती है ?

प्रशंसनीय गुलामी—जो निर्बलों की जबानों को भय और आतंक के प्रभाव से बुलवाती है, जिससे वे ऐसी-ऐसी बातें कहते हैं, जिन्हें वे नहीं समझते। जिससे वह इन भावों को प्रकट करते हैं, जो उनके मन में नहीं होते और विवशता के हाथों में कपड़े के इस थान के समान हो जाते हैं, जिसे जब चाहो लपेट लो और जब चाहो खोल दो।

कुबड़ी गुलामी—जो एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के नियमों और कानूनों की तरफ ले जाती है।

स्थायी गुलामी—जो राजकुमारों के सिरों पर शासन का राजमुकुट रखती है।

काली गुलामी—जो अपराधियों की निर्दोष सन्तानों को तिरस्कार और घृणा के नामों से पुकारती है।

और स्वयं गुलामी फल है उस गुलामी का जिसे "स्थायित्व की शक्ति" कहते हैं।

जब मैं राष्ट्रों के कारनामों से थक गया और मेरी दृष्टि पीढ़ियों, वर्गों और कबीलों को देखते-देखते उकता गई, तो मैं परछाइयों की तलहटी में अकेला जा बैठा। जहाँ बीते हुए युग की परछाइयाँ लुप्त हो गईं और आने वाले युग की आत्माएं घात में बैठी थीं। वहाँ मैंने देखा कि एक कोमल परछाईं सूर्य पर दृष्टि जमाए अकेली चली जा रही है। मैंने उससे पूछा, "तू कौन है और तेरा क्या नाम है?"

उत्तर मिला, "आज़ादी।"

मैंने फिर प्रश्न किया, "और तेरे बेटे कहाँ हैं?"

"एक सूली पर चढ़ा दिया गया, दूसरा दीवाना होकर मर गया और तीसरा अभी पैदा नहीं हुआ।" उसने कहा।

यह कहकर वह कुहरे में ओझल हो गई।

पर्दे के पीछे

जब आधी रात हुई तो राहेल ने आँखें खोलीं। थोड़ी देर छत की ओर टिकटिकी लगा कर देखा और आँखें बन्द कर लीं। फिर उसने एक गहरा पर टूटता हुआ ठण्डा साँस भरा और एक ऐसे स्वर में कहा, जिससे मृत्यु का अत्यन्त दुःख प्रकट होता हो कि जीवन यात्रा जादू की तलहटी के किनारे तक पहुँच गई है। हमें उसे देखने जाना चाहिए।

यह सुनकर पादरी उसके पास आया और उसका हाथ अपने हाथ में लिया। वह हाथ मुर्दे का हाथ था, बर्फ के समान शीतल। उसके बाद उसने अपना हाथ उसकी छाती पर रखा। मुर्दे के हृदय की गति संसार के समान मौन थी।

पादरी ने अपना सिर झुकाया और उसके होंठ हिले, मानों वह अपनी जबान से एक ऐसा पवित्र वचन कहना चाहता था, जिसे रात की परछाइयाँ उन सुनसान तलहटियों में दुहराएँ।

अब उसने अपनी दोनों कलाइयों से छाती पर क्रास* का चिन्ह बनाया और उस व्यक्ति को जो उसी कमरे के एक अन्धेरे कोने में बैठा था, प्रेम और कृपापूर्ण स्वर में सम्बोधित करके कहा, "खेद है कि तुम्हारी धर्मपत्नी परमात्मा को प्यारी हुई। उठो, और मेरे साथ उसकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करो।"

उस आदमी ने अपना सिर उठाया। उसका मुख शोक की अधिकता के कारण बदल गया था और उसकी आँखें दुःख की अधिकता के कारण निकली पड़ रही थीं। वह चुपके से उठा और पादरी के पास बैठकर मरने वाली के पापों के लिए क्षमा-याचना करने लगा। उसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे। वह बार-बार अपने वक्ष और मुख पर क्रास का निशान बना रहा था।

पादरी उठा और उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहने लगा, "अब तुम दूसरे कमरे में जाओ। तुम्हें नींद और विश्राम की बहुत आवश्यकता है।"

वह कुछ कहे सुने बिना उठा और सामने वाले कमरे में जाकर एक छोटे से सोफे पर गिर गया। दुःख, जागरण और प्रतीक्षा ने उसके शरीर को बेजान-सा कर दिया था।

अभी थोड़ी देर न हुई थी कि नींद ने उसकी आँखों पर विजय प्राप्त कर ली। वह इस प्रकार सो गया, जिस तरह एक दूध पीता बच्चा अपनी माँ की गोद में सो जाता है।

---

*ईसाइयों का धार्मिक चिन्ह।

पर पादरी अभी तक उसी कमरे के बीच में दुःख-दर्द की मूर्त्ति बना खड़ा था। वह एक-साथ अश्रुपूर्ण आंखों से राहेल की लाश को देख रहा था और उसके पति को भी, जो सामने वाले कमरे में बेसुध पड़ा सो रहा था।

एक घंटा बीत गया। यह एक घंटा पहाड़-सा लम्बा और मृत्यु से अधिक भयानक था, पर पादरी सोते हुए पुरुष और मृतक स्त्री के बीच वैसे ही खड़ा था मानो पुरुष कुंभकर्णी नींद सो रहा हो और बसंत ऋतु के आने के स्वप्न देख रहा था। स्त्री भूतकाल के साथ सो रही थी और अनंत के स्वप्न देख रही थी।

अब पादरी मृतक की चारपाई के समीप आया और घुटनों के बल इस तरह बैठ गया जैसे पुजारी बलिवेदी के सामने बैठते हैं। उसने मुर्दे का ठंडा हाथ उठाकर अपने गर्म होठों से लगा लिया और उसके मुँह को देखने लगा, जिसपर मृत्यु की काली चादर पड़ी थी। समुद्र से गम्भीर और मानव इच्छाओं के समान कांपते हुए स्वर में उसने कहा—

"राहेल! मेरी धर्मपुत्री राहेल! मेरी बात सुन। मैं इस समय बात करने में समर्थ हूँ। मृत्यु ने मेरे होंठ खोल दिये हैं, जिससे मैं तुझ पर वह रहस्य प्रकट कर दूँ जो रहस्य स्वयं मृत्यु से अधिक गूढ़ है। शोक ने मेरी जिह्वा के ताले खोल दिये हैं, जिससे मैं तुझ पर वह भेद खोल दूँ जो स्वयं शोक से अधिक कठोर है।

"भूमि और असीम आकाश के बीच में उड़ने वाली हे आत्मा, मेरी आत्मा की पुकार सुन। उस नवयुवक की पुकार सुन, जो खेत से वापिस आते हुए जब तुझे देखता था तो तेरे सौन्दर्य से प्रभावित होकर वृक्षों में छिप जाता था। उस पादरी की पुकार सुन जो मनुष्य का पुराना सेवक है। परमात्मा की सौगन्ध, अब वह तुझे बिना किसी भय के बुला रहा है क्योंकि तू परमात्मा के समीप पहुँच गई है।"

फुसफुसाहट के रूप में ये शब्द कहकर वह मृत देह पर झुक गया और उसके मस्तक, आँखों और गर्दन को चूमने लगा। वे पवित्र चुम्बन जो उसकी आत्मा के उन सब रहस्यों का पर्दा हटा रहे थे जिनका सम्बन्ध प्रेम और शोक से था।

अचानक वह पीछे हटा और पतझड़ के पत्ते के समान भूमि पर इस तरह गिर पड़ा मानो राहेल के हिम से धवल मुख के स्पर्श ने लज्जा के भावों को उसके अंतर में जागृत कर दिया हो।

वह उठा और दोनों हाथों से अपने मुख को छिपाकर घुटनों के बल बैठ गया। मन ही मन में उसने कहना प्रारम्भ किया, "हे परमात्मा! मेरे पाप क्षमा कर दे। मेरे पूज्य परमात्मा! मेरी दुर्बलता की उपेक्षा कर दे। मैं अन्त समय तक दृढ़ न रह सका और संयम का पल्ला मेरे हाथ से छूट गया। वह रहस्य जो सात वर्ष तक जीवन ने मेरी दृष्टि से गुप्त रखा, मृत्यु ने एक क्षण में मुझ पर प्रकट कर दिया। हे प्रभु! मेरा यह पाप क्षमा कर दो। मेरे पूज्य! मेरी दुर्बलता की उपेक्षा कर दो।"

केरो (मिस्र) सन् १९१४

चन्द्रमा उदय हुआ और उसने अपना रजत-सा श्वेत आवरण नगर पर डाल दिया। उस समय बादशाह अपने महल की खिड़की में बैठा बाहर खिली सुन्दर चांदनी को देख रहा था। वह उन जातियों के आदि-अंत पर विचार कर रहा था जो एक दूसरे के पश्चात् नील नदी के किनारे से गुजरीं; उन बादशाहों और विजेताओं के कार्यों पर सोच-विचार कर रहा था जो मिस्र के बादशाह अबुलहौल के आतंक और तेज के सामने ठिठककर रह गये वह अपनी कल्पना में इन जातियों और वंशों की लड़ाई का तमाशा देख रहा था, जिनका नामो-निशान मिस्र से मिट गया।

जब उसकी कल्पना अधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली, तो उसने पास बैठे अपने दरबारी की तरफ ध्यान दिया और कहा, "आज रात हमारी रुचि कविता और गीत सुनने को है, कुछ सुनाओ।"

दरबारी कवि ने आज्ञापालन के भाव से सिर झुकाया और

प्राचीन काल के किसी कवि का गीत गाना आरम्भ किया।

"किसी नवीन कवि की रचना", बादशाह ने उसे टोकते हुए कहा।

दरबारी ने दुबारा सिर झुकाया और एक दूसरे कवि की रचना सुनाने लगा।

"अत्यन्त आधुनिक काल का, अत्यन्त आधुनिक काल का।" बादशाह ने फिर टोका।

दरबारी ने तीसरी बार फिर सिर झुकाया और एक और आधुनिक कवि के शेर सुनाने लगा।

"किसी हमारे समकालीन कवि की कविता सुनाओ," बादशाह ने आज्ञा दी।

दरबारी कवि ने अपने माथे पर हाथ फेरा मानो वर्तमान काल के कवियों की सब रचनाओं को अपनी स्मृति में ताजा कर रहा है। अनायास उसकी आंखों में चमक पैदा हुई, चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई और वह वर्तमान काल के एक बहुत बड़े कवि के छंद गा-गाकर पढ़ने लगा। इनमें कल्पना की गहराई, संगीत का जादू, अर्थों की सूक्ष्मता और अछूतापन और वह कोमल और नई-नई कल्पनाएँ थीं जो मस्तिष्क में समाकर उसे प्रकाशमान् कर देती हैं और हृदय के इर्द-गिर्द घेरा बनाकर उसे भावों की गर्मी से पिघला देती हैं।

बादशाह ने दरबारी कवि को ध्यान से देखा। छन्दों के अर्थ और सुगायन ने उसे बेकाबू कर दिया था और वह एक ऐसी

गुप्त शक्ति का अस्तित्व अनुभव कर रहा था जो उसे एक और ही लोक, दूरस्थ लोक की तरफ खींच रही थी। उसने पूछा, "ये छंद किसके हैं ?"

"बलवकी कवि के," दरबारी ने उत्तर दिया।

"बलयकी कवि ?"

'बलबकी कवि' दो अद्भुत शब्द थे जो बादशाह के कानों में गूँजे और उसके मस्तिष्क में उन इच्छाओं की परछाइयां छोड़ गये, जो अपनी स्पष्टता और अपनी सूक्ष्मता के कारण शानदार थीं।

बलवकी कवि, एक ऐसा नया पर पुराना नाम था जिसने बादशाह के मस्तिष्क में भूले दिनों के संस्कार ताजा कर दिये और उसके हृदय की गहराइयों में सोई हुई स्मृति की रेखाओं को प्रकट कर दिया। और उन रेखाओं में जो बादलों के किनारों के समान थे, उस नवयुवक का चित्र बादशाह की आंखों के सामने प्रकट होगया जो सितार को अपने गले से लगाये मुर्दा पड़ा था और जिसके चारों तरफ सैनिक, पुरोहित और दूसरे राज्याधिकारी खड़े थे।

यह दृश्य बादशाह की आंखों के सामने से ऐसे छिप गया जैसे सूर्योदय के समय स्वप्न विलुप्त हो जाते हैं। वह अपने स्थान से उठा और अपने दोनों हाथ अपनी छाती पर रखकर टहलने लगा। वह कुरान का वह वाक्य दुहरा रहा था, जिसका अर्थ निम्न है :—

"तुम मुर्दा थे, उसने तुम्हें जीवित किया। अब वह तुम्हें मारेगा, फिर जिलाएगा और तुम अंत में उसी की ओर लौट जाओगे।"

इसके बाद बादशाह ने दरबारी की ओर घूमकर कहा, "हमारे देश में बलबकी कवि का होना हमारी प्रसन्नता का कारण है। हम उसके पास जाकर उसका आदर-मान करेंगे।"

एक मिनट के पश्चात् धंसी हुई आवाज़ में उसने फिर कहा, "कवि एक अनोखा पक्षी है, जो अपने पवित्र देश की हरियालियों से उड़कर चहचहाता हुआ इस संसार में आता है। इसलिए यदि हमने इसका आदर-मान न किया तो वह अपने पंख खोलेगा और फिर अपने देश को चला जाएगा।"

रात बीत गई। आकाश ने अपने तारों टंके वस्त्र उतार दिये और प्रभात की किरणों से बने वस्त्र पहन लिए, पर बादशाह का मस्तिष्क अब भी जीवन के चमत्कारों और रहस्यों में चक्कर काट रहा था।

क़ैदी बादशाह

अपना मन भारी न कर हे क़ैदी बादशाह ! तेरा क़ैदखाना तेरे लिए इतना घातक नहीं है, जितना मेरा शरीर मेरे लिए।

सन्तोष कर और तसल्ली से बैठ जा। हे दर्प और तेज के पुंज ! कष्टों और दुखों से घबराना गीदड़ का काम है। परन्तु क़ैदी बादशाहों को क़ैदखानों और उनके अधिकारियों की हँसी उड़ाने के सिवा दूसरी कोई वस्तु शोभा नहीं देती।

संकल्प और साहस की मूर्ति ! अपना शोक हल्का कर— और मेरी तरफ़ देख, कि जिस प्रकार तू फौलादी सींखचे में बन्द है, उसी प्रकार मैं भी जीवन के गुलामों से घिरा हुआ हूँ। हम दोनों में कोई इसके अतिरिक्त अन्तर नहीं है, कि मेरी आत्मा उस बेचैनी के स्वप्न के समीप है, जो तेरे पास आता डरता है।

हम दोनों अपने-अपने देश से निकाले हुए हैं, अपने मित्रों और सुहृदों से दूर हैं ? इसी लिए व्याकुल हो और मेरे समान जमाने के कष्टों पर सन्तोष करके उन साहस हीन मनुष्यों के साथ

हँसी-मज़ाक कर, जो हम पर अपने व्यक्तिगत साहसों से नहीं, वरन् अपनी बहु संख्या के आधार पर प्रभाव जमाते हैं।

इस दहाड़ने और विलाप से क्या लाभ जबकि लोग बहरे हैं और सुनते नहीं ?

तुझ से पहले मैं भी बहुत कुछ चीख़-पुकार कर चुका हूँ, अंधकार की परछाइयों के सिवा किसी ने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। तेरी तरह मैंने भी भिन्न-भिन्न मानवी समुदायों की छान-बीन की है, किन्तु उन कायरों और निर्बलों को छोड़ मुझे कोई न मिला, जो बेड़ियों में जकड़े हुए क़ैदियों के सामने उपहास के रूप में अपनी झूठी वीरता का प्रदर्शन करते हैं और पिंजरे में बन्द बन्दियों से निर्दयता के साथ छेड़-छाड़ करते हैं।

देख, ओ बादशाह ! इन लोगों की तरफ़ देख जो तेरे पिंजरे के चारों ओर खड़े हैं। देख, इन चेहरों को ध्यान से देख ! तुझे इन में वे सब बातें दिखाई देंगी जो तू गुमनाम मरुस्थलों में अपने अत्यन्त समीप के दासों और सेवकों के चेहरों पर देखता था। इनमें बहुत से अपनी कायरता के कारण खरगोश, अपनी धूर्तता के कारण लोमड़ी और बहुत से अपनी कृपणता के कारण सांप बने हैं। किन्तु इनमें एक भी ऐसा नहीं है, जिसमें खरगोश की शान्तिप्रियता, लोमड़ी की बुद्धिमत्ता और सांप की चतुरता हो।

देख इस व्यक्ति को देख ! जो अपने मैलेपन के कारण सूअर से अधिक और दर्जा नहीं रखता, किन्तु इसका मांस भी इस योग्य नहीं कि कोई उसे अपना भोजन बनाए।

अब उस आदमी को देख! जो अपने रूखेपन के कारण भैंस के समान है, किन्तु उसकी खाल किसी काम की नहीं।

अब उस आदमी को देख, जो अपनी मूर्खता के कारण गधा मालूम होता है, किन्तु दो टांगों से चलता है।

अब उस आदमी को भी देख! जो अपशकुन के कारण कौआ है, किन्तु अपनी काँय-काँय को पूजा स्थानों में बेचता है।

और अब उस आदमी को देखो! जो अभिमान और नखरे में मोर के समान है, किन्तु उसके पंख मांगे हुए हैं।

हे कोप दृष्टि युक्त बादशाह! इन महलों और विशालयों को देख! ये छोटे-छोटे घोंसले हैं, जिनमें मनुष्य रहता है और उन स्वर्णमयी छतों पर गर्व करता है, जो उसे तारों के दृश्यों से वंचित रखती हैं, उन दीवारों के पक्केपन को देखकर प्रसन्न होता है, जो सूर्य की किरणों को उस तक नहीं पहुँचने देतीं।

ये अन्धेरे गड्ढे हैं, जिनकी छाया में जवानी के फूल कुम्हला जाते हैं, जिनके कोनों में प्रेम के दहकते हुए अंगारे राख हो जाते हैं और जिनमें कल्पनाओं के सब चित्र धुँए के बादलों से बदल जाते हैं।

ये अनोखे ढंग के तहखाने हैं, जिनमें बच्चे की पलंगड़ी मरने वाले की शय्या के साथ होती है और नववधू की सेज मुर्दों के समीप।

देख, ऐ वैभवशाली क़ैदी! इन चौड़े-चकले बाजारों और इन तंग अन्धेरी गलियों को देख! ये तलहटियाँ हैं जिनके मार्ग

दुगम हैं। जिनके गड्ढों में चोर ताक लगाये बैठे हैं और जिन के किनारों पर विद्रोही छिपे हुए हैं।

यह इच्छाओं के युद्धक्षेत्र हैं। यह इच्छाओं के ऐसे युद्धक्षेत्र हैं, जिनमें आत्माएं बिना तलवार के लड़ती हैं और बिना दांतों के एक-दूसरे को काटती हुई उतरती हैं।

या यूँ कहो, कि ये भयंकर जंगल हैं, जिनमें मुसमुसी आकृतिधारी, सुगन्धित दुमों वाले और चमकदार सींगों वाले जीव रहते हैं, जो कानून इस लिए जारी नहीं करते, कि जीवन के गुणों की रक्षा करें, बल्कि इस लिए जारी करते हैं कि धूर्तता और छल-कपट को स्थिरता और स्थायित्व प्राप्त हो। और जिन की व्यावहारिक नियमावली श्रेष्ठ और जीवधारी वस्तुओं की अमरता के लिए नहीं, वरन झूठ और दुर्चलन की अमरता की ज़मानत देने वाली होती है। यह रहे इनके बादशाह, सो वे तेरी तरह शेर नहीं हैं, बल्कि सृष्टि की अद्भुत और विचित्र रचनाएं हैं, जिनकी चोंचें गिद्धों जैसी और जिनके चंगुल बिज्जुओं के से और जिह्वाएं सांपों की सी और टर-टर मेंढकों की सी होती है।

मेरे प्राण तुझ पर न्योछावर! हे क़ैदी बादशाह! मेरी वार्त्तालाप बहुत लम्बी हो गई है और मैंने तेरा बहुत सा समय नष्ट कर दिया है, पर अपने पद से गिरा हुआ हृदय तख़्त से उतारे हुए बादशाहों से ही तसल्ली प्राप्त करता है और शोक-ग्रस्त तथा बन्दी आत्मा दूसरे दुखी और कैदियों से ही हिलमिल सकता है।

इस लिए इस नवयुवक को क्षमा कर, जो अपनी भूख को भोजन के स्थान पर बातों से सन्तुष्ट कर रहा है और प्यास को पानी के स्थान पर कल्पना से।

ऐ विपत्तिग्रस्त महानुभाव विदा। यदि हम इस संसार में दुबारा न मिल सकें तो परछाइयों की दुनिया में मिलेंगे जहाँ बादशाहों की आत्माएं कवियों की आत्माओं से मिलती हैं।

बड़ा दिन

आज और प्रतिवर्ष आज के दिन मानवता अपनी गहरी नींद से जागकर जातियों की परछाइयां के सामने खड़ी होती है। वह प्रभु ईसा मसीह को सूली पर लटका हुआ देखने के लिए पर्वत को अपनी आंसूभरी आंखों का केन्द्र बिन्दु बना लेती हैं और जब सूर्य अस्त होने लगता है तो लौटती है। उस समय वह इन मूर्तियों के सामने साष्टांग प्रणाम करती है जो पहाड़ की तलहटी या चोटियों पर खड़ी हैं।

आज एक विचार ईसाइयों को संसार के कोने-कोने से खींचकर यरुसलम में पहुँचा देता है जहाँ वे कतार बांधकर खड़े होते हैं और उस मूर्ति को देख-देखकर अपनी छाती पीटते हैं, जो सिर पर कांटों का मुकुट रखे और आकाश की ओर हाथ फैलाये मौत के पर्दे से जीवन की गहराइयां को देख रहा है। किन्तु अभी दिन के दृश्यों पर रात अपने काले पर्दे डालने भी नहीं पाती कि वे लौटते हैं, और अज्ञान तथा बन्धुपन के लिहाफ में भूल की छाया में सो जाते हैं।

प्रतिवर्ष आज के दिन दर्शनशास्त्री अपनी तंग और अंधेरी गुफाओं से, विचारक अपने मादकताहीन कमरों से और कवि अपनी काल्पनिक घाटियों को छोड़कर एक ऊँचे पर्वत पर चुपचाप प्रभावित हुए जा खड़े होते हैं। वह इस महापुरुष के उपदेश को ध्यान से सुनते हैं जो अपने मारने वालों के बारे में कहता है, "हे परम पिता! इन्हें क्षमा कर दे क्योंकि यह नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं?"

किन्तु मौन प्रकाश की आवाजों को लपेटने भी नहीं पाता कि यह सब के सब अपनी आत्माओं को प्राचीन पुस्तकों के पृष्ठों में तल्लीन कर देते हैं।

जीवन के सांसारिक सुखों, बढ़िया आभूषणों और वस्त्रों पर जान देने वाली स्त्रियाँ आज अपने घरों से उस दुःखी स्त्री को देखने के लिए निकलती हैं, जो सूली के सामने इस तरह खड़ी है, जैसे शीत ऋतु की आंधियों के सामने नर्म और कोमल पौधा। वह उसकी गहरी आहों और करुणोत्पादक सुबकियों को सुनने के लिए उसके पास जाती हैं।

आधुनिक सभ्यता के प्रवाह के साथ बहने वाले नवयुवक और नवयुवतियां जिन्हें इसका सर्वथा ज्ञान नहीं कि वे किस तरफ बह रहे हैं, आज के दिन कुछ समय के लिए ठहर जाते हैं। नवयुवतियाँ पूज्या मरियम को मुड़कर देखती हैं, जो भूमि और आकाश के बीच खड़े हुए महापुरुष का खून अपने आंसुओं से धोती हैं। परन्तु जब इनकी दृष्टि इस दृश्य को देखते-देखते उकता जाती है तो हंसते हुए तेजी से भाग जाती हैं।

प्रतिवर्ष आज के दिन मानवता बसंत ऋतु के साथ जागती है और मसीह के दुःखों पर रोते हुए उठ खड़ी होती है। इसके बाद अपनी आंखें बन्द कर लेती है और फिर गहरी नींद सो जाती है। किन्तु बसन्त जागती रहती है और मधुर मुस्कान के साथ उस ग्रीष्म ऋतु से बदल जाती है, जिसके वस्त्र सुनहरी और सुगंधित पुष्प-पत्रों के बने होते हैं।

मानवता वह रुदन करने वाली है, जो महापुरुषों पर शोक प्रकट करने और रोने पीटने से प्रसन्न होती है, किन्तु यदि उसमें समझ होती तो उनकी महानता और बड़ाई से प्रसन्न होती।

मानवता एक बच्चा है जो मरे हुए पत्ती के पास खड़ा होकर चीख-पुकार करता है। मानवता इस भयंकर आँधी से कांप उठती है जो अपने झोंकों से सूखी टहनियों को तोड़ डालती है और कठोरता से उन सब वस्तुओं को उठा ले जाती है जो बंधी हुई नहीं हैं।

मानवता ईसामसीह को भिक्षुओं के समान पैदा होते, दरिद्रियों के समान जीवन विताते, दुर्बलों की तरह कष्ट उठाते और अपराधियों के समान सूली पर चढ़ते देखती है। वह रोती है, वावेला मचाती है, शोक और रुदन-विलाप करती है। और यह सब कुछ मसीह के आदर-सम्मान के लिए होता है।

शताब्दियों से मनुष्य मसीह की आकृति में दुर्बलता की पूजा कर रहा है, यद्यपि मसीह शक्तिहीन न था। वह शक्तिमान्

था और शक्तिमान् है। परन्तु वास्तविक शक्ति के आशय से संसार अपरिचित ही है।

मसीह ने तो भय और दरिद्रता का जीवन व्यतीत किया और न वह दर्द और शिकायत की अवस्था में मरा, वरन् उसने क्रांतिकारियों के समान जीवन व्यतीत किया। वह विद्रोहियों की तरह सूली पर चढ़ा और उसने साहसी आदमियों के समान ऐसी वीरता से मृत्यु का स्वागत किया, जिससे उसको मारने और कष्ट देने वाले स्वयं डर गये।

मसीह टूटे पंख वाला पक्षी नहीं, जोशभरी आँधी था, जिसने अपने तीक्ष्ण और भीषण झोंकों से सभी मुड़े-तुड़े पंखों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

मसीह दुःख को जीवन का रहस्य बताने के लिए, जीवन को सत्य तथा स्वाधीनता का रहस्य बताने के लिए आकाश से आया था।

मसीह न तो अपने शत्रुओं और अत्याचारियों से भयभीत था और न अपने मारने वालों से। वह एक खुला हुआ स्वातंत्र्य-प्रिय व्यक्ति था, जिसने अत्याचार तथा आपत्तियों का साहस से सामना किया। जहाँ कहीं गंदा फोड़ा देखा नश्तर लगाया, जहाँ कहीं पापाचार को पाया, उसे मृत्यु के घाट उतार दिया।

मसीह प्रकाश के उस उच्च क्षेत्र से इस लिए नहीं उतरा था कि मकानों को गिराकर उनकी ईंटों से मठ तथा पूजा-स्थान बनाए। अथवा शक्तिमानों को लुभा कर भविष्यवाणी और

साधुपन की ओर ले जाए, वरन् वह संसार में एक नवीन और बलशाली जीवन फूंकने उतरा था, जो मृत खोपड़ियों के ढेर पर रखे हुए राज्यों का संहार करता है, क़ब्रों पर बने हुए वैभवशाली महलों को गिराता है और दरिद्री तथा दुर्बल शरीरों पर खड़ी हुई मूर्तियों को तोड़-फोड़ डालता है।

ईसा लोगों को इस बात की शिक्षा देने नहीं आया था, कि वह छोटी-छोटी झोंपड़ियों और अंधेरे मकानों के साथ गगनचुम्बी पूजास्थलों और महान् गिरजाघरों की नींव रखें, वरन् इस लिए आया था कि मनुष्य के हृदय को गिरजाघर, उसकी आत्मा को बलि-वेदी और उसकी बुद्धि को पादरी बनाए।

यह हैं वे महान् कार्य जो मसीह के व्यक्तित्व से प्रकाश में आए। और यह है वह शिक्षा जिसके कारण उसे पकड़कर सूली पर चढ़ा दिया गया। यदि मनुष्य इन गूढ़ बातों को समझता, तो वह आज के दिन आनन्द मनाता और विजय के गीत गाता।

और हे महान् और प्रतिष्ठावान् बलिदान देने वाले महापुरुष! जो पर्वत की ऊँचाई से भिन्न-भिन्न पीढ़ियों को देख रहा है, जातियों की चीख-पुकार सुन रहा है और अनन्त के स्वप्नों की वास्तविकता को समझ रहा है। तू खून में लिपटी हुई पर सहस्रों साम्राज्यों की सहस्रों गद्दियों पर सहस्रों बादशाहों से अधिक धाक तथा बड़ाई रखता है और मृत्यु के बीच सहस्रों रणभूमियों की सहस्रों सेनाओं के सेनापतियों से अधिक वीर और महान् है।

तू अपने दुःख में भी फूल खिली वसन्त ऋतु से अधिक सुखी है, तेरा हृदय दर्द की तीव्रता के गुण से पूर्ण देवताओं के हृदय से अधिक शान्तिपूर्ण है। तू जल्लादों में घिरा होते हुए भी सूर्य की किरणों से अधिक स्वाधीन है।

काँटों का जो ताज तेरे सिर पर रखा है, सम्राटों के ताज से अधिक सुन्दर तथा मूल्यवान् है। यह कीलें जो तेरी हथेलियों में ठुकी हुई हैं, बृहस्पति नक्षत्र से अधिक मान और स्तर रखती हैं। रक्त की जो बूंदें तेरे चरणों पर जमी हुई हैं, मोतियों की मालाओं से अधिक चमकदार हैं।

इन दुर्बलों से पूछताछ न कर, जो तुझ पर केवल इस लिए रोते हैं, कि अपनी आत्माओं पर आँसू बहाना नहीं जानते। परमात्मा के लिए उन्हें क्षमा कर, क्योंकि उन्हें ज्ञात नहीं कि तू मृत्यु के लिए मृत्यु से लड़ा और मुर्दों को जीवन दान दिया।

रंगे हुए गीदड़

सुलेमान आफ़ंदी

पैंतीस वर्षीय जवान —अच्छे वस्त्रों और अच्छे कद वाला, चढ़ी हुई मूँछें, पाँव में चमकदार जूते और रेशमी जुराबें, मुँह में कीमती सिगरेट और हाथ में एक सुन्दर कोमल छड़ी, जिस की सुनहरी मूठ बढ़िया नगों से जड़ी हुई है—बड़े-बड़े होटलों में खाना खाता है। जिनमें शहर के बड़े-बड़े और प्रसिद्ध आदमी आते हैं। वह उस शानदार गाड़ी में सैर-सपाटे के लिए प्रसिद्ध स्थानों की सैर को जाता है, जिसे दो अत्यन्त सुन्दर घोड़े खींचते हैं।

आफ़ंदी को अपने बाप से एक कौड़ी भी उत्तराधिकार में नहीं मिली। मिलती भी कहाँ से? उसका बाप एक गरीब और दरिद्री आदमी था, जिसने न कभी व्यापार किया और न धन कमाया। वह अत्यन्त सुस्त और लालची था। काम से घृणा करता था और उसे अपने स्तर से नीचे की चीज समझता था। हमने एक बार स्वयं उसके मुख से सुना था :

"मेरा शरीर और मेरा स्वभाव काम से मेल नहीं खाते। काम उन लोगों के लिए पैदा किया गया है, जिन का स्वभाव मस्ती रहित और शरीर खुरदरे हैं।'

तो फिर सुलेमान आफंदी ने इतनी दौलत कहाँ से प्राप्त की? वह कौन-सा जादूगर था, जिसने मिट्टी को सोने-चाँदी में बदल दिया?

यह रंगे हुए गीदड़ों के अनगिनत रहस्यों में से एक रहस्य है, जो हमें बताया गया है और जिसे अब हम तुम्हें बतलाते हैं।

पाँच वर्ष हुए कि सुलेमान आफ़ंदी ने एक बड़े प्रसिद्ध व्यापारी की विधवा से विवाह कर लिया। वह व्यापारी अपने यत्न, धैर्य और ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध था। इस समय उस विधवा की आयु पैंतालीस वर्ष है, पर इसकी प्रबल इच्छाओं की आयु सोलह वर्ष। वह यद्यपि अपने बालों में तेल और आँखों में सुरमा लगाती है और अपने चेहरे का सौन्दर्य बढ़ाने वाली चीजों से चमकाती रहती है, पर आफ़ंदी आधी रात के पहले कभी घर नहीं लौटता। शायद ही कोई घड़ी होती हो, जब वह अपने पति की तेज नजरों और कटुवचनों से बची रहती हो। इसका कारण यह है कि आफ़ंदी ने उसकी तरफ़ से आँखें बन्द करली हैं और वह उस धन को दोनों हाथों से लुटा रहा है, जो इस स्त्री के पहले पति ने खून-पसीना एक करके जोड़ा था।

× × × ×

साहित्यकार आफ़ंदी

सताइस वर्ष का नवयुवक—लम्बी नाक, छोटी-छोटी आँखें, गंदा चेहरा, हाथ स्याही से भरे हुए, नाखून मैल से अँटे हुए, तन पर फटे-पुराने कपड़े, जिन पर जगह-जगह तेल, चिकनाई और कॉफी के धब्बे !

इस गंदी हालत का कारण साहित्यकार आफ़ंदी की दरिद्रता नहीं, असावधानी और लापरवाही है। इसके अतिरिक्त वह कार्य-संलग्नता भी है। बड़ी-बड़ी समस्याओं, बड़े-बड़े कामों और धर्म सम्बन्धी विवादग्रस्त विषयों की खोज में उसका मस्तिष्क घिरा हुआ है।

हमने स्वयं उसे दूसरों को कहते सुना है :—

"मन दो चीज़ों की तरफ़ ध्यान नहीं दे सकता।" अर्थात् साहित्यकार एक समय में लिखने का काम और सफाई दोनों का ध्यान नहीं रख सकता।

वह बहुत बोलता है और हर समय बोलता रहता है। उसके लिए बोलना संसार की हर चीज़ से बड़ा है। हमें मालूम है कि उसने बेरूत के किसी विद्यालय में दो साल तक एक प्रसिद्ध शिक्षक से अद्भुत पाठ लिया। हम यह भी जानते हैं कि उसने बहुत-सी कवितायें रची हैं, लेख लिखे हैं और पुस्तकें लिखी हैं। ये पुस्तकें बहुत से कारणों से अभी अप्रकाशित पड़ी हैं, जिनमें सब से बड़ा कारण अरबी साहित्य की अवनति और पढ़ने वालों की कमी है।

कुछ दिनों से यह साहित्यकार प्राचीन और आधुनिक तत्व दर्शन की बारीकियों पर अपना ध्यान दे रहा है। वह एक ही समय में सुकरात का भी भक्त है और नीत्शे का भी। वह आगस्टस के प्रवचन भी इसी रुचि और शौक से पढ़ता है, जैसे साथ वाल्टेयर, जानजेक और रूसो की पुस्तकें पढ़ता है।

मैं पहली बार उससे एक विवाह में मिला था। लोग उसके चारों तरफ़ राग और शराब में मस्त थे और वह अपने प्रसिद्ध सुन्दर ढंग से शेक्सपीयर के हैमलट नामी नाटक की समालोचना कर रहा था।

दूसरी बार मैंने उसे एक रईस की शव यात्रा में देखा। लोग उसके साथ-साथ शोकपूर्ण चेहरे बनाये और सिर झुकाये धीरे-धीरे चल रहे थे और वह अपनी विशेष भाषा में प्राचीन कवियों की कविताओं पर विवाद कर रहा था।

ऐसी अवस्था में साहित्यकार आफ़ंदी क्यों जीवित है? पुरानी पुस्तकों और फटे-पुराने पृष्ठों में अपना समय दिन-रात नष्ट करने में उसका क्या उद्देश्य है? वह गधा क्यों नहीं मोल ले लेता और उसे किराये पर चलाकर किराया खाने वाले धनियों की श्रेणी में शामिल क्यों नहीं हो जाता?

यह रंगे हुए गीदड़ों के अनगिनत रहस्यों में से एक रहस्य है, जो एक बड़े आदमी ने हमें बताया और जिसे अब हम तुम्हें बताते हैं।

तीन वर्ष हुए कि साहित्यकार आफ़ंदी ने एक बड़े पादरी की

शान में कविता लिखी और एक दूसरे बड़े आदमी के घर में उसके सामने उसे पढ़ा। कविता समाप्त होने पर पादरी ने उसे बुलाया और उसके कंधे पर हाथ रखकर मुस्कराते हुए कहा :

"बेटा! परमात्मा तुझे चिरंजीवी और सुखी बनाये। तुम बड़े सूक्ष्मदर्शी कवि और प्रकृतिज्ञाता साहित्यकार हो। मैं तुम जैसे प्रतिभाशाली कवियों पर अभिमान करता हूँ और मुझे विश्वास है कि तुम एक दिन पूर्व के महापुरुषों में गिने जाओगे।"

उस दिन से लेकर आज तक साहित्यकार आफंदी के बाप, चाचा और मामा सभी उसकी प्रशंसा करते हैं। वे गर्व के साथ इसका जिक्र करते हैं और कहते हैं, "क्या उस बड़े पादरी ने नहीं कहा था कि वह एक दिन पूर्व के महापुरुषों में गिना जाएगा?"

× × ×

फ़रीद दबीस

चालीस वर्ष की अधेड़ आयु का मनुष्य, लम्बा कद, छोटा सिर, चौड़ा मुँह, छोटा माथा, अकड़ी हुई गर्दन के साथ छाती निकाल कर धीरे-धीरे चलता है। उसकी चाल ऊँट की चाल से मिलती जुलती है, जिसकी पीठ पर मिट्टी के बर्तन रखे हों। जब वह ऊँची और प्रतिष्ठापूर्ण आवाज में बात करता है, तो अनजान आदमी यह समझता है कि राज्य का कोई बड़ा कर्मचारी जनता के कामों को सुधारने और प्रजा के कष्टों को दूर करने में लगा हुआ है।

फ़रीद को इसके बिना कोई काम नहीं कि सभा-सोसायटी

में विशेष स्थान पर बैठे और अपने वंश के बड़े आदमियों के कारनामे गिनवाये या अपने उच्च कुल के गुण बखाने। वह नेपोलियन आदि जैसे वीरों और महापुरुषों के हाल बहुत रुचि के साथ सुनाता है। सुन्दर हथियार इकट्ठा करने का उसे खास शौक है और वह उसके घर की दीवारों पर बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से टंगे हुए हैं, पर वह उन्हें इस्तेमाल करना नहीं जानता।

उसका कहना है, "परमात्मा ने मनुष्यों को दो वर्गों में बांटा है। एक वर्ग सेवा करने के लिये है और दूसरा वर्ग सेवा कराने के लिये।"

उसका दूसरा कथन है, "वंश एक अड़ियल टट्टू है जो उस समय तक नहीं चलता जब तक कोई उसकी पीठ पर सवार न हो जाए।"

यह तीसरा कथन भी उसी का कहा जाता है, "कलम कमजोरों के लिये है और तलवार बलवानों के लिये है।"

अच्छा तो वह क्या कारण हैं जिनके आधार पर फ़रीद अपनी बड़ाई की शेख़ी मारता है, घमण्ड के तौर पर अपनी कुलीनता की डौंडी पीटता है और अपने अभिमान और श्रेष्ठता को प्रकट करके लोगों पर अपनी बड़ाई जताता है?

यह भी रंगे हुए सियारों के अनेक रहस्यों में से एक रहस्य है, जो हम तुम्हें बताता हूँ।

उन्नीसवीं शताब्दि के पहले तीसरे भाग में एक राजा अपने अमीर वजीरों के साथ लेबनान की घाटियों में सैर-सपाटे

के लिये आया। संयोग की बात है कि वह उस गांव के पास से गुज़रा जिसमें फ़रीद का दादा रहता था। उस समय धूप तेज़ होगई और सूरज की बारीक-बारीक किरणें ज़मीन की छाती में तीर के समान चुभने लगीं। राजा गर्मी न सह सकने के कारण घोड़े से उतर पड़ा और उसने अपने साथियों से थोड़ी देर तक बलूत के वृक्ष की छाया में दम लेने को कहा।

जब फ़रीद के दादा को यह बात मालूम हुई तो उसने अपने पड़ोसी किसानों को बुलाया और उन्हें सूचना दी कि राजा उनके गांव के पास ही ठहरा हुआ है। यह सुनकर वह सब के सब किसान अंजीरों अंगूरों की डालियाँ और दूध, शराब और मधु की सुराहियां लिये पीछे-पीछे बलूत के वृक्ष की तरफ़ राजा की सेवा में चले। फ़रीद का दादा होशियार आदमी था। वह आगे बढ़ा और राजदंड को चूमकर सब भेंट राजा को पेश की और ऊँची आवाज़ में कहा, "यह सब महाराज की कृपाओं का फल है।"

राजा ने प्रसन्नता प्रकट की और उसे सुन्दर वस्त्र प्रदान करके कहा, "तुम आज से इस गांव के सरदार हो। तुम पर हमारी कृपादृष्टि रहेगी। जाओ, हम ने तुम्हारे गांव वालों को इस वर्ष राज्यकर क्षमा कर दिया।"

राजा के चले जाने के बाद उस रात को गांव के सब आदमी फ़रीद के दादा की सेवा में हाज़िर हुए और उसे अपने दुःख-सुख का स्वामी स्वीकार कर लिया। परमात्मा उन सब लोगों पर दया करे!

× × ×

रंगे हुए सियारों के और भी बहुत से रहस्य हैं, जिनसे हम दिन रात सावधान किये जाते रहते हैं, और हम अपने देहांत से पहले तुम्हें भी उनसे सावधान करते हैं। पर इस समय आधी रात हो चुकी है और अधिक जागरण ने हमारी पलकों को थका दिया है, इसलिये हमें सोने की आज्ञा दो। वरना कहीं ऐसा न हो कि निद्रा देवी हमारी आत्मा को उस लोक में ले जाए जो इस लोक से कहीं अधिक पवित्र है।

अप्सरा

हे जादूगरनी, तू मुझे कहाँ लिए जा रही है ? कब तक मैं इस काँटेदार असमतल मार्ग पर तेरा अनुसरण करूँगा ? कब तक हमारी आत्माएं इस चट्टानी और टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर भटकेंगी।

अपनी मां का पीछा करते हुए बालक के समान, मैं तेरे पल्ले का अन्तिम सिरा पकड़े हुए अपने सब स्वप्नों को भूलकर और तेरे चकाचौंध कर देने वाले सौन्दर्य पर अपनी निगाहें जमाये हुए तेरे जादू के प्रभाव में तेरे पीछे-पीछे उन परछाइयों की तरफ़ चल रहा हूँ, जो मेरे सिर के गिर्द मण्डरा रही हैं। मैं अपने अन्तरंग की शक्ति से तेरी तरफ़ आकर्षित हो रहा हूँ, जिस के अस्तित्व से मैं इन्कार नहीं कर सकता।

एक क्षण के लिए ठहर जा और मुझे अपना मुख देख लेने दे। तू भी मेरी तरफ़ एक क्षण के लिए देख, जिससे शायद मैं तेरी विचित्र आँखों से तेरे हृदय के रहस्यों को जान सकूँ। जरा

ठहरो और विश्राम कर लो क्योंकि मैं थक गया हूँ और मेरी आत्मा इस भयानक रास्ते के भय से थर्रा रही है। अब हम उस भयानक दुराहे पर पहुँच गये हैं, जहाँ मृत्यु जीवन को गले न मिलती हो।

अप्सरा, जरा मेरी बात सुन। कल तक मैं इतना स्वतन्त्र था, जितना कि वह पक्षी जो घाटियों और जंगलों में मण्डराता है और अनन्त आकाश में उड़ता है। शाम को मैं वृक्षों की टहनियों पर आराम करता था और रंग-बिरंगे बादलों की बस्ती में इन मन्दिरों और महलों के बारे में सोचता था, जिन्हें सूर्य प्रातःकाल बनाता है और डूबते समय ढा देता है।

मैं एक विचार के समान था। मैं अकेला विश्व के पूर्व और पश्चिम शान्ति में घूमता था और जीवन के सौन्दर्य और आनन्द में मग्न रहता था। उस समय मैं अस्तित्व के महान् रहस्य के सम्बन्ध में पूछताछ करता था।

नहीं, मैं एक स्वप्न था, जो रात के पंखों पर उड़कर बन्द खिड़कियों के झरोखों से नवयुवतियों के शयनागारों में चोरी से प्रवेश करता था और उनसे खेल-कूद करके उनकी आशाओं को जगाता था। फिर मैं नवयुवकों के पास बैठता था और उनकी इच्छाओं को भड़काता था। इसके बाद मैं बड़े-बूढ़ों की कोठरियों में घुसकर उनके निर्मल संतोषपूर्ण विचारों में गहरा जाता था।

पर आज हे सुन्दरी, तूने मेरे मन को मोह लिया है और मुझे अपना कैदी बना लिया है। उस बेसुध कर देने वाले क्षण से

मैंने अपने आप को उस कैदी के समान अनुभव किया जो जजीरों में जकड़ा हुआ अज्ञात स्थान को जा रहा है। मैं तेरी मधुर मदिरा के नशे में मस्त हो गया हूँ और मेरे इरादे और संकल्प जाते रहे। अब मैं उसी हाथ को चूम रहा हूँ, जो मुझे जोर से थप्पड़ मार रहा है। क्या तुम अपनी आत्मा की आँख से मेरे हृदय को चकनाचूर होते नहीं देख सकतीं? पर जरा ठहरो और देखो! मैं अपनी खोई हुई शक्ति को फिर प्राप्त कर रहा हूँ और अपने थके हुए पाँव की भारी जंजीरों को खोल रहा हूँ। अब मैंने उस प्याले को चूर-चूर कर दिया है, जिसमें मैंने तुम्हारा स्वादिष्ट विष पिया था। अब मैं एक विचित्र देश में हूँ और हैरान हूँ। बता, अब किस रास्ते पर चलूँ?

मैंने अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है। क्या अब तू मुझे स्वेच्छा से अपना साथी बनाना स्वीकार करोगी? अब मैं इतना आजाद हो गया हूँ कि सूर्य को टिकटिकी बाँध कर देखता हूँ और स्थिर न था दृढ़ उंगलियों में दहकते हुए अंगारों को पकड़ लेता हूँ।

अब मेरी भुजाएँ फिर आजाद हो गई हैं और मैं ऊपर चढ़ने को तैयार हूँ। क्या तू उस नवयुवक के साथ चलेगी, जो अपने दिन अकेले उकाब के समान पर्वतों पर गुजारता है और रातें एक बेचैन सिंह के समान जंगल में घूमकर व्यतीत करता है?

क्या तू उस नवयुवक के प्यार से सन्तुष्ट हो जाएगी, जो प्रेम को अपना आनन्ददायक साथी तो समझता है, पर उसे अपना साथी बनाने से इन्कार कर देता है?

क्या अब तू उस हृदय को अपनाएगी, जो प्यार तो करता है पर झुकता कभी नहीं, जो जलता तो रहता है पर पिघलता कभी नहीं ? क्या तुम उस नवयुवक के साथ सुखी हो सकती हो, जो तूफान के सामने कांप तो सकता है, पर उसके सामने परास्त नहीं होता ? क्या तुम उस नवयुवक को अपना साथी बनाना स्वीकार करोगी, जो न दूसरों को अपना गुलाम बनाता है और न स्वयं गुलाम बनता है ? क्या अब तुम मुझे अपनाओगी, पर मुझ पर अधिकार न जमाओगी ?

तो लो, यह है मेरा हाथ ! अपने सुन्दर हाथ से इसे पकड़ो। यह है मेरा तन, इसे अपनी प्रेम भरी भुजाओं से आलिंगन करो। और ये मेरे होंठ हैं, इन्हें एक लम्बा और गहरा चुम्बन दो।

हम और तुम

हम दुःख की संतान हैं और तुम सुख की संतान हो। हम दुःख की संतान हैं और दुःख परमात्मा की छाया है, जो पापी हृदयों के पास अपना घर नहीं बनाता। हमारी आत्मायें उदास हैं और उदासी एक ऐसा ऊँचा पद है, जो तुच्छ आत्माओं को प्राप्त नहीं होता।

हम रोते हैं, चीखते हैं और रंज करते हैं। ओ हँसने वाले, जिस किसी ने एक बार आँसुओं से स्नान कर लिया, वह अनन्त काल के लिए पवित्र हो गया।

तुम हमें नहीं जानते पर हम तुम्हें जानते हैं। तुम जीवन-सागर की तूफ़ान पैदा करने वाली लहरों के साथ बहे चले जा रहे हो और हमें मुड़ कर भी नहीं देखते। पर हम समुद्र तट पर बैठे तुम्हें भी देख रहे हैं और तुम्हारी आवाजें भी सुन रहे हैं। तुम हमारे शोक और रोने पर इस लिए कान नहीं धरते, क्योंकि रात की फुसफुसाहट ने हमारी सुनने की शक्ति को तेज कर

दिया है। हम तुम्हें इसलिए देखते हैं कि तुम अंधेरे प्रकाश में खड़े हो, लेकिन तुम हमें नहीं देख सकते क्योंकि हम प्रकाशमान अंधेरे में खड़े हैं।

हम दुःख की संतान हैं। हम सन्देशदाता कवि और गायक हैं। हम अपने दिल के तारों से देवताओं के वस्त्र बुनते हैं और अपनी छाती के टुकड़ों से देवताओं की मुट्ठियाँ भरते हैं।

और तुम? तुम सुख की नींद और खेल-कूद की जागृति में पैदा हुए हो। तुम अपने हृदयों को अज्ञान के हाथों में सौंप देते हो, क्योंकि अज्ञान की उँगलियाँ नरम और नाजुक होती हैं। तुम अज्ञान की समीपता से खुश होते हो, क्योंकि अज्ञान का घर उस दर्पण से खाली है, जिसमें तुम अपने चेहरे का प्रतिबिम्ब देख सको।

हम आहें भरते हैं और हमारी आहों के साथ फूलों की कानाफूसियाँ, टहनियों की सरसराहटें और झरनों के मधुर राग उठते हैं। पर तुम हँसते हो और तुम्हारे अट्टहासों में खोपड़ियों के पसीने की आवाज, बेड़ियों की झंकार और नरक की चीख पुकार भरी होती है।

हम रोते हैं और हमारे आँसू जीवन पूर्ण हृदयों में इस तरह टपकते हैं, जिस तरह ओस-कण रात की पलकों से प्रभात के हृदय में गिरते हैं। पर तुम मुस्कराते हो और तुम्हारे मुस्कराते हुए होंठों से कोप और अत्याचार इस तरह बहता है, जैसे सांप का जहर डसे हुए आदमी के जख्मों से रक्त।

हम रोते हैं, क्योंकि हम विधवाओं पर होने वाले अत्याचार, उनकी पीड़ा और बेबसी, और अनाथों का दुर्भाग्य और विवशता देखते हैं। पर तुम हंसते हो, क्योंकि सोने की चमक के अतिरिक्त तुम कुछ नहीं देखते। हम इसलिए रोते हैं कि हम भिखारियों का रोना और अत्याचार, पीड़ितों की चीख-पुकार सुनते हैं। और तुम हंसते हो, क्योंकि शराब के प्यालों की खनक के अतिरिक्त तुम कुछ नहीं सुनते।

हम रोते हैं, क्योंकि हमारी आत्मा परमात्मा से अलग होकर शरीर में क़ैद हो गई है। तुम हंसते हो, क्योंकि तुम्हारे शरीर मिट्टी के साथ चिपटे रहने में सुख और सन्तोष मानते हैं।

हम दुःख की संतान हैं और तुम सुख की।

तो आओ! हम अपने ग़म के कारनामे दुनिया के सामने रखें और तुम अपने सुख के काम।

तुम ने ग़ुलामों की खोपड़ियों से बड़े-बड़े महल बनाये हैं और वे महल मिट्टी में मिले राष्ट्रों को तुम्हारे नाश और हमारी अमरता की कहानी सुना रहे हैं। लेकिन हमने अपनी स्वतन्त्र भुजाओं की शक्ति से बासीतल जैसे नामी क़िलों के टुकड़े-टुकड़े किये हैं। बासीतल वह शब्द है, जिसे राष्ट्र बार-बार दुहरा कर हमें बधाई देते हैं और तुम पर धिक्कार भेजते हैं।

तुमने कमज़ोर मनुष्यों के सिरों पर बाबल के बाग़ बनाये और दुखियों की क़ब्रों पर नैनवा के महलों की नींव रखी। देखो, बाबल और नैनवा पिटपिटा कर ऐसे हो गये हैं, जैसे सहरा की

रेत पर ऊँट के पाँव के निशान। पर हम ने संगमरमर से अशरूत[1] की मूर्ति बनाई। इस तरह संगमरमर स्थिर होते हुए भी हिलने लगा और मौन होते हुए भी बोलने लगा। हम ने सितार पर एक राग छेड़ा और आकाश में उड़ने वाले प्रेमियों की आत्माएँ इसकी तरफ़ खिंच आईं। हमने रेखाओं और रंगों की सहायता से मरियम[2] का चित्र बनाया और इस तरह रेखाओं का देवताओं की कल्पनाओं और रंग को उनकी भावनाओं का रूप दे दिया।

तुम खेल-कूद के पीछे पड़ गये, जिसके पंजों ने रोम आदि नगरों की रंगभूमियों में सैंकड़ों शहीदों को चीड़-फाड़ कर रख दिया। पर हम ने खामोशी से नाता जोड़ लिया, जिसने इंजील के भिन्न-भिन्न भागों की रचना की।

तुम अकथनीय विषय-वासनाओं की गर्दन में भुजाएं डाल कर सो गये, जिसके तेज झोंकों ने हजारों-लाखों स्त्रियों को लज्जा और दुराचार के नरक में झोंक दिया। और हमने एकान्त से आलिंगन कर लिया, जिसकी छाया में संसार की अमर कहानियाँ अस्तित्व में आईं।

तुम ने लोभ-लालच से मित्रता की, जिसकी तलवारों ने खून की हजारों नदियाँ बहा दीं। पर हम ने कल्पना का साथ किया,

---

१. अशरूत एक देवी का नाम है।

२. हजरत ईसा मसीह की माता का नाम।

जिसके हाथों ने अध्यात्मिकता को प्रकाश के ऊँचे क्षेत्र स उतारा।

× × × ×

हम दुःख की संतान हैं और तुम सुख की। हमारे दुःख और तुम्हारे सुख के बीच में एक तंग और दुष्पार घाटी है, जिस में से न तुम्हारे सुन्दर और तेज़ घोड़े गुजर सकते हैं और न तुम्हारे चाबुकों वाले सकुशल सवार उसे पार कर सकते हैं।

हम तुम्हारी घृणा को कृपा दृष्टि से देखते हैं, पर तुम हमारी बड़ाई से घृणा करते हो और ज़माना हमारी कृपा और तुम्हारी घृणा के बीच खड़ा हमें और तुम्हें आश्चर्य से देखता है।

हम मित्रों के समान तुम्हारे पास आते हैं और तुम शत्रुओं की तरह हम पर झपटते हो। हमारी मित्रता और तुम्हारी शत्रुता के बीच खून और आँसुओं से भरा हुआ एक गहरा गड्ढा है।

हम तुम्हारे लिए महल बनाते हैं और तुम हमारे लिए क़ब्रें खोदते हो। महलों के आकर्षण और क़ब्रों के अंधेरे के बीच मानवता फौलादी पाँव से चलती है।

हम तुम्हारी राहों में फूलों का फ़र्श बिछाते हैं और तुम हमारे लिए काँटों का बिछौना। गुलाब की पत्तियों और काँटों की वास्तविकता अनन्त की नींद सो रही है।

सृष्टि के आरम्भ से तुम अपनी खुरदरी कमजोरी के द्वारा हमारी नर्म और नाजुक शक्ति से लड़ने-झगड़ने को तैयार हो। यदि तुम एक क्षण के लिए भी हम पर विजय पा लेते हो, तो मारे

ख़ुशी के मेंढकों की तरह टर्राने लगते हो। पर हम तुम पर सदा के लिए विजयी हैं, फिर भी देवों की तरह मौन रहते हैं।

तुम ने ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया और चारों तरफ़ खड़े हो कर उसकी हंसी उड़ाई, उसे भला-बुरा कहा। पर जब वह घड़ी गुजर गई, तो वह सूली से उतरा और सत्य और आत्म बल के साथ क़ौमों पर विजय पाता हुआ संसार को अपनी सुन्दरता और महानता से प्रकाशित करता हुआ एक देवता की तरह चला गया।

तुम ने और क्या नहीं किया? तुम ने सुकरात को विष दिया, पाल को भूमि में आधा गाड़ कर पत्थरों से मार दिया, गैलिलियो को मौत के घाट उतारा और बहुत से दूसरे महापुरुषों को शहीद किया। ये सब के सब आज भी विजयी वीरों के समान जिन्दा हैं, अमर हैं। पर तुम मानवता की याद में उन लाशों के समान जीवन बिता रहे हो, जो भूमि पर पड़ी हों और जिन्हें विस्मृति के गर्त्त में गाड़ने के लिए दफ़न करने वाला भी न मिलता हो।

हम दुःख की संतान हैं और दुःख वह बादल है जो संसार में आध्यात्मिकता और भलाई की वर्षा करता है। तुम सुख की संतान हो। जब कभी तुम्हारे सुख ऊँचे उठते हैं तो वह धूएं के उन खम्भों की तरह उठते हैं, जिन्हें वायु जड़-बुनियाद से उखाड़ फैंकती है और जिन्हें जल-वायु आदि तत्व नष्ट कर देते हैं।

वक्तव्य

मैं वक्तव्यों और वक्तव्य देने वालों से उकता गया हूँ!

मेरी आत्मा वक्तव्यों और वक्तव्य देने वालों से थक गई है!

मेरी बुद्धि वक्तव्यों और वक्तव्य देने वालों में खो गई है!

सुबह को जब मैं जागा तो मैंने देखा कि वक्तव्य मेरे पलंग के पास समाचारपत्रों और पत्रिकाओं पर बैठा है। मुझे मक्कारी और दुष्टता की आँखों से घूर रहा है।

मैं बिस्तर से उठा और काफ़ी की एक प्याली से नींद की थकावट उतारने के लिए खिड़की के पास आ बैठा, तो मेरे साथ वक्तव्य भी उठा और चीख-पुकार मचाते हुए मेरे सामने नाचने लगा। इसके बाद जब मैंने काफ़ी की प्याली की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो उसने भी अपना हाथ बढ़ा दिया और मेरे साथ पीने लगा। फिर जब मैंने सिगरेट सुलगाई तो उसने भी सुलगाई और जब मैंने उसे पीकर फेंका तो उसने भी फेंक दी।

मैं किसी काम के लिए उठता हूँ तो वक्तव्य भी परछाईं की

तरह मेरे साथ लगा रहता है। मुझसे कानाफूसी करता है। मेरे सिर के गिर्द भिनभिनाता है और मेरे मस्तिष्क के रिक्त स्थानों में हुल्लड़ पैदा कर देता है। पर जब मैं उसे भगाना चाहता हूँ तो वह ठहाका मार कर हँसता है और फिर कानाफूसी करने, भिन-भिनाने और शोर मचाने में लग जाता है।

मैं बाजार जाता हूँ तो वक्तव्य को हर दुकान के द्वार पर खड़ा पाता हूँ और हर घर की दीवारों पर चलते-फिरते देखता हूँ। मैं उसे लोगों के चेहरों पर देखता हूँ, यद्यपि वह मौन होते हैं। मैं उसे उनकी हर चाल-ढाल में पाता हूँ, यद्यपि वे स्वयं बेख़बर होते हैं।

यदि मैं अपने किसी मित्र के पास बैठता हूँ, तो वक्तव्य हम में तीसरा होता है। और जब किसी शत्रु से दो-चार होता हूँ, तो उस वक्त वक्तव्य फूल कर फैल जाता है और टुकड़े-टुकड़े होकर बड़ी सेना का रूप धारण कर लेता है, जिसका एक सिरा पूर्व में होता है और दूसरा पश्चिम में। फिर जब मैं अपने शत्रु को छोड़ कर भागता हूँ, तो उसके वक्तव्य की प्रतिध्वनि मेरे मस्तिष्क में इस तरह बेचैनी पैदा कर देती है जैसे बिना पचा भोजन पेट में बेचैनी पैदा कर देता है।

मैं न्यायालयों, कालेजों और विद्यालयों में जाता हूँ तो वक्तव्य को उसके बाप और भाइयों के साथ देखता हूँ। वह सब के सब झूठ की चादर ओढ़े, कपट का दुपट्टा बाँधे और मक्कारी के जूते पहने होते हैं।

मैं कारखानों और दफ्तरों आदि में जाता हूँ और देखता हूँ कि वक्तव्य अपनी माँ, चाची और दादी की बगल में बैठा अपने मोटे-मोटे होंठों पर जिह्वा फेर रहा है और वह सब की सब उस पर मुस्करा रही हैं और मुझ पर हँस रही हैं।

इसके बाद भी यदि मुझ में धैर्य और दृढ़ धारणा शक्ति रह जाती है, तो मैं गिरजाघरों और तीर्थों की यात्रा के लिए जाता हूँ। वक्तव्य वहाँ भी मुझे सिंहासन पर इस शान से बैठा नज़र आता है जैसे उसके सिर पर मुकट हो और हाथों में अत्यन्त सुन्दर और अमूल्य राजदण्ड।

जब संध्या को अपने घर वापिस आता हूँ तो फिर उसी वक्तव्य को पाता हूँ, जिसे मैंने प्रातःकाल सांपों की तरह रेंगते और बिच्छुओं की तरह डंक मारते देखा था।

वक्तव्य लोक में और लोक के पीछे है, भूमि पर और भूमि के नीचे है।

वक्तव्य आकाश के हर भाग में है, समुद्र की लहरों में है, जंगलों और गुफाओं में है और पर्वतों की चोटियों पर है।

वक्तव्य हर जगह है, तो फिर शान्ति और सन्तोष चाहने वाला कहाँ जाए ?

क्या इस संसार में गूँगों का कोई वर्ग है, जिसमें मैं शामिल हो जाऊँ ?

क्या ईश्वर दया करके मुझे बहरा बना सकता है जिससे मैं अनन्त शान्ति के स्वर्ग में सफल जीवन व्यतीत करूँ ?

क्या इस लम्बी-चौड़ी भूमि पर एक कोना भी ऐसा नहीं, जो जिह्वा की बकवास से खाली हो, जहाँ वक्तव्य न बेचा जाता हो, न मोल लिया जाता हो, न दान किया जाता हो और न स्वीकार किया जाता हो ?

ईश्वर करे, मैं जानता कि दुनिया में कोई ऐसा भी व्यक्ति है जो वक्तव्य के बहाने से अपने 'अहं' को नहीं पूजता ?

ईश्वर करे मुझे मालूम होता कि इस संसार में मनुष्यों का एक ऐसा वर्ग भी है, जिसका मुँह शब्दों के डाकुओं की गुफा नहीं है।

यदि बोलने वाले केवल एक ही प्रकार के होते, तो हमारी तसल्ली हो जाती और हमें सन्तोष हो जाता पर इनके तो इतने पद हैं कि गिने नहीं जा सकते।

एक समूह तो उन "मेंढकों" का है, जो सारे दिन जोहड़ों में पड़े रहते हैं और जब संध्या होती है तो किनारे पर आकर अपना सिर पानी से निकालते हैं और रात की छाती को अपनी इस टर्र-टर्र से बोझल कर देते हैं, जिसे सुनने से कानों के पर्दे फटने लगते हैं और आत्माएं बेचैन हो जाती हैं।

और एक समूह उन 'मच्छरों' का है—और मच्छर भी वह जो कीचड़ से पैदा हुए हैं—जो तुम्हारे कानों के गिर्द भिनभिनाते हैं। उनकी शोर भरी पर तुच्छ शैतानी भिनभिनाहट वह है, जिसे दुःख देने की भावना ने पैदा किया है और गहरी घृणा ने पाला-पोसा है।

और एक विचित्र समूह उन 'पिसनहारों' का है, जिन में से प्रत्येक आदमी के अन्तःकरण में एक पत्थर होता है, जिस को उठाया जाता है तो इससे एक नारकीय गड़गड़ाहट से ज्यादा भारी आवाज़ होती है।

एक और समूह उन "बैलों" का है, जो अपना पेट भुस से भर कर गलियों और सड़कों के मोड़ पर खड़े हो जाते हैं और संसार को अपनी डकारों से भरना आरम्भ कर देते हैं। ये डकारें चाहे कितनी ही हलकी भी हों, तो भी भैंस की डकार से ज्यादा अप्रिय होती हैं।

एक समूह उन "उल्लुओं" का है जो अपना समय उजाड़ स्थानों, क़ब्रों में गुज़ारते हैं और अन्धेरे की शान्ति और निस्तब्धता को उस चीख-पुकार में बदल देते हैं, जिसका मधुर से मधुर भाग उल्लू की आवाज़ से अधिक दुखजनक होता है।

एक समूह उन "आरा चलाने वालों" का है, जिन्हें जीवन लकड़ी के उन कटे टुकड़ों की शक्ल में दिखाई देता है। वह अपनी सारी आयु इन टुकड़ों को काटने और छीलने में व्यतीत कर देते हैं। उनके इस काम से एक विचित्र सी खरखराहट पैदा होती है, जो यदि अत्यन्त मधुर भी हो तो भी आरों की खर-खराहट से अधिक बुरी होती है।

और एक समूह उन "ढोलचियों" का है, जो अपनी आत्माओं को बड़ी-बड़ी मोगरियों से पीटते हैं और उनके खाली मुँह से एक ऐसा शोर पैदा होता है, जो यदि बहुत हल्का होता है

तो भी ढोल की आवाज़ से अधिक व्याकुल करने वाला होता है।

एक समूह उन "चबाने वालों" का है, जिनके लिए कोई काम-धन्धा नहीं, सिवाय इसके कि जहाँ जगह देखें बैठ जाएं। ये लोग बात को चबाते तो बहुत हैं पर कह नहीं सकते।

एक समूह उन "मज़ाक उड़ाने वालों" का है, जो लोगों की पीठ पीछे निन्दा करते हैं, आपस में एक दूसरे की बुराई करते हैं। यह समूह अनजाने रूप से आप अपनी बुराई करता है। इसे 'परनिन्दा' कहते हैं। "मज़ाक", यद्यपि मज़ाक गम्भीरता का एक रूप है पर वे उसको नहीं जानते।

एक समूह उन "जुलाहों" का है, जो हवा को हवा से बुनते हैं पर वह नंगे ही रहते हैं।

और एक समूह उन "मैनाओं" का है, जिनके सम्बन्ध में एक कवि कहता है कि जब उड़ने वाला उड़ा, तो मैं यह समझा कि यह शिकार हो गया।

एक समूह उन "घंटों" का है, जो लोगों को तो मन्दिरों की तरफ़ बुलाते हैं, पर स्वयं उन में प्रवेश नहीं करते।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत से समूह हैं, जो अभी तक गिनती और व्याख्या की सीमा से बाहर हैं। मेरे विचार में इन अज्ञात समूहों में सबसे अधिक विचित्र समूह उन सोने वालों का है, जिन्होंने अपने खुर्राटों से लोक में हुल्लड़ मचा रखा है पर स्वयं उन से अनजान हैं।

शोक

मेरे प्यारे सगे सम्बन्धी मर गये और मैं जीवन के बन्धन में बंधा एकान्त में पड़ा उन पर शोक कर रहा हूँ।

मेरे मित्र मुझसे बिछुड़ गये और मेरा जीवन उनके बाद दुःख और शोक की मुंह बोलती कहानी बन गया।

मेरे प्यारे और मित्र मौत की नींद सो गये और मेरे देश की पहाड़ियाँ आँसुओं और खून में नहा ग। परन्तु मैं यहाँ उसी तरह जीवन व्यतीत कर रहा हूँ, जिस तरह जीवन के वैभवों और सूर्य की किरणों से प्रकाशित पहाड़ियों पर उछलने कूदने वाले प्यारों और मित्रों के साथ व्यतीत करता था।

मेरे प्यारे भूखों मर गये और जो बच गया वह तलवार के घाट उतार दिया गया। परन्तु मैं उन लोगों में चल फिर रहा हूँ, जो सुखी हैं, सफल मनोरथ हैं, अच्छे भोजन खाते हैं, बढ़िया से बढ़िया शराबें पीते हैं और अच्छे-अच्छे पलंगों पर सोते

हैं। वह जीवन से खुश होते हैं और उनसे जीवन खुश होता है।

मेरे प्यारे अत्यन्त अपमान और तिरस्कार की मौत मर गये, लेकिन मैं यहाँ सुख चैन और सुरक्षा का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ और यही वह दुखान्त नाटक है जो मेरी आत्मा के रंगमंच पर खेला जा रहा है।

यदि मैं अपने भूखे प्यारों में भूखा होता या अपनी पीड़ित जाति के साथ अत्याचार और कष्ट सहन करता तो दोनों का दबाव मेरी छाती पर इतना भारी न होता और रातें मेरी निगाह में इतनी काली न होतीं, जितनी आज हैं। जो आदमी कठिनाई और लाचारी में अपने प्यारों का साथ देता है, वह एक पवित्र संतोष अनुभव करता है, जो अपने अस्तित्व के लिए त्याग भावना का उपकार मानता है, वह तो अपने ऊपर गर्व करता है। मैं निर्दोषों के साथ निर्दोष मर रहा हूँ। पर मैं अपनी भूखी और पीड़ित जाति के साथ नहीं जबकि वह मौत के जलूस के साथ त्याग की ऊंचाइयों की तरफ जा रही है, बल्कि यहाँ सात समुद्र पार सन्तोष की छाया और सुरक्षा के पालने में जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

यहाँ मैं कष्ट और कष्ट-पीड़ितों से दूर हूँ और किसी चीज, यहाँ तक कि अपने आँसुओं पर भी गर्व नहीं कर सकता।

जो परदेशी अपने देश से कोसों दूर हो वह अपने भूखे मित्रों और सगे-सम्बन्धियों के साथ क्या कर सकता है?

काश मैं जानता कि कवि के रुदन, विलाप का लाभ क्या है !

अगर मैं अपने देश की मिट्टी में गेहूँ का पौधा होता, तो भूखा बच्चा मुझे तोड़ कर, मेरे दानों से मौत के हाथ को अपनी छाती पर से दूर हटा देता !

यदि मैं अपने देश के बागों का पका फल होता तो भूखी स्त्री मुझे खाकर अपने पेट का आग बुझा लेती !

यदि मैं अपने देश के आकाश में उड़ने वाला पक्षी ही होता तो भूखा आदमी मुझे शिकार करके मेरे मुट्ठी भर शरीर के द्वारा अपने शरीर से कब्र की छाया दूर हटा देता !

परन्तु आह ! कितनी विवशता और खेद की बात है, कि मैं न अपने देश शाम में गेहूँ का पौदा हूँ और न लेबनान की घाटियों का पका फल !

और यही वह नीरव आरम्भ है, जिसने मुझे स्वयं मेरे और रात की परछाइयों के सामने तुच्छ बना दिया है। यही वह दुख भरी कहानी है, जिसने मेरी जबान और हाथों को जकड़ कर मुझे इस हालत में खड़ा कर दिया है, न मेरे पास संकल्प और इरादा है और न कर्म।

× × × ×

लोग मुझे कहते हैं :

"तुम्हारे देश की बरबादी दुनिया की बरबादी के एक छोटे से अंश के अतिरिक्त क्या है। जो आँसू और खून तुम्हारे देश में बहा है वह आँसुओं और खून की उस नदी की कुछ बूँदों के

अतिरिक्त क्या है, जो दिन रात भूमण्डल के मैदानों और नदियों से फूटती रहती है !"

सच है ! लेकिन मेरे देश की बरबादी, एक खामोश बरबादी है। मेरे मुल्क की बरबादी वह पाप है, जिसके परिणाम में सांप और अजगर पैदा होते हैं। मेरे देश की बरबादी वह दुखान्त नाटक है जिसमें न गाने हैं और न दृश्य !

अगर मेरी जाति बेईमान और दगाबाज अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह करती और विद्रोह के अपराध में मारी जाती, तो मैं कहता कि आजादी की राह में मरना गुलामी की छाया में जीने से अच्छा है और जो आदमी हाथ में तलवार लिये मौत से गले मिलता है, वह सत्य के साथ सदा जिन्दा रहता है।

यदि मेरा देश राष्ट्रीय युद्ध में हिस्सा लेता और इसका एक एक बच्चा रणभूमि में काम आ जाता तो मैं कहता कि मेरी जाति एक तेज आँधी है, जो अपनी शक्ति से हरी और सूखी टहनियों को एक साथ तोड़ फेंकती है और मैं तूफानी टहनियों में डूबकर मर जाता, बुढ़ापे की गोद में मरने से अच्छा है।

यदि संसार में कोई बड़ा भूकम्प आता है, जिसके प्रभाव से मेरा देश बिल्कुल उलट जाता और मेरे प्यारे और परिचित मिट्टी में दबजाते, तो मैं कहता, "यह गुप्त नियम हैं, जिनको चलाने की जिम्मेदार वह शक्ति है जो आदमी की शक्ति से बड़ी और उच्च है। इसलिए यदि हम इसके रहस्य को समझने की कोशिश करें तो यह मूर्खता होगी।

लेकिन मेरे प्रिय और सम्बन्धी विद्रोह के अपराध में नहीं मरे, आजादी के मार्ग पर धर्म युद्ध करते हुए नहीं मारे गये। उनका देश भूकम्प ने नष्ट नहीं किया, वरन् वह गुलामी के अपराध में मारे गये।

मेरे रिश्तेदार सूली पर चढ़ा दिये गये।

वह मरे और इस अवस्था में मरे, कि उनके हाथ दायें बायें फैले हुए थे और आँखें आकाश के अंधेरे पर जमी हुई थीं!

वे मरे और बेजबानी तथा खामोशी की अवस्था में क्योंकि मानवता के कान उनकी,चीख पुकार की तरफ़ से बन्द थे।

वह इसलिये मरे कि वह अपने शत्रुओं से कायरों की तरह प्रेम और अपने चाहने वालों से धर्म हीनों की तरह घृणा न कर सके।

वह मरे इसलिए कि पापी न थे।

वह मरे इसलिये कि उन्होंने अत्याचारियों पर अत्याचार नहीं किया।

वह मरे इसलिए कि वह शान्तिप्रिय थे।

वह मरे और उस देश में भूखे मरे जिस में दूध और शहद की नहरें बहती हैं।

वह मरे इसलिए कि नरक के अजगर उनके खेतों के सब पशुओं और भण्डारों का अन्न हड़प गये।

वह मरे इसलिए कि साँपों, पुश्तैनी साँपों ने उस वायुमण्डल को अपनी फुंकारों से विषैला कर दिया, जो चमेली गुलाब और शाहबलूत की सुगन्धों से सुगन्धित था।

ऐ शामवासियो! तुम्हारे प्यारे और अपने आदमी मर गये। बताओ, अब हम उनके साथ क्या कर सकते हैं, जो मौत के पंजे से बच गये। हमारी आहें उनके अंतिम सांस को और हमारे आँसू उनकी तेज प्यास नहीं बुझा सकते।

तो फिर हम उन्हें भूख और प्यास से कैसे बचायें?

क्या हम शक, चिंता, असावधानी और लापरवाही की हालत में इस दुखपूर्ण दुर्घटना की तरफ़ से आँखें बंद किये या जीवन के छोटे और साधारण कामों में लगे रहें?

ऐ मेरे शामी भाई! जो भाव तुझे अपनी क़ब्र के मुंह में जाते भाई की सहायता के लिए उभरता है, एक अद्वितीय विशेषता है, जो मुझे दिन के प्रकाश और रात की खामोशी से सुख पाने का अधिकारी बनाता है।

और जो रुपया तू अच्छी तरफ़ फैले हुए खाली हाथ पर रखता है, वह एक सुनहरी घेरा है, जो तेरी मानवता को संसार की मानव धारा से मिलाता है।

आत्मबोध

बैरूत की बरसाती रात में सलीम आफंदी अपनी मेज़ के पास बैठा पुस्तकों के पन्ने उलट-पलट रहा था। मेज़ पर पुरानी पुस्तकों और काग़ज़ों का ढेर लगा था। वह कभी-कभी अपना सिर उठाकर अपने मोटे-मोटे होंठों से सिगरेट का धुआं छोड़ देता था। इस समय उसके सामने दर्शनशास्त्र एक छोटा सा ग्रंथ था, जो सुकरात ने अपने प्रिय शिष्य अफलातून के लिए 'आत्मबोध' के विषय पर लिखा था।

सलीम आफंदी उस उत्तम पुस्तक को पढ़ रहा था और प्राचीन दर्शन के उन वाक्यों याद कर रहा था, जो इस विषय से सम्बन्ध रखते थे। पूर्वी और पश्चिमी विद्वानों के सब दृष्टिकोण उसके मस्तिष्क में ताज़ा हो गये और वह आत्म ज्ञान की गहराइयों में डूब गया।

सहसा वह चौंका और अंगड़ाई लेकर ऊँची आवाज़ में कहने लगा :

"हाँ, आत्मबोध ही महान् विद्वानों के ज्ञान का स्रोत है। इस लिए मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने 'स्वयं' को पहचानूँ, इसकी सब वास्तविकताओं को जानूँ और इसके हर पहलू और हर कोने को समझूँ ! मुझे चाहिये कि आत्मा के रहस्यों के ऊपर से पर्दा उठाऊँ और अपने हृदय के भेदों के सम्बन्ध में जो शंकाएँ मुझे हैं उन्हें दूर करूँ। मेरे लिए यह भी आवश्यक है कि अपने अन्तरंग के अस्तित्व की चरम सीमा की बातें अपने बाह्य अस्तित्व को बताऊँ और अपने बाहरी अस्तित्व के भेद अपनी आत्मा पर प्रकट करूँ।"

यह बातें उसने एक विचित्र जोश के साथ कहीं। उस की आँखों में आत्मबोध के प्रेम का तेज चमक रहा था। इस के बाद वह सामने के कमरे में गया और उस दर्पण के सामने एक मूर्ति के समान निश्चल और खामोश खड़ा हो गया, जो कमरे के फर्श को छत से मिला रहा था। उसकी दृष्टि अपने प्रतिबिम्ब पर जमी हुई थी और वह अपने चेहरे को बड़े ध्यान से देख रहा था। इस प्रकार वह अपने सिर, कद और अपने समस्त शरीर को गहरी नजर से देख रहा था।

वह आध घण्टे तक इसी तरह निश्चल और स्थिर खड़ा रहा, मानो अनादि के विचार में उस पर वह बातें प्रकट कर दी हैं, जो अपनी ऊंचाई के कारण भयंकर हैं और जिनके सम्बन्ध से वह अपनी आत्मा की गुत्थियां सुलझा सकता और अपने रिक्त स्थानों को प्रकाश से भर सकता।

वह अपनी आत्मा को सम्बोधन करके धीरे-धीरे कहने लगा :

"मैं छोटे क़द का हूँ और इसी तरह नैपोलियन और विक्टर ह्यूगो भी छोटे क़द के थे।

"मेरा ललाट छोटा है और इसी तरह सुक़रात और इस्पेंजो के ललाट भी तंग थे। मेरे सिर के अगले भाग के बाल उड़े हुए हैं और यही हाल शेक्सपियर का था।

"मेरी नाक लम्बी और एक तरफ झुकी हुई है और इसी तरह वाल्टेयर और जार्ज वाशिंगटन की नाक लम्बी और एक तरफ झुकी हुई थी।

"मेरी आँख में दोष है और इसी तरह सन्त पाल और नीत्शे की आँख में भी दोष था।

"मेरे होंठ मोटे और नीचे का होंठ आगे निकला हुआ है और इसी तरह ससीरन और लूई चौदहवें के भी होंठ मोटे और नीचे का होंठ आगे निकला हुआ था।

"मेरी गर्दन मोटी है और इसी तरह हनीबाल और मार्क्स अन्तूनियो की गर्दन भी मोटी थी।

"मेरे कान लम्बे और हब्शियों की तरह झुके हैं और इसी तरह ब्रूनो और सरवानतेज के कान भी लम्बे और झुके हुए थे।

"मेरे कपोल की हड्डी उभरी हुई और कल्ले पिचके हुए हैं और यही हाल लिंकन का था।

"मेरी ठोडी धंसी हुई है और इसी तरह गोल्डस्मिथ और विलियम वाट की ठोडी भी धंसी हुई थी।

"मेरे कंधे ऊँचे-नीचे हैं और इसी तरह गेटे और साहित्यकार इसहाक के कंधे भी ऊँचे-नीचे थे।

"मेरी हथेलियाँ भद्दी और उंगलियाँ छोटी हैं और यही हालत ब्लेव और दाँते की थी।

"संक्षेप में बात यह है कि मेरा शरीर दुर्बल और दुबला-पतला है और यह उन विचारकों की विशेषता है, जिन्होंने अपनी शारीरिक शक्तियाँ बौद्धिक उद्देश्यों की प्राप्ति में लगा दी हैं।

"आश्चर्य है कि बल्ज़ाक की तरह जब तक मेरे समीप काफ़ी की केतली न हो, मैं लिख-पढ़ नहीं सकता। इसके अतिरिक्त मैक्सिम गोर्की और टालस्टाय की तरह मुझे भी पागलों और बाज़ारी लोगों से मिलने का शौक है। यही नहीं, वरन बीथोवन और वाल्टविटमैन की तरह मुझे भी हाथ मुँह धोये दो-दो दिन हो जाते हैं।

"इन सब से अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि बोकाशियो और रीबाले की तरह मुझे भी स्त्रियों की बातें मालूम करने में आनन्द आता है, विशेषकर उनकी वह बातें जो वह अपने पतियों की अनुपस्थिति में करती हैं।

"अब केवल दो प्रश्न रह जाते हैं, एक तो यह कि मैं शराब का शौकीन क्यों हूँ? और दूसरा यह कि मुझे खूब घी-तेल वाले और भिन्न-भिन्न प्रकार के खाने क्यों भाते हैं? इसका उत्तर

यही है कि मेरा पहला शौक अबुनवास, डीयूसा और मार्कों के शौक से मिलता है और दूसरा शौक नोंवें पितरस महान् और सुल्तान बशीर शहाबी के शौक से मिलता है।"

सलीम आफंदी थोड़ी देर के लिए रुक गया और फिर अपने माथे को पकड़ कर कहने लगा :

"यह हूँ मैं और यह है मेरी वास्तविकता। दूसरे शब्दों में मैं इन सब गुणों का स्वामी हूँ, जो इतिहास के आरम्भ से लेकर इस युग तक के बड़े-बड़े आदमियों की विशेपताएँ रही हैं। जिस नवयुवक में यह विशेपताएँ हों, उसके लिए यह आवश्यक है कि वह भी इस संसार में कोई बड़ा काम करे।

"तत्वज्ञान और दर्शन का उच्च ध्येय आत्मबोध ही है और मैंने आज की रात अपनी आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। इस लिए मैं आज ही की रात से वह महान् काम आरम्भ कर दूँगा, जिसकी ओर मुझे इस संसार का सत्य बुला रहा है—वह सत्य जो विभिन्न और अनन्त तत्वों की गहराइयों में छिपा है।

"मैंने नूह से लेकर सुकरात और बोकाशियो से लेकर अहमद फारिसशिदयाक तक के बड़े-बड़े आदमियों का साथ कर लिया है। मैं नहीं जानता कि वह महान् काम क्या है, जो मेरे हाथों पूरा होगा ? पर जिस पुरुष के बाह्य व्यक्तित्व और अंतरंग में यह सब गुण हों, जो मुझ में हैं, निश्चित रूप से यह संसार के चमत्कारों में होना चाहिए।

"मैंने स्वयं को पहचान लिया। हाँ, देवताओं की सौगन्ध,

मैंने अपने आप को जान लिया। इस लिए मेरी देह और उसके महत्व को उस वक्त तक बाकी रहना चाहिए, जब तक मैं अपना काम पूरा न कर लूँ।"

सलीम आफंदी कमरे में टहलने लगा। उसके घिनौने चेहरे पर प्रसन्नता के चिन्ह थे और वह एक ऐसे स्वर में, जिस का ऊँचे स्वर में वही सम्बन्ध था कि बिल्ली की म्याऊँ-म्याऊँ का हड्डियों की खरखराहट से होता है, कहने लगा कि यद्यपि मैं अन्तिम युग में पैदा हुआ हूँ, फिर भी मैं वह काम करूँगा जो मेरे से पहले होने वाले न कर सकें।

बड़ी देर के पश्चात् हमारे यहाँ सलीम आफंदी अपने अस्त-व्यस्त कपड़ों में अपनी ढीली-ढाली खटिया पर निद्रामग्न थे और इनके खुर्राटे कमरे को एक ऐसी आवाज़ से भर रहे थे, जो आदमी की आवाज़ की अपेक्षा चक्की की घरघराहट से अधिक मिलती-जुलती थी।

ललित कला

ललित कला! तू अपने प्रभाव के कारण महान्, अपने कारनामों के कारण विचित्र और अपने रूप तथा रहस्यों के कारण ऊँची है। तू आविष्कार प्रेमी कलाकारों के मस्तिष्क में अनादि अविष्कारकर्ता की प्राकृतिक पूर्णताओं की एक परछाईं है। अनन्तता और मानव हृदय के बीच मंडराती हुई तू भगवान् की ज्योति है। तू इस संसार में एक ऐसा जागृत विचार है, जो अपनी गति के कारण सुषुप्त और अपनी चाल के कारण जागृत है।

अपनी नन्हीं उंगलियों से तू तत्वों को एकत्रित करती है और उनसे ऐसे-ऐसे चित्र और मूर्ति बनाती है, ऐसी-ऐसी मूर्तियाँ और राग उत्पन्न करती है, जो काल के साथ शेष रहते हैं। जिन-का सौन्दर्य अनन्त काल तक नष्ट नहीं होता। 'अभाव' जब तेरे सामने से गुजरता है, तो 'अस्तित्व' में बदल जाता है। 'अभाव' जब तेरे पल्ले को छूता है, तो 'वस्तु' की आकृति धारण कर लेता

है और मृत्यु जब तेरे सामने खड़ी होती है, तो 'जीवन' से बदल जाती है। समस्त ध्वनियाँ, रंग और रेखाएं, समस्त तत्व, आत्माएं और छायाएं और वह प्रत्येक वस्तु जिसे प्रकृति अपनी गति और मनुष्य अपने अस्तित्व से पैदा करता है, तेरी इच्छा के आगे ढाल ताने खड़े हैं, तेरे अस्तित्व से अस्तित्व वाले होते हैं और तेरी इच्छा के अनुसार हिलते-जुलते हैं।

तू जमाने को छूती है और जमाना पत्थर का रूप धारण कर के उन मूर्तियों में बदल जाता है। तू वायु में साँस लेती है और तेरे गायक होंठों और विचारोत्पादक उंगलियों से एक अलौकिक मदिरा वायु में बिखर जाती है। तू प्रकाश के अणुओं में कम्पायमान होती है और पुस्तकों के पृष्ठों पर स्याही के साथ प्रकाश जगमगाने लगता है। तू क्षितिज की किरणों और इन्द्रधनुष के रंगों को एकत्रित करती है और उनसे अनोखे तथा अनूठे चित्र बनाती है। तू चट्टानों को अपने चरणों से नष्ट करती है और चट्टानें उन मन्दिरों, मस्जिदों तथा दुर्गों के रूप में उच्च श्रेणी वाली हो जाती हैं, जिनका शेषत्व धर्म के शेषत्व से सम्बन्धित है।

तेरी गद्दी के सामने जातियाँ जागृत तथा गाती हुई खड़ी रहती हैं। इस लिए उनमें से जो गुजर चुकी हैं, वे तेरे अस्तित्व के कारण विद्यमान हैं और जो आने वाली हैं, वे इस समय भी तेरे पल्ले के गिर्द घूम रही हैं।

जातियों की महानता उसी समय तक बाकी रहती है, जब तक तू बाकी रहे और उसी समय नष्ट हो जाती है, जब तू नष्ट हो जाए, क्योंकि राष्ट्रों के जीवन में तेरा वही स्थान है, जो

स्थान शरीर में हृदय का है। इस लिए मिस्र, और ईरान आकाश की ऊंचाइयों तक नहीं पहुँचे, जब तक तू उनके पास न आई और तिरस्कार तथा अवनति के गड्ढे में नहीं गिरे, जब तक तू उनसे दूर न हुई।

रोम और कुस्तनतनिया को तब तक प्रकाश प्राप्त नहीं हुआ, जब तक वे तेरी छाया में नहीं आये और अंधकार के आवरणों में तब तक नहीं लिपटे, जब तक तू ने उन्हें न छोड़ा।

और आज जबकि जमाने ने उन जातियों की महानता तथा बड़ाई को मिटा दिया है, यह असम्भव है कि उनके खण्डहरों से तेरे चरणचिह्नों को मिटा दे। फलतः नील नदी के किनारे पर घूमने वाला महलों तथा दुर्गों में तेरी परछाइयों को मंडराते देखता है

यदि इतिहास जमाने का दर्पण है, तो तू वह हाथ है जिसने इस दर्पण को चमकाया है। यदि विद्या वह सोपान है, जो मनुष्य को तारों से आगे वाले उर्ध्व लोक में पहुँचाता है, तो तू वह संकल्प है, जिसने इस जीने की सीढ़ियाँ बनाईं और उनकी रक्षा की। यदि धर्म जीवन की कविता है, तो तू वह छंद है जिसने इस कविता को वक्षस्थलों के लिए एक राग और हृदयों के लिए एक गीत बनाया।

कला! तू अपने रहस्यों के कारण अनोखी, अपनी गूढ़ बातों के कारण विचित्र, अपने प्रभाव के कारण शक्तिशाली और अपनी असाधारण महानता तथा बड़ाई के आधार पर मनमोहक और दृष्टिप्रिय है। हम तेरे गुण किस प्रकार वर्णन करें और किस

वस्तु से तेरी उपमा दें ? जबकि तू स्वयं गुणों का सार और उपमा का कारण है ? क्या हम तुझे भावुकता के नाम से उपमा दें, जब कि तू स्वयं भावुकता तथा अनुभूतियों का स्रोत है ? क्या हम तुझे शक्ति के नाम से पुकारें, जब कि तू स्वयं शक्तियों तथा संकल्पों का प्रकाशन है ? हम तेरे जीवन को हृदय की आँखों से देखते हैं, तेरे गीतों को अपनी अन्तरात्मा के कानों से सुनते हैं और तेरे दामन को अपनी आत्मा के कम्पायमान होंठों से चूमते हैं। किन्तु हम तेरे नाम के अक्षरों में से एक अक्षर भी नहीं लिख सकते, जब तक हमारी उँगलियाँ तेरी उँगलियों को न छूएं तेरे सौन्दर्य के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कह सकते, जब तक हमारी जिह्वाएं तेरे रूप की मदिरा में न डूब जाएँ। तू अपना प्रकाशन आप है और हम उस प्रेम की शक्ति के द्वारा जो तूने हमारे अंतरंग में पैदा की है, इस शक्ति के प्रेम से समीप होते हैं, जो परमात्मा ने तेरे अंतरंग में पैदा की है।

कला ! मुझे अपने उन सेवकों में से एक सेवक बना ले, जो जीवन पर अपना अधिकार रखते हैं। अपने उन सिपाहियों में से एक सिपाही बना ले, जो जमाने पर प्रभाव जमाए हुए हैं। मेरी स्वतन्त्रता को अपनी इच्छा की पूजा करने दे और मेरी आत्मा को अपने प्रकाश से स्पर्श करे। बहुत सम्भव है कि इस तरह वह समीप हो जाए।

प्रकृति के नियम

कितना विचित्र है जमाना और कितने अनोखे हैं हम!

जमाना बदला और अपने साथ उसने हमें भी बदल दिया। उसने हमें रास्ता दिखाया और उसके साथ-साथ हम भी हो लिये। उसने अपने चेहरे से परदा उठाया और हम सब कुछ भूलकर खुशी से फूल उठे।

कल तक हम जमाने से डरते थे और उसकी शिकायत करते थे। लेकिन आज हम उसके मित्र हैं और उससे प्रेम करते हैं। इतना ही नहीं, उसकी गति, चरमसीमा और रहस्यों को समझने लगे हैं।

कल तक हम बचते बचाते, छिपते छिपाते उन परछाइयों की तरह रेंगते थे, जो रात की भीषणताओं और दिन के भयों के बीच कांपती हैं। लेकिन आज हम उन पहाड़ी रास्तों में दनदनाते फिरते हैं जो तेज आंधियों के घात के स्थल और बिजली के निकास स्थान हैं।

कल तक हम खून से लिपटी हुई रोटी खाते और आँसू मिला पानी पीते थे, पर आज प्रातः अप्सराओं के हाथ से स्वादिष्ट भोजन खाते और बहार की सुगंधित शराब पीते हैं।

कल तक हम भाग्य के हाथ का खिलौना थे और वह शक्ति और बल के नशे में चूर हमें जिस तरह चाहता नचाता था। पर आज जब उसका नशा उतर चुका है, हम उसके साथ खेलते हैं और वह हमारे साथ खेलता है। हम उससे छेड़छाड़ करते हैं और वह हंसता है। हम इसको रास्ता बताते हैं और वह हमारे पीछे-पीछे चलता है।

कल तक हम मूर्त्तियों के सामने धूप-बत्ती जलाते थे और प्रचंड देवताओं के सामने भेंट चढ़ाते थे, लेकिन आज हम अपनी आत्मा को छोड़ किसी के सामने धूप नहीं जलाते और अपने आपे के अतिरिक्त किसी पर भेंट नहीं चढ़ाते, क्योंकि सब से महान् देवता ने हमारे हृदय को अपनी ज्योति से प्रकाशित कर दिया है।

कल तक हम बादशाहों से डरते थे और हमारी गर्दनें उनके सामने झुक जाती थीं, लेकिन आज हम सत्य को छोड़ किसी के सामने सिर नहीं झुकाते, सौन्दर्य के अतिरिक्त किसी की आज्ञा नहीं मानते और प्रेम के सिवाय किसी चीज के इच्छुक नहीं होते।

कल तक हमारी निगाहें पादरी के चेहरे पर न पड़ सकती थीं और हम ज्योतिषियों को देखते भय मानते थे, पर आज

अबकि जमाना बदल चुका है और जमाने के साथ हम भी बदल चुके हैं, हम सूर्य के अतिरिक्त किसी पर निगाहें नहीं जमाते; समुद्र की गति को छोड़ और कोई दूसरी आवाज नहीं सुनते और बगूलों के बिना किसी के साथ चलायमान नहीं होते।

कल तक हम अपनी आत्मा के महल ढाते थे, जिससे उनकी नींव पर अपने पुरखाओं की कब्रें बनाएँ, लेकिन आज हमारी आत्मा एक पवित्र वेदी है, जिसके समीप न अतीत की परछाइयाँ आ सकती हैं और न इसे मौत की गली-सड़ी उँगलियाँ छू सकती हैं।

कल तक हम विस्मृति के कोनों में छिपे हुए एक मूक विचार थे, लेकिन अब हम एक ऊँची आवाज हैं, जो लोक की गहराइयों में हलचल पैदा कर देती हैं।

पहले हम राख में दबी हुई छोटी-सी चिंगारी थे, लेकिन अब भड़कती हुई आग हैं, जिसने तलहटियों को चारों तरफ से घेर रखा है।

हमने कितनी रातें खोये हुए प्रेम और नष्ट किये हुए अन्न के लिये रोते हुए जाग कर काटी हैं। जमीन हमारा बिस्तर थी और बर्फ हमारा लिहाफ। हमने कितने दिन बैठे-बैठे भेड़ों के उस गल्ले की तरह गुजारे हैं जिसका चरवाहा लापता हो। इस हालत में हम अपनी चिंताओं को दांतों से तोड़ते और अपने विचारों को दाढ़ों से चबाते थे, लेकिन फिर भी हम भूखे के भूखे और प्यासे के प्यासे ही रहते थे। हम कितनी बार दोनों वक्त मिलते

खड़े हुए हैं और इस अवस्था में बीती हुई जवानी का शोक करते थे। हम एक अनजान चीज की इच्छा में जान देते थे और अज्ञात कारणों के आधार पर भयभीत होते थे। शून्य और अंधेरे लोक को टिकटिकी बांधकर देखते थे और मौन तथा अभाव की चीख-पुकार पर कान लगाते थे।

लेकिन वह जमाना इस तरह गुजर गया, जैसे भेड़िया क़ब्रिस्तान से गुजर जाता है। और आज जबकि वातावरण भी साफ़ है और हम भी स्वस्थ हैं, हम अपनी चमकती रात्रियाँ शानदार मसहरियों में गुजारते हैं। हम ख्याल के साथ जागते हैं, चिंता के साथ बातें करते हैं और आशाओं के गले मिलते हैं। हमारे इर्द गिर्द आग की चिनगारियाँ भड़कती हैं और हम उन्हें अपनी स्थिर उँगलियों से पकड़ लेते हैं। हर तरफ़ पागलपन की छाया प्रकट होती है और हम उनसे असंदिग्ध भाषा में बातचीत करते हैं। देवताओं के झुण्ड के झुण्ड हमारे पास से गुजरते हैं और हम इन्हें अपने दिल के शौक़ से लुभाते और अपनी आत्मा के गीतों से मतवाला बनाते हैं।

हम कल वह थे और आज यह हैं। और यही अपनी संतान के लिए देवताओं की इच्छा है। पर अब तुम्हारा क्या है? ओ शैतान की संतान! जब से तुम जमीन के सूराखों से निकले हो, क्या एक क़दम भी तुमने आगे की तरफ़ बढ़ाया है? जब से शैतानों ने तुम्हारी आंखें खोली हैं, क्या कभी ऊँचाई की तरफ़ तुमने निगाह उठाकर भी देखा है? जब से सांपों की फुंकार ने

तुम्हारे होंठ चूमे हैं, क्या सत्य के लिए तुमने एक बात भी अपनी जबान से निकाली है। जब से मौत ने तुम्हारे कानों में रुई ठोंसी है, क्या एक क्षण के लिए भी तुमने जीवन के गीत पर कान लगाए हैं?

सात हजार वर्ष पहले मैंने तुम्हें देखा तो उस पर्वत भी तुम कीड़े-मकोड़े की तरह गुफाओं के कोनों में रेंग रहे थे और अब इतने लम्बे काल के बाद सात मिनट हुए जब मैंने अपनी खिड़की के एक शीशे में से तुम पर निगाह डाली तो अब भी तुम अपवित्र गलियों में मारे-मारे फिर रहे हो। अज्ञात शैतान तुम्हारा नेतृत्व कर रहे हैं, गुलामी की बेड़ियाँ तुम्हारे पैरों में पड़ी हैं और मौत तुम्हारे सिरों पर मंडरा रही है।

तुम आज भी वही हो, जो कल थे। और कल और उसके बाद भी वैसे ही रहोगे, जैसा मैंने शुरू में तुम्हें देखा था।

लेकिन हम कल यह थे और आज भी यह हैं और यही अपनी संतान के बारे में देवताओं का क़ानून है।

मगर ओ शैतान की सन्तान! तुम्हारे बारे में शैतान का क़ानून क्या है?

रात के अंधकार में

रात के अन्धकार में हम एक दूसरे को पुकारते हैं।

रात के अन्धकार में हम चिल्लाते हैं, फरियाद करते हैं और मृत्यु की परछाईं हमारे सामने होती है। उसकी काली भुजाएँ हम पर छाई होती हैं, और उसका भयंकर हाथ हमारी आत्माओं को नरक की तरफ घसीटता है, किन्तु उसकी लाल-लाल दृष्टि दूर क्षितिज पर जमी होती है।

रात के अन्धकार में मृत्यु शीघ्रगामिनी होती है और हम भय से डरते और रोते हैं तथा उसके पीछे-पीछे चलते हैं। हम में कोई ऐसा नहीं होता, जो ठहर सके या जिसके हृदय में ठहरने की इच्छा हो।

रात के अन्धेरे में मृत्यु हमारे आगे-आगे होती है और हम उसके पीछे-पीछे। जब कभी वह पलट कर देखती है, हम में से सहस्रों सड़क के किनारे गिर पड़ते हैं। जो गिर जाता है, वह ऐसा सोता है कि फिर कभी नहीं उठता। और जो नहीं गिरता, वह अपनी इच्छा के विरुद्ध यह जान कर भी चलता रहता है,

कि वह गिरेगा और सोने वालों के साथ सोएगा। किन्तु मृत्यु ? वह दूर क्षितिज पर दृष्टि जमाए चलती रहती है।

रात के अन्धेरे में भाई अपने भाई को, बाप अपने बेटों को और मां अपने बच्चों को पुकारती है। हम सब भूखे-प्यासे और हारे-थके होते हैं, परन्तु मृत्यु न भूखी होती है न प्यासी, क्योंकि उसका भोजन हमारी आत्मा तथा शरीर और उसका पान हमारे आंसू तथा रक्त है। फिर भी उसका पेट न अच्छी तरह भरता है न प्यास बुझती है।

रात के प्रारम्भिक भाग में बच्चा मां को पुकार कर कहता है, "अम्मां, मुझे भूख लग रही है।"

और मां उत्तर देती है, "बेटा, थोड़ी देर धीरज रख।"

आधी रात को बच्चा फिर माँ को पुकार कर कहता है, "मां मैं भूखा हूँ, मुझे रोटी खिलाओ।"

और वह उत्तर में कहती है "बेटा मेरे पास रोटी नहीं है।"

रात के पिछले पहर मृत्यु माँ और उसके बच्चे के पास से गुज़रती है और अपने हाथ से उन को चपत देती है। वे सड़क के किनारे सो जाते हैं। किन्तु मृत्यु दूर क्षितिज पर दृष्टि जमाये चलती रहती है।

प्रातःकाल पुरुष अन्न की तलाश में खेत की तरफ़ जाता है, परन्तु वहाँ मिट्टी और पत्थर के सिवा कुछ नहीं पाता।

दोपहर को वह हारा थका, खाली हाथ अपने स्त्री बच्चों के पास आ जाता है। और जब शाम होती है, तो मृत्यु पुरुष,

उसकी पत्नी तथा उसके बच्चों के पास से गुजरती है, उन्हें सोता हुआ देखकर प्रसन्न होती है और दूर क्षितिज पर दृष्टि जमाए चली जाती है।

प्रातःकाल किसान अपनी झोंपड़ी से निकलता है और अपनी मां-बहनों का गहना लेकर नगर में जाता है कि उसे बेच कर अन्न खरीदे। परन्तु जब दोपहर को ऐसी दशा में जब कि इसके पास न खाने पीने की सामग्री होती न गहना वह अपने गांव लौट कर आता है, तो देखता है, कि मां बच्चे सो रहे है, परन्तु उनकी दृष्टियां एक कल्पित बिन्दु पर जमी हैं। और वे उस पक्षी के समान हैं जिसे शिकारी के तीर ने गिरा लिया हो और जो अपने पंख कभी आकाश की तरफ उठाता है कभी भूमि की तरफ गिरता है। शाम को मृत्यु किसान तथा उसकी माँ-बहनों के पास से गुजरती है, उन्हें सोता देखकर मुस्कराती है और फिर दूर क्षितिज पर दृष्टि जमाए चली जाती है।

रात के अन्धकार में—और रात के अन्धकार की कोई सीमाएँ नहीं होतीं—ऐ प्रकाश में चलने फिरने वालो! हम तुम्हें पुकारते हैं, किन्तु क्या तुम हमारी पुकार सुनते हो?

हमने अपने मुर्दों की आत्माओं को दूत बना कर तुम्हारे पास भेजा है, परन्तु जो कुछ उन्होंने कहा, क्या वह तुम्हारे मस्तिष्कों में सुरक्षित है?

हमने पूर्वी हवाओं को अपने श्वासों से भारी किया परन्तु क्या वे हवाएं तुम्हारे दूरस्थ समुद्र तटों तक पहुँचीं और उन्होंने

अपना भारी बोझ—हमारे हृदय की बात—तुम्हारे सामने रखी

क्या तुमने हमारे कष्टों का अनुमान करके हमें उससे छुटकार दिलाने का प्रयत्न किया? या स्वयं को सुख शान्ति में पाकर क दिया, "प्रकाश में रहने वाले अन्धकार में जन्म लेने वालों साथ इसके अतिरिक्त और क्या व्यवहार कर सकते हैं, वि मुरदों को बुलाएं और उनसे कहें कि इन चलते फिरते मुरदों कं दफ़न करदो ताकि परमात्मा की इच्छा पूरी हो जाए।"

परन्तु क्या तुम अपने आप को वर्तमान स्तर से ऊँचा नहं कर सकते, जिससे परमात्मा तुमको अपनी इच्छा बनाले औ तुम हमारे साथी तथा सहायक बन आओ?

रात के अंधकार में हम एक दूसरे को पुकारते हैं।

रात के अन्धकारों में भाई अपने भाई को, मां बेटे को, पति पत्नी को, और प्रेमी अपने प्रेयसी को पुकारता है और ज हमारी आवाजें आपस में घुलमिल कर आकाश की तरफ ऊँ उठती हैं, तो मृत्यु एक क्षण के लिए मजाक उड़ाती है, और फि दूर क्षितिज पर दृष्टि जमाये चली जाती है।

संहारक शक्तियाँ

स्याही से लिखने वाला हृदय के खून से लिखने वाले की बराबरी नहीं कर सकता।

और जो मौन असफलता और उदासी को प्रकट नहीं कर सकता वह उस खामोशी के समान नहीं हो सकता जो दुख और चिंता से पैदा होता है।

मैंने मौन धारण कर लिया जिससे संसार के कान दुर्बलों की ठंडी साँसों और रुदन से हटकर नरक की चीख-पुकार पर लग गये। बुद्धिमत्ता इसी में है कि जब अस्तित्व के अंतरंग में छिपी हुई वह शक्तियाँ स्वर पाएँ, जिनकी जिह्वाएँ तोपें और शब्द बम के गोले हैं, तो दुर्बल आदमी चुप हो जाएँ।

हम आजकल उस युग में हैं, जिसका छोटे से छोटा भाग अपने से आगे आने वाले युग के बड़े से बड़े भाग से बड़ा है। इसलिए जिन कामों में हमारे विचार, प्रवृत्तियाँ और भाव उलझे रहते हैं वह सब एक कोने में सिमट कर रह गये हैं। जो

कठिनाइयाँ और समस्याएँ हमारे विश्वासों और सिद्धान्तों से खेलती थीं, भूल के पर्दे में छिप गई हैं।

जो सूक्ष्म विचार और हृदयाकर्षक परछाइयाँ हमारी अनुभूतियों के रंगमंच पर नृत्य करते थे, वह कुहरे की तरह आलोक में बिखर गये हैं और उनका स्थान उन घातक शक्तियों ने ले लिया है, जो आंधियों की तरह चलती हैं, समुद्रों की तरह इठलाती हैं और ज्वालामुखी की तरह सांस लेती हैं। पर इन घातक शक्तियों का मुकाबला समाप्त हो जाने के बाद संसार किस तरफ़ जाएगा ?

क्या किसान अपने उस खेत में वापिस आकर खेती-बाड़ी करेगा जहाँ मृत्यु ने बध किये हुए आदमियों की खोपड़ियां बोई हैं ?

क्या चरवाहा अपने पशुओं के झुण्ड को उस घास के मैदान में चराएगा, जिसकी भूमि में तलवारों ने स्थान-स्थान पर दरारें कर दी हैं ? क्या वह अपने झुण्ड को उन जलस्रोतों के किनारे ले जाएगा जिनके पानी में ताजा-ताजा रक्त मिला है ?

क्या भक्त पुजारी उस मन्दिर में पूजा-प्रार्थना करेगा, जहाँ शैतान नाच रहे हों ? क्या कवि अपनी कविताएँ उन तारों के सामने पढ़ेगा जिन्हें धुएँ ने छिपा रखा हो ? क्या गवैया उस रात में अपने गीत सुनाएगा जिसका मौन भयानकता से मिला हुआ हो ? क्या मां अपने दूध पीते बच्चे के पालने के पास बैठकर उसे लोरियां देगी और आने वाले दिन के डर से न कांप उठेगी ?

क्या प्रेमी अपनी प्रिया से मिलेगा और वह दोनों एक-दूसरे को वहाँ प्यार करेंगे, जहाँ एक शत्रु अपने दूसरे शत्रु के मुकाबले पर आकर डट चुका है?

क्या वसंत संसार में फिर आएगी और उसके घायल शरीर पर अपनी हरी चादर डालेगी?

काश मुझे पता होता कि वसंत इस संसार में फिर आएगी!

मेरे और तुम्हारे देश का अंत क्या होगा? और वह कौन-सी संहारक शक्ति है जो उन पर्वतों और टीलों पर हाथ रखेगी, जिन्होंने हमें स्त्री और पुरुष बनाकर इस संसार में पैदा किया है?

क्या शाम देश इसी तरह भेड़ियों की गुफा और सूअरों का बाड़ा बना रहेगा, या हम आँधियों के साथ शेर की गुफा और उकाब के रहने के ऊँचे स्थानों की तरफ जाएँगे?

क्या लेबनान की चोटियों पर प्रभात का तारा उदय होगा?

जब कभी मुझे एकान्त प्राप्त होता है तो मैं अपने अंतरंग से यह प्रश्न करता हूँ, पर मेरा अंतरंग भाग्य की तरह देखता सब कुछ है, बोलता नहीं; चलता अवश्य है, पलटकर नहीं देखता। उसकी दृष्टि तेजपूर्ण है और कदम तीव्रगामी, पर उसकी जिह्वा जड़ है।

लोगो! तुम में कौन है जो दिन-रात अपनी अंतरात्मा से यह प्रश्न नहीं करता कि जब संहारक शक्तियाँ अपने चेहरों पर विधवाओं और अनाथों के आँसुओं की झिलमिल चादर डालेंगी,

तो उस समय संसार और संसार वालों का अंत क्या होगा ?

मैं विकास और उन्नति के सिद्धान्त को मानने वाला हूँ और मेरा दृष्टिकोण यह है कि यह सिद्धान्त बाह्य अस्तित्व के साथ-साथ वास्तविक अस्तित्व पर भी प्रभाव डालता है। इसलिए जब सृष्टि उचित से उचिततम की अवस्था में आती है, तो धर्म और शासक भी अच्छे और अधिक अच्छे हो जाते हैं और इस युक्ति से इस सिद्धान्त का लौटना भी बाहरी है और उतार भी ऊपरी।

विकास के सिद्धान्त की बहुत-सी राहें हैं जो वृक्ष की टहनियों के समान एक-दूसरी से भिन्न भले ही हों, पर वास्तव में एक ही हैं। इसका बाह्य रूप बहुत निर्दयी और अंधकारपूर्ण है, जिसे अल्पबुद्धि वाले अस्वीकार करते हैं और कमजोर हृदय वाले विद्रोह करते हैं, पर इसका आंतरिक रूप न्यायपूर्ण और प्रकाशमान है। यह उस सत्य से चिपटा हुआ है जो व्यक्ति के अधिकारों से ऊँचा है, उस ध्येय पर दृष्टि जमाये हुए है जो जाति के ध्येय से बड़ा है, उस आवाज़ पर कान लगाये हुए है, जो दुखियों की आहों और शोक में डूबे हुए आदमियों की सिसकियों को अपने भय और माधुर्य में लीन कर लेती है।

मेरे चारों ओर हर स्थान पर वह बौने हैं जो दूर से युद्ध के लिये तैयार संहारक शक्तियों की परछाइयां देखते हैं, सोते में उनके आनंदों के अट्टहासों की प्रतिध्वनियां सुनते हैं और मेंढकों की तरह टर्राते हैं।

संसार अपनी आरम्भिक प्रकृति की तरफ लौट गया, जातियों ने अपनी विद्या और कला की सहायता से जो कुछ बनाया था, उसे जंगली इन्सान के लालच और घमंड ने नष्ट कर दिया। इसलिए आज हमारा वही हाल है, जो गुफाओं में रहने वाले आदमी का था। आज यदि हमें कोई बात उनसे अधिक प्रतिष्ठावान् या बड़ा बनाती है, तो वही जिनका आविष्कार हमने संहार और तबाही के लिए किया है, या वह कूटनीति और उपाय हैं जो हम संहार के लिए काम में लाते हैं।

यह बात वह लोग कहते हैं, संसार के अन्तरंग को अपने अंतरंग की तराजू में तोलते हैं और अस्तित्व की चरम सीमा के विश्लेषण के लिए उस अल्पमति से काम लेते हैं, जिसे वह अपने व्यक्तिगत अस्तित्व की रक्षा के लिए इस्तेमाल करते हैं, मानो सूर्य केवल इसलिए है, कि इन्हें गरमी पहुँचाए और समुद्र केवल इसलिए है कि इसमें अपने पांव धोएँ।

जीवन की अंतरात्मा से, अनुभूतियों के पीछे से, और आत्मा के शासन की गहराइयों से, जहाँ अस्तित्व के रहस्य छिपे हैं, संहारक शक्तियाँ हवा की तरह उभरीं, बादलों की तरह ऊंची हुई। और पर्वतों की तरह आपस में मिल गईं। अब वह संसार की उन कठिनाइयों को हल करने के लिए आपस में लड़ने को तैयार हैं, जो जो तबाही और बरबादी के बिना कभी हल नहीं हो सकतीं।

पर आदमी उसकी विद्याएँ और कलाएँ, उसका प्रेम और

घृणा और उसका धैर्य और घबराहट तथा दर्द और बेचैनी, ये सब वे आविष्कार हैं, जिन्हें संहारक युक्तियाँ उस बड़े ध्येय को प्राप्त करने का साधन बनाती हैं, जहाँ तक पहुँचना जरूरी है।

रहा वह खून जो बह चुका है, वह नहरें बनकर फूटेगा। रहे वह आँसू जो बहाए गये हैं, वे सुगन्धित फूल बनकर खिलेंगे। रहे वह प्राण जो नष्ट किये गये हैं, वे एक स्थान पर एकत्र होकर नवप्रभात की शकल में नये क्षितिज से उदय होंगे और उस वक्त इन्सान को मालूम होगा कि इससे सत्य को बाज़ार से मोल लिया है। हाँ, वह समझेगा कि सत्य के मार्ग में खर्च करने वाला कभी घाटे में नहीं रहता।

पर बसन्त! बसन्त ज़रूर आएगी। पर जो कोई इसकी भेंट जाड़े के हाथों से लेने को तैयार न होगा, वह सदा इससे वंचित रहेगा।

मैं किस से प्रेम करता हूँ

मैं उग्रवादियों-अतिवादियों से प्रेम करता हूँ।

मैं उन लोगों से प्रेम करता हूँ, जो जिन्दगी में समुद्र की गहराइयों में उतरने और जिन्दगी की ऊँचाइयों पर चढ़ने की सामर्थ्य रखते हैं।

मैं उन लोगों से प्रेम करता हूँ जो पूरी तरह से वस्तुओं की एकता की तरफ प्रवृत्त होते हैं और दो विरोधी वस्तुओं के बीच में न कभी घबराते हैं और न चिंतित होते हैं।

मैं उन लोगों से प्रेम करता हूँ जो दृढ़ और पक्के इरादों से भरपूर हैं और उन महान् आत्माओं की इच्छा करता हूँ जो समन्वय को स्वीकार नहीं करतीं और बटवारा जिनकी आत्मा के पास तक नहीं फटक सकता।

मैं उन साहसी उग्रवादियों से प्रेम करता हूँ, जो अपने शौक और इच्छा की आग में जलते हैं, अपनी अन्तरात्मा की खोज में बेचैन हैं, जो अपने मनोभावों की आज्ञा पा लेते हैं,

जो सिद्धान्तों की रंगभूमि से हटकर सच्चे सिद्धान्त को अपना उद्देश्य बनाते हैं और जो विचारों के समन्वय से मुँह फेर कर अपनी चेष्टा उस विशुद्ध और उच्च विचार की तरफ़ करते हैं जो उन्हें बादलों से परे भी उड़ा ले जाता है और समुद्र की गहराइयों में भी उतार देता है।

मैं मध्यम-दल अर्थात् नरम दल वालों को जानता हूँ। मैंने उनके इरादों को तोला है, उनके प्रयत्नों को जाँचा है और उन्हें कायर पाया। ये लोग राजा के रूप में सत्य से और शैतान के रूप में असत्य से डरते हैं। इसलिए उन्होंने विश्वासों और नियमों के उन बीच के क्षेत्रों में आसरा ले लिया है, जो न लाभदायक हैं और न हानिकारक। वे उन सरल मार्गों पर चलने लगे हैं, जो उन्हें सुनसान, निर्जन जंगलों में ले जाते हैं—ये निर्जन जंगल निर्देश और मूल भ्रम से खाली हैं, इनमें सफलताओं और असफलताओं की भी कमी है।

जीवन ग्रीष्म ऋतु के समान है, जिसकी आकांक्षाओं और इच्छाओं के समुद्र लहरें मारते हैं। जीवन शीत काल के भी समान है, जो अपनी आँधियों की बरबादियों के कारण चमकदार है। इसलिए जो कोई आदमी अपने जीवन को गरमियों के खुमार और जाड़ों के भय से सुरक्षित रखने के लिए उसे भिन्न-भिन्न भागों में बाँटने में नरमी से काम लेता है, उसके दिन तेज और सौन्दर्य से खाली और उसकी रातें कहानियों और स्वप्नों से वंचित हो जाती हैं और वह स्वयं जीवित आदमियों

की अपेक्षा मुर्दा आदमियों के अधिक समीप हो जाता है। यही नहीं, वरन् वह उन मरणोन्मुख आदमियों में से हो जाता है, जो न तो भूमि के पेट में सोने के लिए मरते हैं और न सूरज के प्रकाश में चलने-फिरने के लिए स्वस्थ होते हैं।

जो कोई धर्म में नरमी से काम लेता है, वह दण्ड के डर और फल की इच्छा के बीच हैरानी और विकलता की अवस्था में खड़ा रहता है। इस लिए जब कभी वह धार्मिक लोगों के उत्सव के साथ चलता है तो लकड़ी के सहारे चलता है और जब कभी पूजा-प्रार्थना में सिर झुकाता है, तो उसकी चिंतायें उसके सामने खड़ी होकर उसका मजाक उड़ाती हैं।

और जो कोई दुनिया में नरमी से काम लेता है, वह सारी उम्र वहीं रहता है, जहाँ पैदा हुआ था। वह न पीछे हटता है कि लोग उसके लौटने से शिक्षा लें और न आगे क़दम बढ़ाता है कि संसार को सत्य का मार्ग दिखाये या अपने महान् कामों से उसे कुछ सिखाये। वह तो हैरान, बेजान गतिहीन खड़ा रहता है। अपनी छाया पर निगाहें जमाये, अपने हृदयों की धड़कनों पर कान लगाये और अपनी अन्तरात्मा का गला घोंटे।

और जो कोई प्रेम में नरमी से काम लेता है, वह उसके स्वच्छ प्यालों से शीतल और मधुर शराब पीता और न गरम और कड़वी शराब, बल्कि उसके होंठ उस कुनकुने पानी की बून्दों से तर रहते हैं, जिन्हें अज्ञान, कमजोरी और भय की तलैया से पीता है।

और जो कोई दुष्टता की रोकथाम और नेकी की सहायता से नरमी से काम लेता है, वह न दुष्टता को दबा सकता है और न नेकी की सहायता कर सकता है, वह केवल इसी बात पर सन्तोष करता है कि पिघले हुए भावों के इर्द-गिर्द जमे हुए भावों की दीवार खींच ले। इस लिए वह अपनी सारी उम्र इच्छाओं के किनारों पर सीप की तरह व्यतीत कर देता है। उसका वाह्य पत्थर की तरह कठोर और भीतर गंदे पानी से भरा होता है। वह नहीं जानता कि जीवन के समुद्र का चढ़ाव कब समाप्त और उतार कब शुरु होगा।

और जो कोई महानताओं को पाने की इच्छा में नरमी से काम लेता है, वह उन तक कभी नहीं पहुँच सकता। वह महानता और बड़ाई के तत्व के निखार की तरफ़ ध्यान नहीं देता, बल्कि उन के बाहर की तरफ़ सोने का चमकदार पानी चढ़ा देता है, जो कभी सूखता नहीं, यहाँ तक कि हवा का एक झोंका या प्रकाश की एक किरण उसे नष्ट कर देती है।

और जो कोई आज़ादी के पीछे दौड़ने में नरमी से काम लेता है, वह टीलों और दीवारों में उसके "चरण-चिन्हों" के अतिरिक्त और कुछ नहीं देख सकता, क्योंकि आज़ादी जीवन के समान है, जो लंगड़ों और हिम्मत हार कर बैठ जाने वालों के लिए अपनी चाल मंद नहीं करती।

और जो कोई इच्छाओं में नरमी से काम लेता है, वह ऊँचे और लम्बे जीवन के स्थान पर आँख को धोखा देने वाले और लघु जीवन का इच्छुक होता है, पर उसके इरादे के विरुद्ध उसे

लम्बा और बेरंग या छोटा और मस्तीरहित जीवन प्राप्त होता है। और यदि वह उग्रवादियों में से होता तो सफलता और समृद्धि का पल्ला उसके जीवन के हाथ में होता और वह सत्य, प्रेम और आज़ादी को प्राप्त करता।

मैंने जब शिथिल नरम दलवालों को कहते सुना "संतोष वह धन है जो कभी समाप्त नहीं होता" तो मेरी आत्मा ने एक बेचैनी-सी अनुभव की और यह कहकर उनसे परे हट गई, "बन्दर आदमी और वावन देव किस तरह बन सकते हैं जबकि वह अपने छुटपन पर संतुष्ट है।"

और जब मैंने बन्दरों और बौनों को कहते सुना, "मध्यम मार्ग बड़प्पन की महानता है" तो मेरी आत्मा घबरा गई और यह कहकर उसने अपना मुँह उनकी तरफ़ से फेर लिया। "क्या ये वस्तुओं की वास्तविकता को पा सकते हैं जबकि वह उनके बीच के निशानों पर निगाहें जमाये हुए हैं? क्या पशुओं की तरह चीज़ों के भी सिर और पूँछ नहीं होती?"

जब मैंने उल्टी बुद्धि वालों को कहते सुना "नक़द के नौ, उधार के तेरह से अच्छे हैं" तो मेरी आत्मा काँप उठी और क्रोध से कहने लगी, "यह आलसी आदमी नौ तो क्या एक भी पाने के योग्य नहीं। जब तक तेरह पाने के लिये दौड़-धूप करके अपनी टांगों को कष्ट न दें। क्या उड़ते हुए पक्षियों के झुण्ड के पीछे दौड़ना जीवन के मार्ग में प्रयत्न और दौड़-धूप नहीं है? क्या यह जीवन का ध्येय बल्कि स्वयं जीवन ही नहीं है?"

मैं अतिवादियों से प्रेम करता हूँ।

मैं उससे प्रेम करता हूँ जिसे नरमदल वालों ने सूली पर चढ़ाया और जब इसका मनका ढल गया और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, तो एक दूसरे से कहने लगे, "आज हमने एक कष्टदायक अतिवादी से छुटकारा पा लिया।" पर वे नहीं जानते थे कि उसकी आत्मा उसी क्षण पीढ़ियों और कौमों को जीतती हुई चली गई।

मैं उससे प्रेम करता हूँ, जिसने अपने बाप की शान-शौकत और वैभव पर लात मार दी और रेशमी कपड़ों के बदले गुदड़ी, और पद की महानता के स्थान पर तिरस्कार स्वीकार करके उस ध्येय की तरफ़ अकेले चल पड़ा जो देववाणी और ईश्वराज्ञा का स्रोत है। मध्यम-मार्गगामी उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं और उसके कामों पर आश्चर्य प्रकट करते हैं, पर इसकी कोमल और बारीक उंगलियां अस्तित्व के प्रकट और गुप्त पहलुओं को इकट्ठा करती हैं।

मैं उन शहीदों से प्रेम करता हूँ जो मौत की इच्छा में मरते हैं, जो अंतिम ध्येय के सिवा हर चीज़ को सस्ता समझते हैं और महत्वाकांक्षा के सिवा प्रत्येक वस्तु को तुच्छ समझते हैं।

मैं उन लोगों से प्रेम करता हूँ जो आग में जलाये गये, पत्थरों से मारे गये, फांसी पर लटकाये गये, तलवार के घाट उतारे गये, क्योंकि वह उस आदर्श पर विश्वास करते थे जिसको उनकी बुद्धि ने अपना लिया था अथवा वह उस विचार को मानते थे जिससे उनके दिलों को भड़का दिया था।